फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 48 प्रभात जयपुर, गुरुवार 18 सितम्बर, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBIT

Rajputs Did Not Take To The Gun Easily — Fifty years after Mughal guns defeated the Rajputs, the Rana of Udaipur appears not to have brought firearms to the battle of Haldighati in 1576

USE OF CARBON DIOXIDE

'Gaslight' — True to this meaning, the play is both an intimate domestic drama and a potent social critique

ब्रिटेन के केवल 16 प्रतिशत लोग ट्रंप की राजनीति से सहमत हैं

बाकी जनता ट्रंप के तौर-तरीके व सोच से असहमत और सख्त खिलाफ है

- इस जनभावना से इंगलैण्ड की सरकार अनभिज्ञ नहीं है, इसीलिए ट्रंप की ब्रिटेन की यात्रा को जनता से दूर विंडसर पैलेस में रखा गया है। पूरे शान-शौकत व आनंदमयी वातावरण में तथा ट्रंप से राजनीतिक काम की बातचीत भी अगले दिन, ब्रिटेन के प्र.मंत्री के फार्म हाउस पर आयोजित की गई है।
- दूसरी ओर, लंदन में जनता गंदे व भद्दे नारे लगा रही है और प्रदर्शन कर रही है, ब्रिटेन की सरकार व ट्रंप के खिलाफ। नारों का सार है कि इंगलैण्ड की सरकार कुछ तो रीढ़ की हड्डी में दम दिखाये व साष्टांग न हो, ट्रंप के सामने, ट्रंप को अच्छे मूड में रखने के लिए, ट्रंप को लुभाने के लिए।
- मोदी के जन्म दिन पर, पुतिन ने भरपूर बधाई दी तथा यह जताने का प्रयास किया कि अमेरिका का रूस को अलग-थलग करने का प्रयास सफल नहीं हो रहा, बल्कि सभी जगह, चीन में भी एस.सी.ओ. सम्मेलन में वो सादर आमंत्रित हैं।
- भारत को भी सभी तरफ से यूरोप से भी पूर्ण मित्रता व समर्थन मिल रहा है, ट्रंप द्वारा भारत के मामले में अनुचित टैरिफ लगाने के कारण।
- ट्रंप इंगलैण्ड की सरकार के भव्य आतिथ्य की खुमारी लगभग सुखद निद्रा में हैं, तथा उनकी ''चतुर राजनीति'' का खामियाजा यूक्रेन उठा रहा है, क्योंकि रूस की लगातार बढ़ती व प्रखर होती बमबारी से सैंकड़ों यूक्रेनवासी प्रतिदिन मारे जा रहे हैं।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17, सितंबर। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप मंगलवार को ब्रिटेन की राजकीय यात्रा के दौरान भले ही शान-ओ-शौकत का आनंद ले रहे हों, लेकिन असल में वे एक तरह के बुलबुले में हैं, ब्रिटिश जनता से काफी दूर, जो राजधानी लंदन और देश के अन्य हिस्सों में बड़ी संख्या में इकट्ठी हुई है, इस सजे संवरे और बड़ी सावधानी पूर्वक आयोजित कार्यक्रम के प्रति अपनी नाराज़गी और निंदा जाहिर करने के लिए।

ब्रिटिश लोग छोटी, आकर्षक, तीखी और संक्षिप्त टिप्पपणियों के लिए मशहूर हैं। लंदन में एक में एक हाईप्रोफाइल विरोध मार्च के पोस्टरों पर लिखा नारा, ''डंप ट्रंप'' (ट्रंप को हटाओ) नारा जनता की भवना और अमेरिकी राष्ट्रपति की राजनीति के प्रति उसके गुस्से को दिखाने के लिए काफी था।

यात्रा से कुछ समय पहले हुए एक जनमत सर्वेक्षण में पता चला कि केवल 16 प्रतिशत ब्रिटिश जनता ट्रंप से सहमत है। बाकी लोग हल्की नापसंदगी से लेकर बेहद कड़ी नफ़रत तक, अलग-अलग तरीकों से उनकी राजनीति को ठुकरा रहे हैं। इन भावनाओं का इज़हार जगह-जगह हो रही सभाओं और प्रदर्शनों में हो रहा है।

एक प्रमुख ब्रिटिश राजनेता ने तो ट्रंप के सम्मान में विंडसर पैलेस में होने वाले भोज का निमंत्रण ही ठुकरा दिया। दूसरी तरफ, कुछ प्रदर्शनकारियों ने विंडसर पैलेस की दीवारों पर ट्रंप की तस्वीर को कुख्यात जेफ्री एप्सटीन के साथ प्रदर्शित किया।

लंदन की सड़कों पर भारी भीड़ विरोध मार्च कर रही थी। कुछ प्रदर्शनकारी ब्रिटिश सरकार से अपील कर रहे थे कि वह साहस दिखाए और ट्रंप की खुशामद करने के लिए इतना नीचे न गिरे।

निश्चित ही, ब्रिटिश सरकार और सुरक्षा तंत्र जनता की भावनाओं से पूरी तरह वाकिफ़ थे, इसलिए पूरी यात्रा को जनता से दूर रखने और महल की कड़ी सुरक्षा वाली दीवारों के अंदर रखने के लिए हर संभव सावधानी बरती गई। यहां तक कि राजनीतिक बैठक भी लंदन तथा अन्य लोकप्रिय स्थानों से दूर, प्रधानमंत्री के कंट्री होम में आयोजित की गई।

जब ब्रिटिश सरकार ट्रंप को राजसी ठाठ-बाट और परंपरागत स्वागत से ''सम्मोहित'' करने का नाटक कर रही थी, उसी दौरान असली राजनीति दुनिया के अन्य हिस्सों में चल रही थी।

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन की उस मुख्य रेलवे लाइन पर भयंकर हमला करने का आदेश दिया, जो देश को पश्चिमी यूरोप से जोड़ती है। अमेरिकी राष्ट्रपति की बार-बार की अपीलों को अनदेखा करते हुए, रूस, यूक्रेन पर बेरहमी हमले कर रहा है।

कठोर कूटनीति के खिलाड़ी राष्ट्रपति पुतिन ने अपने ''मित्र'' प्रधानमंत्री मोदी को उनके 75वें

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

इटली की प्र.मंत्री का मोदी को बधाई संदेश

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 सितम्बर। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को उनके जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने उनके नेतृत्व और नजरिए की प्रशंसा करते हुए कहा कि ''उनकी शक्ति, संकल्प और करोडों लोगों का मार्गदर्शन करने की क्षमता'' प्रेरणा का स्रोत है।

- इटली की प्रधानमंत्री मैलोनी ने प्रधानमंत्री मोदी को 75वें जन्म दिवस पर सोशल मीडिया पर बधाई दी और उन्हें प्रेरणा स्रोत बताया।

अपने संदेश के साथ उन्होंने एक तस्वीर भी साझा की, जिसमें दोनों नेता साथ नजर आ रहे हैं। इस फोटो में सैल्फी के लिये कैमरा थामे मुस्कराते हुये थोड़ा सा आगे खड़ी हैं, जबकि उनके बाईं ओर प्रधानमंत्री मोदी भी मुस्कुरा रहे हैं। यह तस्वीर दोनों नेताओं के बीच के मित्रतापूर्ण तालमेल को दर्शाती है।

कैप्शन में मेलोनी ने लिखाः ''भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 75वें जन्मदिन की शुभकामनाएं। उनकी शक्ति, उनका संकल्प, और करोड़ों लोगों का नेतृत्व करने की उनकी क्षमता प्रेरणा का स्रोत है। मित्रता और सम्मान के साथ, मैं उनके अच्छे स्वास्थ्य और ऊर्जा की कामना करती हूँ, ताकि वे भारत को एक उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाते रहें और हमारे देशों के बीच संबंधों को और मज़बूत करें।''

सहयोगी दलों की बढ़ती मांगों से एडजस्ट नहीं कर पा रही है भाजपा बिहार में

भाजपा के रणनीतिकारों ने निजी तौर पर माना कि सहयोगियों की मांग मानी तो पार्टी कमज़ोर हो जाएगी

- जद (यू) और भाजपा के बीच भी सीटों के मुद्दे पर तनाव है। इसका संकेत तब मिला जब सीटों पर चर्चा के लिए नड्डा पटना आए, पर उन्हें नीतीश से बिना मिले लौटना पड़ा।
- छोटे दलों की भी मांगें बड़ी-बड़ी हैं। चिराग पासवान 40 सीटें मांग रहे हैं। जीतनराम मांझी 20 सीटें, तो उपेन्द्र कुशवाहा की मांग भी 15 सीटों की है। पर, भाजपा इन दलों को इनकी मांग से आधी सीटें ही देना चाहती है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 सितम्बर। बिहार में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस - एनडीए) सीट बंटवारे को लेकर गहरे गतिरोध में फंसा हुआ है। नवंबर की शुरुआत में होने वाले विधानसभा चुनाव से कुछ ही सप्ताह पहले प्रमुख सहयोगियों के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है। कई दौर की अनौपचारिक बातचीत के बावजूद, कोई आम सहमति नहीं बन सकी है, और यह देरी गठबंधन के भीतर अनिश्चितता को और भी बढ़ा रही है।

अन्दरुनी सूत्रों के मुताबिक, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अपने सहयोगियों-मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अगुवाई वाले जनता दल (यूनाइटेड), चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास), जीतन राम मांझी की हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा (एचएएम), और उपेन्द्र कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक समता पार्टी-की बढ़ती मांगों को संतुलित रखने के लिये संघर्ष कर रही है। सभी दल अपने-अपने क्षेत्रीय प्रभाव का हवाला देते हुए ज्यादा सीटों की मांग कर रहे हैं, जबकि भाजपा राज्य में अपना दबदबा बनाए रखना चाहती है।

यह संकट तब और उभरकर सामने आया, जब पिछले हफ्ते भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा पटना दौरे पर गए, लेकिन नीतीश कुमार से रुबरु बैठक किए बिना लौट आए। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, यह संवादहीनता एनडीए के दो मुख्य स्तंभों के बीच भरोसे की कमी का स्पष्ट संकेत है। खास बात यह है कि दोनों दलों के सूत्रों ने पुष्टि की है कि अब तक सीट बंटवारे को लेकर कोई औपचारिक बैठक नहीं हुई है।

तनाव को और बढ़ाते हुए, चिराग पासवान ने सार्वजनिक रूप से अपनी पार्टी के लिए 40 सीटों की मांग की है, जबकि जीतन राम मांझी 20 सीटों से कम पर राजी नहीं हैं। दोनों नेताओं ने यह संकेत दिया है कि अगर उनकी मांगें समय पर पूरी नहीं हुईं, तो वे गठबंधन में अपनी भूमिका पर पुनर्विचार कर सकते हैं। तीसरे छोटे सहयोगी, उपेन्द्र कुशवाहा को अनौपचारिक रूप से 10 सीटों की पेशकश की जा रही है, लेकिन उनकी पार्टी ने इस पर अभी तक कोई सहमति नहीं दी है।

भाजपा के रणनीतिकार निजी तौर पर स्वीकार करते हैं कि सहयोगियों को इतनी अधिक सीटें देना राज्य में पार्टी की अपनी स्थिति को कमजोर कर सकता है। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि एक संभावित समझौता फार्मूला पर विचार किया जा रहा है, जिसमें एलजेपी को 20, एचएएम को 10, और कुशवाहा की पार्टी को 10 सीटें दी जा सकती हैं, हालांकि यह प्रस्ताव सहयोगियों की मांगों से काफी कम है।

सीट बंटवारे में देरी एक रणनीतिक कदम भी मानी जा रही है। एनडीए के नेता इंडिया गठबंधन पर नजर रखे हुए हैं, जो जल्द ही अपने उम्मीदवारों की सूची जारी करने वाला है। एनडीए इस इंतज़ार में है कि वह अपनी सीटें विपक्षी रणनीति के हिसाब से समायोजित कर सके।

लेकिन, सहयोगी खुलेआम धमकी दे रहे हैं और भाजपा ने अभी तक नीतीश कुमार से सीधी बातचीत नहीं की है, यह गतिरोध एनडीए की कमजोर एकता को उजागर करता है। अगर जल्द

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'पराली जलाने पर कुछ किसानों को जेल भेजना, दूसरों के लिए कठोर संदेश हो सकता है'

सुप्रीम कोर्ट ने कहा, इससे किसानों को पराली जलाने से रोका जा सकता है

- सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली एनसीआर में हर साल अक्टूबर में गंभीर वायु प्रदूषण होने के संबंध में दायर याचिका पर सुनवाई के दौरान कहा कि किसानों की गिरफ्तारी रुटीन में नहीं होनी चाहिए। सिर्फ संदेश देने के लिए ही ऐसा किया जाना चाहिए।
- चीफ जस्टिस बी.आर. गवई ने कहा, किसान हमारे लिए खास हैं, उनकी वजह से हमें भोजन मिलता है। पर, इसका मतलब यह नहीं है कि वे इसका अनुचित लाभ उठाएं।
- ज्ञातव्य है कि अक्टूबर महीने में हरियाणा और पंजाब के किसान खेतों में पराली जलाते हैं, जिससे दिल्ली एनसीआर में हवा बहुत ज्यादा प्रदूषित हो जाती है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 सितम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने आज कहा कि पराली जलाने के लिए कुछ किसानों को जेल भेजने से दूसरों को एक सख्त संदेश जा सकता है और यह दूसरों के लिए एक निवारक (डिटरैंट) की तरह काम कर सकता है। कोर्ट ने यह टिप्पणी, हर अक्टूबर में दिल्ली-एनसीआर की दमघोंटू वायु प्रदूषण से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए की।

इससे पहले, ''एमिकस क्यूरी (न्याय मित्र) अपराजिता सिंह ने भारत के मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई और न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन की पीठ को बताया कि पराली जलाने की समस्या से निपटने के लिए किसानों को सब्सिडी और उपकरण मुहैया कराए गए हैं।

उन्होंने कहा, ''लेकिन किसानों की वही कहानी रहती है। पिछली बार किसानों ने कहा था कि उन्हें उस समय पराली जलाने को कहा गया था, जब उपग्रह उस क्षेत्र से नहीं गुज़र रहा था। मुझे यह कहते हुए दुःख हो रहा है कि 2018 से सुप्रीम कोर्ट ने इस पर कई विस्तृत आदेश पारित किए हैं, और फिर भी हर बार किसान केवल लाचारी ही जताते हैं।''

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बीकानेर में पूर्व पार्षद तथा व्यापारी के 6 ठिकानों पर ईडी की रेड

बीकानेर, 17 सितम्बर (निसं)। यहां फिलिस्तीन का समर्थन करने और विदेशी फंडिंग को लेकर प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई जारी है। जयपुर से आई ईडी की टीम ने छह ठिकानों पर छापा मारा है। इसमें पूर्व पार्षद और एक व्यापारी भी शामिल हैं। बताया जा रहा है कि ईडी को बीकानेर से फिलिस्तीन के समर्थन और विदेशी फंडिंग का इनपुट मिला था। कार्रवाई के लिए ईडी की टीम जयपुर से यहां मंगलवार को ही पहुंच गई थी। इसके बाद बुधवार सुबह आठ बजे टीम ने कार्रवाई शुरू कर दी। मौके पर आरपीएफ के जवान भी तैनात

- पूर्व पार्षद जावेद खान के सुभाषपुरा स्थित मकान तथा व्यापारी मोहम्मद सादिक के फड़ बाजार स्थित घर पर ईडी की टीम ने पूछताछ की।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मोदी ने ट्रंप को 37 मिनट से हराया फोन काल की प्रतिस्पर्धा में

''शो मैन'' ट्रंप पूर्णतया वाकिफ हैं, ''पहले मारे वो मीर'' के सिद्धांत से

- भारत-पाक युद्ध में, उदाहरण के लिए, ट्रंप ने ''सीज़फायर'' करवाने का श्रेय लेने के लिए, सबसे पहले सोशल मीडिया पर खबर चलवा दी। और इसका फायदा वे अंत तक लेते रहे, चाहे भारत ने उच्चतम स्तर पर इस खबर का कई बार खंडन किया।
- ऐसा ही, तेहरान व तेल अवीव के युद्ध के दौरान भी ट्रंप ने करवाया।
- पर, इस बार ट्रंप नहीं कर पाये, मोदी की जन्म दिन की बधाई के ''फोन कॉल'' के बारे में।
- मोदी ने बधाई के फोन की खबर 10:53 पर, सोशल मीडिया पर डाली। पर, ट्रंप ऐसा 11:30 बजे ही कर पाये।
- इस ''हार'' से ट्रंप काफी असहज हो गए, क्योंकि वे सदा घटनाक्रम पर अपना कंट्रोल चाहते हैं, जो पहले खबर देने से स्थापित होता है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 सितम्बर। आम राय यह है कि डॉनल्ड ट्रंप का फोन कॉल उस रिश्ते को फिर से पटरी पर लाने की पेशकश थी, जो बीते कुछ महीनों से इसलिये खराब था, क्योंकि अमेरिका के राष्ट्रपति भारत द्वारा कई मुद्दों पर 'सहयोग न करने' से नाराज़ थे।

ऐसा लगता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को रात देर से किया गये फोन कॉल, जो कि जाहिर तौर पर उनके 75वें जन्मदिन की बधाई देने के लिए था, से उस द्विपक्षीय संबंध में नई ऊर्जा आ गई है, जो भारतीय निर्यातों पर 50 प्रतिशत टैरिफ, व्यापार समझौते की असफलता और, प्रतिबंधों के बावजूद, रुस से तेल खरीदने को लेकर वाइट हाउस की नाराज़गी जैसे मुद्दों से प्रभावित हो गया था। ज्ञातव्य है कि ट्रम्प भारत द्वारा रुस से तेल की खरीद को यूक्रेन युद्ध का पोषक मान रहे हैं।

यह कॉल इसलिए भी अहम है, क्योंकि भारत ने कई मुद्दों पर अमेरिका का साथ देने से इनकार किया - जैसे कि ''ऑपरेशन सिंदूर सीज़फायर'' के लिए ट्रंप को ज़िम्मेदार मानना (जबकि वे नहीं थे), उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार के लिए समर्थन देना, और टैरिफ विवाद आदि।

इन सब बातों ने उस रिश्ते पर गहरा असर डाला, जिसे ज़्यादातर विश्लेषक ''दुनिया की नहीं तो, हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण साझेदारियों में से एक'' मानते हैं। इसका अंत तब दिखा, जब डॉनल्ड ट्रंप ने भारतीय अर्थव्यवस्था - जो कि जीडीपी के हिसाब से दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है - को ''मरी हुई'' बता दिया था।

इसलिए ट्रंप का यह फोन कॉल बेहद अहम था, लेकिन इस कहानी में और भी कुछ है।

शायद सबसे महत्वपूर्ण बात बातचीत में नहीं, बल्कि उसके बाद सोशल मीडिया पोस्ट के समय में थी, एक तरह की 'दौड़,' जिसमें प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति ट्रंप को 37 मिनट से हरा दिया।

प्रधानमंत्री मोदी की एक्स पर पोस्ट रात 10:53 बजे आई। ट्रंप की पोस्ट ट्रुथ सोशल पर रात 11:30 बजे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'प्र.मंत्री की मां का एआई वीडियो हटाए कांग्रेस'

पटना, 17 सितंबर। बिहार चुनाव से पहले पटना हाई कोर्ट से कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। हाई कोर्ट ने कांग्रेस के उस एआई वीडियो, जिसमें पीएम मोदी और उनकी माँ को दिखाया गया था, को हटाने का निर्देश दिया है। हाई

- पटना हाईकोर्ट ने कांग्रेस को निर्देश दिया कि यह वीडियो सोशल मीडिया के सभी प्लेटफॉर्म से हटाया जाए।

कोर्ट ने अब इस वीडियो को सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से हटाने के लिए कहा है। ज्ञातव्य है कि कांग्रेस ने बीते दिनों पीएम मोदी और उनकी मां

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या अमेरिका, भारत से संबंधों को ''सामान्य'' करने के बारे में वास्तव में गंभीर है?

मोदी को जन्म दिन पर, ट्रंप द्वारा बधाई का फोन करना, क्या ठोस प्रगति है?

- शायद इस बार ठोस प्रगति के संकेत से तो लगते हैं, क्योंकि दोनों ने लम्बे समय से लटकते हुए व्यापारिक समझौते की वार्ता के कई दौर के बाद यह तो महसूस कर लिया है कि लम्बा लटकाने से किसी को फायदा नहीं। इससे केवल माहौल विषाक्त ही होता है।
- अतः, नये टैरिफ के बाद, दोनों के रिश्ते इतने खराब हो गये थे कि अब तो बातचीत की खबरें आना ही बंद सा हो गया था।
- पर, अब अमेरिका के प्रतिनिधिमंडल का ट्रंप के फोन के बाद, बातचीत के लिए वापस भारत आना, यह संकेत तो है ही कि दोनों देशों के समझौते के बारे में इतने गंभीर प्रयास पहले नहीं हुए थे।

-सुकुमार शाह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17, सितंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75वें जन्मदिन पर अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा भेजी गई शुभकामनाएं केवल औपचारिकता नहीं थीं, बल्कि उन अवरुद्ध व्यापार वार्ताओं में नए उत्साह का संकेत थीं, जो कठोर अमेरिकी टैरिफ के कारण रुक गई थीं। दोनों नेताओं के बीच यह गर्मजोशी ऐसे समय में आई है जब महीनों बाद पहली बार दोनों देशों के बीच व्यापार संबंधों को स्थिर मार्ग पर लाने का गंभीर प्रयास शुरू हुआ है।

मोदी ने ट्रंप की शुभकामनाओं का धन्यवाद करते हुए वॉशिंगटन के साथ ''व्यापक और वैश्विक साझेदारी'' को मजबूत करने के अपने संकल्प को दोहराया और यूक्रेन संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में अमेरिकी प्रयासों का समर्थन किया। वहीं, ट्रंप ने मोदी की सराहना करते हुए कहा कि वे ''बेहतरीन कार्य'' कर रहे हैं और उन्होंने भारत की रचनात्मक भूमिका को रेखांकित किया, जो कूटनीतिक पहलों को समर्थन देती रही है।

इस सार्वजनिक सद्भावना के साथ एक ठोस प्रगति भी हुई। पहली बार, कठोर टैरिफ उपायों, जैसे भारतीय आयात पर 50 प्रतिशत शुल्क और रूस से तेल खरीद पर 25 प्रतिशत लेवी के बाद, दोनों देशों के व्यापार वार्ताकार मंगलवार को आमने-सामने बैठे। अमेरिकी अधिकारियों ने इन चर्चाओं को ''सकारात्मक'' बताया, जबकि नई दिल्ली में इसे एक अहम शुरुआत माना गया, जो यह संकेत देता है कि दोनों पक्ष अब गिरते संबंधों को संभालने और साझा समाधान तलाशने के लिए इच्छुक हैं।

यह प्रगति ऐसे समय में आई है जब वॉशिंगटन से सख्त बयानबाज़ी सामने आ रही थी। कुछ दिन पहले ही अमेरिकी वाणिज्य सचिव हॉवर्ड लुटनिक ने चेतावनी दी थी कि अगर भारत अमेरिकी कॉर्न की खरीद नहीं बढ़ाता, तो उसे अमेरिकी बाजारों तक पहुंच खोने का खतरा हो सकता है। ऐसे में अचानक रुख का नरम होना यह दर्शाता है कि भले ही दोनों देशों की स्थिति मजबूत हो, फिर भी यह मान्यता बन रही है कि लंबे समय तक टकराव दोनों की अर्थव्यवस्थाओं के हित में नहीं है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ईवीएम पर उम्मीदवारों के रंगीन फोटो दिखेंगे

नयी दिल्ली, 17 सितंबर। भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने इसी साल कराये जाने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मीशनी (ईवीएम) पर लगाये जाने वाले मतपत्रों पर उम्मीदवारों के नाम के साथ उनकी रंगीन तस्वीरें भी रखेगा।

- चुनाव आयोग बिहार विधानसभा चुनाव से इसकी शरुआत कर रहा है उसके बाद पूरे भारत में ऐसा ही होगा।

भविष्य में अन्य विधानसभा चुनावों और आम चुनाव में भी ईवीएम मतपत्रों में ये संशोधन दिखेंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

संसार के विरुद्ध खड़े रहने के लिए शक्ति प्राप्त करने की जरूरत नहीं है। ईसा दुनिया के खिलाफ खड़े रहे, बुद्ध भी अपने जमाने के खिलाफ गए, प्रहलाद ने भी वैसा ही किया। ये सब नम्रता के धनि थे। अकेले खड़े रहने की शक्ति नम्रता के बिना असंभव है। –महात्मा गाँधी

मानसूनी बारिश ने बिगाड़ी सड़कों की सूरत : दीपावली से पूर्व मरम्मत के निर्देश

राजस्थान में इस वर्ष मानसून में हुई भारी वर्षा ने राज्य के सम्पूर्ण सड़क नेटवर्क को बुरी तरह क्षत–विक्षत करके रख दिया। बारिश का दौर थमने के बाद अब सडकों के गड्ढे जानलेवा साबित हो रहे है। सड़कों का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। सड़कों का आधारभूत ढांचा हमारी अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ आधार है। प्रदेश भर से मिली जानकारी के अनुसार मानसूनी बारिश ने नगरीय और ठाामीण सड़कों को जगह जगह से तोड़ कर रख दिया। वाहनों के साथ पैदल चलने वालों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि राज्य सरकार ने इन टूटी–फूटी सड़कों की दीपावली से पूर्व मरम्मत के निर्देश जारी किये है। मंत्रियों और अफसरों ने मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप सड़कों को ठीक करने के लिए अपने प्रयास तेज कर दिए है। प्रदेशभर में करीब 35 हज़ार किलोमीटर सड़कें क्षितठास्त होने की जानकारी मिली है। इनमें करीब पांच हजार किलोमीटर स्टेट हाईवे को क्षति पहुंची है। प्रदेश में करीब 17 हजार किलोमीटर स्टेट हाईवे हैं। इसी तरह करीब सात हजार किलोमीटर मुख्य जिला सड़कों और करीब 23 हजार किमी अन्य सड़कों को भी भारी नुकसान हुआ है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक राज्य सरकार ने आंकड़े जुटाकर करीब 1500 करोड़ रुपए खर्च कर सड़कों को दिवाली से पहले ठीक करवाने की कोशिश रहेगी। कई जिलों में पांच साल की गारंटी वाली सड़के, दो साल में ही टूट गई। ग्रामीणों के अनुसार बारिश ने घटिया सड़कों के निर्माण और कमीशन बाजी की पोल खोलकर रख दी है। हालांकि भजन लाल सरकार ने सड़कों से सम्बद्ध सभी विभागों को वर्षा से क्षतिग्रस्त सड़कों को दीपावली से पूर्व ठीक करने के निर्देश दिए है। उप मुख्यमंत्री दियाकुमारी ने अधिकारीयों को लगाातार फील्ड में रहकर सड़क कार्यों की मॉनिटरिंग के निर्देश दिए है। राष्ट्रीय उच्च मार्गों की सड़कों को छोड़ दें तो प्रदेश के नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कें क्षत–विक्षत हैं। सम्बन्ध सरकारी एजेंसियां हर साल सड़कों के निर्माण और मेंटनेंस पर करोड़ों रुपए खर्च कर रही है लेकिन सड़कों पर गड्ढे होने से जहां इन पर चलना मुश्किल है वहीं यह गड्ढे जानलेवा साबित हो रहे है। फिलहाल प्रदेशभर में सड़कों पर चल रहा पेचवर्क का कार्य मुख्य सड़कों तक सीमित है। गली–मोहल्लों की सड़कों की अभी सुध–बुध नहीं ली गई है। राजधानी जयपुर में भारी वर्षा ने सड़कों को बुरी तरह क्षतिग्रस्त करके रख दिया है। बड़े–बड़े खड्डे और गड्ढों ने आमजन और वाहनों के लिए खतरे का एलान कर दिया है। कई जगह सड़कें बह जाने की जानकारी मिली है। सड़क दुर्घटनाएं बढ़ने लगी है। हेलमेट नहीं लगाने, नो पार्किंग में गाड़ी खडी करने, रोड टैक्स नहीं भरने पर आम लोगों के खिलाफ फौरी कार्यवाही हो जाती है जबकि सड़क के गढ्ढों के कारण सभी वाहनों में मेंटेनेंस बढ़ जाता है, टूटी सड़कों के कारण लोग हादसों का शिकार हो रहे है लेकिन इसकी परवाह किसी को नहीं है। यह हाल तब है कि जब राजधानी में हर वीवीआईपी मूवमेंट के समय सड़कों की मरम्मत के नाम पर कुछ चुनिदां सड़कों का ही बार–बार मेटनेंस किया जाता है, बाकी राजधानी की सड़कें बदहाल हालत में है। राजधानी की यह स्थिति है तो जिला, नगरीय और ग्रामीण सड़कों का सहज ही अन्दाजा लगाया जा सकता है। वर्षात की बात एक बारगी छोड़ भी दें तो भी आये दिन किसी न किसी विभाग की खुदाई ने सड़कों को तहस नहस कर रखा है। नगरों और महानगरों की सड़कों पर अतिक्रमण किसी से छिपा नहीं है। यूनेस्को द्वारा घोषित राजधानी जयपुर की वर्ल्ड हेरिटेज सीटी का हाल भी सही नहीं कहा जा सकता जहाँ बाजारों में सरेआम सड़क मार्गों पर हुए अतिक्रमणों ने लोगों का जीना हराम कर रखा है।

जयपुर प्रदेश की राजधानी है। यहाँ हजारों वाहन सड़कों पर प्रतिदिन विचरण करते हैं। इन सड़क मार्गों पर राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री और अन्य वी.आई.पी. लगभग रोज ही आते-जाते हैं। यहाँ छोटी-मोटी मिलाकर हजारों सड़कें हैं जो समुचित देख-रेख के अभाव में घायल अवस्था में पड़ी हैं। जे.डी.ए. और नगर निगम के सड़क मरम्मत के वाहन कहीं-कहीं देखने को मिल जायेंगे मगर गुणवत्ता के अभाव में इनके लगाये पैबंदों की स्थिति कुछ ही दिनों में पुरानी स्थिति में लौट आती है। राजधानी की सड़कों की यह स्थिति है तो प्रदेश की जिला, नगर और ग्रामीण सड़कों का सहज ही अन्दाज लगाया जा सकता है।

सड़कें हमारे परिवहन का मुख्य साधन हैं। जहाँ हर रोज हमारे लाखों व्यवसायिक और निजी वाहन सरपट सड़कों पर दौड़ते हैं। सड़क परिवहन ने सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कम एवं मध्यम दूरियाँ के लिए यह यातायात का सर्वाधिक सुगम एवं सस्ता साधन भी हैं। वास्तव में यह सेवा परिवहन के अन्य साधनों की सहायक है, क्योकि इसकी विश्वसनीयता, शीघ्रता, लचीलापन एवं दरवाजे तक प्रदान की जाने वाली सुविधा काफी महत्तवपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान राज्य सरकार ने शासन व्यवस्था सम्भालते ही यह घोषणा की थी कि सड़कों की प्राथमिकता से सार–संभाल की जायेगी और जन भावनाओं के अनुरूप निर्माण और जीर्णोद्धार का कार्य हाथ में लेकर सर्वसाधारण को राहत दी जायेगी। मगर आज भी आप भी राज्य के किसी भी शहरी–ग्रामीण मार्ग पर चले जाइये आपको सड़कों की वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। जयपुर प्रदेश की राजधानी है। यहाँ हजारों वाहन सड़कों पर प्रतिदिन विचरण करते हैं। इन सड़क मार्गों पर राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री और अन्य वी.आई.पी. लगभग रोज ही आते–जाते हैं। यहाँ छोटी–मोटी मिलाकर हजारों सड़कें हैं जो समुचित देख–रेख के अभाव में घायल अवस्था में पडी हैं। जे.डी.ए. और नगर निगम के सड़क मरम्मत के वाहन कहीं–कहीं देखने को मिल जायेंगे मगर गुणवत्ता के अभाव में इनके लगाये पैबंदों की स्थिति कुछ ही दिनों में पुरानी स्थिति में लौट आती है। राजधानी की सड़कों की यह स्थिति है तो प्रदेश की जिला, नगर और ग्रामीण सड़कों का सहज ही अन्दाज लगाया जा सकता है।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 18 सितम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, पुष्य नक्षत्र प्रातः 6:33 तक, शिव योग रात्रि 9:37 तक, कौलव करण दिन 11:32 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कन्या, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–तुला, बुध–कन्या, गुरू–मिथुन, शुक्र–सिंह, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि और गुरू पुष्य योग सूर्योदय से प्रातः 6:33 तक है। आज द्वादशी का श्राद्ध है और सन्यासियों का श्राद्ध है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:48 तक, चर 10:50 से 12:21 तक, लाभ–अमृत 12:21 से 3:23 तक, शुभ 4:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:17, सूर्यास्त 6:25

मेष

परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
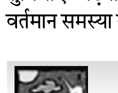
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
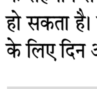
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
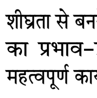
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनः स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ बनी रहेगी। मन में असंतोष और भय बना रहेगा।

कन्या
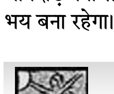
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

तुला
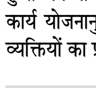
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

वृश्चिक
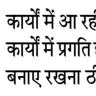
परिवार में शुभ–मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
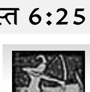
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। मन में भय बना रहेगा। यात्रा में दुर्घटना का भय है। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर
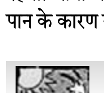
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
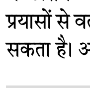
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
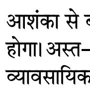
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

भारत की गौरवशाली यात्रा का स्वर्णिम युग

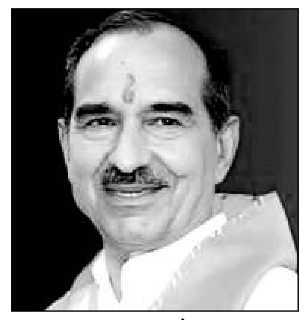

मदन राठौड़

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 75वें जन्मदिवस पर सम्पूर्ण राजस्थान की जनता और भारतीय जनता पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। उनका जीवन संघर्ष, अनुशासन, संवेदनशीलता और अविरल राष्ट्रसेवा का एक अद्वितीय उदाहरण है। एक साधारण स्वयंसेवक से भारत के प्रधानमंत्री की ऐतिहासिक यात्रा में मोदीजी ने अपनी अदम्य इच्छाशक्ति, संकल्पशक्ति और राष्ट्र प्रथम भावना के द्वारा पूरी दुनिया को भारत की शक्ति का अहसास कराया है। उनका दृढ़ संकल्प भारत माता का शीश कभी झुकने नहीं दूंगा हर भारतीय के मन में विश्वास की अलख जगाता है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने दीर्घ व प्रेरणादायी सार्वजनिक जीवन में भारतीय समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया। 140 करोड़ भारतीयों की सेवा, देश को एक सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने का उनका सपना और प्रयास सराहनीय है। उनके नेतृत्व में भारत ने न केवल राजनीतिक दिशा–निर्देशों को नये आयाम दिए, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और अंतरराष्ट्रीय पहचान को भी एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया। उनकी सोच, दूरदृष्टि और निर्णय क्षमता के परिणामस्वरूप आज भारत हर क्षेत्र में एक मजबूत, विकसित और आत्मविश्वासी राष्ट्र के रूप में उभर कर सामने आया है।

मोदी जी के नेतृत्व में हुए आर्थिक सुधार ऐतिहासिक रहे हैं। जैसे–जीएसटी क्रियान्वयन, नोटबंदी का साहसिक निर्णय, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया, मुद्रा योजना और प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी अनेक पहलों ने देश की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को मजबूत किया है। जन–जन तक बैंकिंग सेवाएं पहुंचाने के लिए जनधन योजना के ज़रिए करोड़ों लोगों को देश की आर्थिक मुख्यधारा में जोड़ा गया। हर भारतीय को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए की गई नीति–निर्माण की ये दूरगामी सोच उन्हें एक सच्चे जननेता के रूप में स्थापित करती है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी प्रधानमंत्री मोदी जी की छवि एक साहसी और प्रभावशाली नेता के रूप में स्थापित हुई है। पाकिस्तान जैस दुश्मन देशों के प्रति उनकी प्रबल नीति से लेकर, आतंकवाद एवं नक्सलवाद के खिलाफ उनके निर्णायक कदमों ने भारत की सुरक्षा को और सुदृढ़ किया। वैश्विक नेतृत्व में उन्होंने भारत की साख बढ़ाई और तमाम अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की आवाज बुलन्द की। रक्षा, अंतरिक्ष और तकनीक के क्षेत्रों में उनकी योजनाओं ने देश को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाया है।

सामाजिक और सांस्कृतिक मोर्चे पर भी मोदी जी ने प्रेरक कार्य किए हैं। महिला सशक्तिकरण की दिशा में महिला आरक्षण जैसे ऐतिहासिक कदम, स्वच्छ भारत अभियान, उज्ज्वला योजना और जल जीवन मिशन ने समाज के हर वर्ग के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। भारतीय संस्कृति, कला और आध्यात्म का पुनरुत्थान करते हुए प्रधानमंत्री मोदी जी ने देश को गौरवशाली परंपराओं से जोड़ने का कार्य किया है।

आज, जब हमारे प्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, हमें विश्वास है कि उनकी अडिग नेतृत्व क्षमता, गहन राष्ट्रभक्ति और लोककल्याण के प्रण से भारत आने वाले दशकों में विश्व के सर्वोच्च राष्ट्रों की कतार में खड़ा होगा। सम्पूर्ण भाजपा परिवार एवं राजस्थान की तरफ से उनके अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र की मंगलकामना करता हूँ। मोदी जी का योगदान, सोच और मार्गदर्शन हमेशा देश के लिए प्रेरणा की अलौकिक मिसाल बना रहेगा।

–मदन राठौड़,
भाजपा प्रदेश अध्यक्ष

कब होगा सम्पूर्ण साक्षर राजस्थान?

राजेन्द्र जोशी

साक्षरता से व्यक्ति के भीतर जीवन मूल्यों की स्थापना और उन्हें सजग और जागरूक नागरिक भी बनाती है। इस बड़े फलक को दो दशक पहले केरल ने हासिल कर लिया और अब तो केरल डिजिटल साक्षर भी बन गया। नवीन और चुनौति भरे दौर में हिमाचल प्रदेश ने इस दिशा में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। पिछले दिनों पहाड़ से एक सुकून भरा समाचार मिला । पहाड़ों की रानी शिमला और पहाड़ों के बीच बसा हुआ हिमाचल प्रदेश विपरीत परिस्थितियों के बावजूद संपूर्ण साक्षर हो गया। हिमाचल प्रदेश की परिस्थितियां हम सभी जानते हैं कि एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने में कितनी मुश्किल होती हैं।

सफर सुहाना है, परन्तु दुरूह है। पहाड़ों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए अधिकतर पैदल ही चलना पड़ता है। हिमाचल प्रदेश की सात प्रतिशत से सम्पूर्ण साक्षरता तक की यात्रा का सफर बहुत चुनौतिपूर्ण रहा है। यह कार्य स्कूल शिक्षा निदेशालय के तत्वावधान में पूर्ण किया गया । मुश्किल सफर का सुखद पहलू 2025 में शत–प्रतिशत साक्षरता से रहा। इन दिनों साक्षरता के अच्छे समाचार मिल रहे हैं। केरल के बाद मिजोरम, त्रिपुरा फिर गोवा और अब हिमाचल प्रदेश सम्पूर्ण साक्षर हो गए। दो दशक पहले वर्ष 1991 में मुझे केरल के साक्षरता अभियान के नजदीक से देखने का अवसर मिला। वहां के सरकारी और गैर सरकारी लोगो का समर्पण गजब था।

लगभग दो दशक से भी पहले देश ने संपूर्ण साक्षरता की परिकल्पना की थी। वह समय देशभर में चुनौती भरा था। जब भारत की साक्षरता दर दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले बहुत कम थी। देश में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना की गई। धीरे–धीरे लगभग सभी राज्यों में सम्पूर्ण साक्षरता के लिए जोरदार काम प्रारंभ हुआ। इसके लिए राज्यों ने साक्षरता के लिए कार्य योजना का निर्माण किया और प्रदेशों में बेहतरीन कार्य हुआ। पिछले एक दशक से भारत सरकार ने साक्षरता की ज़िम्मेदारी पूरी तरह राज्यों के हवाले कर दी। ऐसे में अनेक राज्य सरकारों ने स्वप्रेरणा से साक्षर होने के लिए बेहतरीन काम किया। और राज्य सम्पूर्ण साक्षर हो रहे है।

अधिकांश राज्यों में यह कार्य स्कूल शिक्षा निदेशालय अथवा ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग के माध्यम से किया जा रहा है। राजस्थान उन सौभाग्यशाली राज्यों में जहां साक्षरता के लिए स्वतंत्र विभाग स्थापित किया गया। राजस्थान में प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय जनवरी 1979 में स्थापित हुआ। और इसी प्रकार प्रत्येक जिले में विभाग खोले गये। स्वतंत्र विभाग होने के बावजूद राजस्थान की साक्षरता दर चिंताजनक है। राजस्थान उन राज्यों में शुमार है जहां साक्षरता के क्षेत्र में प्रदेश की गिनती नीचे से की जाती है। हमे उन प्रदेशों से सीखना चाहिए जहां विपरीत परिस्थितियों के बावजूद साक्षर होने की होड मची है। स्वतंत्र विभाग होने के बावजूद साक्षरता उस विभाग की भी प्राथमिकता में नहीं है । जब से साक्षरता भारत सरकार के अभियान से कार्यक्रम बना है तब से राजस्थान का साक्षरता एवं सतत शिक्षा निदेशालय हाथ पर हाथ धरे बैठा है। राज्य की स्वतंत्र कार्य योजना बनाने में असफल रहा है। यह कमजोरी सरकारों की नहीं है बल्कि निदेशालय जैसी मूल संस्था की असफलता मानी जानी चाहिए।

स्वतंत्र विभाग जिसके पास निरक्षरता उन्मूलन के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य नहीं है। स्वतंत्र विभाग की सफलता तब मानी जाती जब राजस्थान सम्पूर्ण साक्षर प्रदेश बनता।

जबकि देश के अन्य प्रदेशों में स्वतंत्र विभाग स्थापित नहीं हैं। वहां यह कार्य अन्य विभागों के जिमे दिया गया है। राजस्थान में संसाधनों की उपलब्धता और प्रशिक्षित मानव तंत्र होने के बावजूद निदेशालय द्वारा किसी भी प्रकार की प्रभावी कार्य योजना नहीं है। पिछले दो दशक से राज्य के साक्षरता एवं सतत शिक्षा निदेशालय को सरकारों ने भी जानने का प्रयास नहीं किया आप क्या काम कर रहे हो।

जहां हिमाचल प्रदेश 7 प्रतिशत से शत–प्रतिशत तक पहुँच गया, वही राजस्थान 8.95 प्रतिशत से 2011 की जनगणना में 66.11 प्रतिशत तक आकर अटक गया। राजस्थान की साक्षरता वृद्धि दर तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो 2001 से 2011 के दशक में मात्र 5.71 प्रतिशत की वृद्धि कर सका। जिस समय राजस्थान में संपूर्ण साक्षरता अभियान भारत सरकार के सौजन्य से प्रारंभ हुआ था। देश भर में यह अभियान स्वतंत्रता आंदोलन के बाद पहली बार सभी जिलों में आयोजित किया गया। 1991–2001 के दशक में राजस्थान की वृद्धि दर 21.85 प्रतिशत रही थी। राजस्थान के साक्षरता निदेशालय ने उस वृद्धि दर को बरकरार रखना तो दूर आधे तक भी नहीं पहुँच सका। राजस्थान में 2001 के बाद के दशक में लगभग साक्षरता को कार्यक्रम बनाकर रख दिया। जो रेंगता चल रहा है। राजस्थान के लिए उजला पक्ष यह है की 1991 से 2001 के दशक में राजस्थान ने साक्षरता दर में क्वांटम जंप लिया, वही अनेक जिलों को सत्यैन मैत्रेय पुरस्कारों से भी नवाजा जा चुका हैं । साक्षरता के प्रचार–प्रसार के लिए प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय यूनेस्को कन्फ्यूशियस पुरस्कार 2006 से राजस्थान को सम्मानित किया गया था।

अगर तुलनात्मकता की बात करेंगे तो पुरुष साक्षरता दर में इस दशक में मात्र 3.50 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर में है 8.27 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई थी। कोटा जिले को छोड़कर शेष राज्य में वर्ष 2010 में केवल ग्रामीण क्षेत्र में किए गए सर्वेक्षण के दौरान साक्षर भारत पोर्टल पर 12520777 असाक्षर चिन्हित किए गए थे। इन असाक्षरों को अभियान के रूप में योजनाबद्ध तरीके से संकल्पित होकर साक्षर किया जाना था।

पीएलएफएस की रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान की साक्षरता दर 2025 में 75.8 प्रतिशत के साथ नीचे से चौथे नंबर पर आता है। एक सुकून देने वाली बात राजस्थान के लिए जरूर है कि पहले हम नीचे से दूसरे नंबर पर थे और अब 2025 के सैंपल सर्वे में हम चौथे स्थान पर आ चुके हैं।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

“नेशनल ट्राईबल फूड फेस्टिवल– 2025” का उदयपुर में भव्य आगाज़

■ परंपरागत जनजाति व्यंजनों की खुशबू से सुवासित हो उठी झीलों की नगरी

उदयपुर, (निसं)। झीलों की नगरी उदयपुर इन दिनों देशभर के परंपगरात जनजाति व्यंजनों की खुशबू से सुवासित हो रही है। नगर निगम परिसर में कहीं चूल्हे पर मिट्टी के बर्तनों में दाल–सब्जी पक रही हैं, तो कहीं ढाक के पतों के बीच मक्की के पानिये पक रहे हैं। रागी, कोदरा, वटी जैसे मोटे अनाजों के व्यंजनों और महुआ के फुलों के ढोकले और लड्डू का चटकारा मिल रहा है तो बांस की सब्जी चखने के लिए होड़ सी मच रही है। यह सभी दृश्य नगर निगम परिसर में बुधवार से शुरू हुए तीन दिवसीय नेशनल ट्राईबल फूड फेस्टिवल - 2025 में देखने को मिल रहे हैं।

केबिनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी सहित अन्य अतिथियों ने व्यंजनों की जानकारी ली।

जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से भगवान बिरसा मुण्डा की 150वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे जनजातीय गौरव वर्ष के तहत देश भर में विविध आयोजन हो रहे हैं। इसी क्रम में उदयपुर में जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग एवं माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान के तत्वावधान में तीन दिवसीय नेशनल ट्राईबल फूड फेस्टिवल का शुभारंभ बुधवार को नगर निगम परिसर में जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी के मुख्य आतिथ्य में हुआ। विशिष्ट अतिथि उदयपुर शहर विधायक ताराचंद जैन एवं उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा रहे। फेस्टिवल में राजस्थान सहित देश के 7 राज्यों से जनजाति समाज के पाक कलाकार भाग लेकर अपने–अपने क्षेत्र के विशिष्ट परंपरागत जनजाति व्यंजन तैयार कर प्रदर्शित कर रहे हैं। फेस्टिवल में प्रवेश पूरी तरह से निःशुल्क है। आमजन स्टाल्स पर अपनी पसंद से खाद्य सामग्री खरीद कर उसका लुत्फ उठा सकते हैं। आयोजन स्थल पर व्यंजनों का आनंद लेने के लिए डाइनिंग एरिया की भी व्यवस्था रखी गई है।

समारोह को संबोधित करते मुख्य अतिथि केबिनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने कहा कि यह फेस्टिवल व्यंजनों के स्वाद के साथ सांस्कृतिक संगम का भी सुअवसर है। इसके माध्यम से लोग एक दूसरे की संस्कृति को जान सकेंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक भारत–श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं। इसी क्रम में यह आयोजन हो रहे हैं।

केबिनेट मंत्री ने पारंपरिक खान–पान का जिक्र करते हुए कहा कि हमारे पूर्वजों का भोजन और दिनचर्या स्वास्थ्यवर्धक थी, इसलिए लोग बीमार कम होते थे, लेकिन अब खान–पान में आए बदलाव और विकृतियों के चलते स्वास्थ्य संबंधी शिकायतें ज्यादा होने लगी हैं। उन्होंने परंपरागत खाद्य प्रणाली को अपनाने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि नेशनल ट्राईबल फूल फेस्टिवल भारत की सांस्कृतिक विविधता को उजागर करते हुए इन विविधताओं को एक सूत्र में पिरोने का मंच भी सिद्ध होगा। उद्घाटन समारोह को विधायक तारांचद जैन ने भी संबोधित किया।

प्रारंभ में टीआरआई निदेशक ओपी जैन ने आयोजन की जानकारी दी। कार्यक्रम में जनजाति बालिकाओं ने नृत्य, गीत आदि की प्रस्तुतियां भी दी। समारोह में टीएडी उपायुक्त कृष्णपालसिंह चौहान, जितेंद्र पाण्डे, निदेशक सांख्यिकी सुधीर दवे सहित अधिकारी एवं विभिन्न क्षेत्रों से आए पाक कलाकार उपस्थित रहे। संचालन अतिरिक्त जिला शिक्षाधिकारी टीएडी डॉ. अमृता दाधीच ने किया। केबिनेट मंत्री खराड़ी सहित अतिथियों ने विभिन्न स्टाल्स का अवलोकन कर प्रदर्शित व्यंजनों के बारे में जानकारी ली। साथ ही जनजाति पाक कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

फूड फेस्टिवल में महाराष्ट्र के महादेव कोली जनजाति के मासवडी, डांगर भाकरी, कड़क माकरी, मध्यप्रदेश से बारेला, बेगा, मलासी जनजाति द्वारा लाल ज्वारी के लड्डू, जंगली मौसंबी भाजी, कुटकी भात, जम्मू कश्मीर से गुज्जर जनजाति द्वारा कद्दू खीर, कुंगी मुकुम, दादर एवं नगर हवेली से माण्डोनी जनजाति द्वारा बेम्बू अचार, नागली रोटी, मोरींगा भाजी, छत्तीसगढ़ से हालना एवं मुरीया जनजाति द्वारा मंडिया रोटी, आमल, चापड़ा चटनी, गुजरात से घोड़िया जनजाति द्वारा नागली से तैयार विभिन्न व्यंजन तथा राजस्थान के विभिन्न जनजाति बहुल जिलों से भील, मीणा, गरासिया एवं सहरिया जनजाति के पाक कलाकारों द्वाना कुलध की घूघरी, मक्के का खींचड़ा, मक्की राब व लापसी, कुआर, किकोड़े की भाजी, बाजरा राब, बाजरी का सोगरा, महुआ के ढेकले, महुआ के लड्डू, पानिया, केर सांगरी (पंचकुटा) इत्यादि व्यंजन तैयार किए जा रहे हैं।

अवैध खनन पर कार्रवाई, 582 टन फैल्सपार जब्त

■ खनिज एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीमों ने 7.18 लाख की पेनल्टी लगाई

ब्यावर, (निसं)। जिला कलेक्टर कमल राम मीना के निर्देशों की पालना में खनिज विभाग एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीम ने ग्राम कुण्डिया, तहसील मसूदा में अवैध खनन स्थल पर अकस्मात छापामारी की। कार्रवाई के दौरान एक स्थान पर फैल्सपार खनिज का अवैध खनन होते पाया गया।

मौके पर हल्का पटवारी ने बताया कि यह अवैध खनन खसरा संख्या 16 की खातेदारी भूमि से सटी चारागाह भूमि खसरा संख्या 3006/15 में हो रहा था। जांच में खुलासा हुआ कि यह अवैध खनन महेन्द्र सिंह पुत्र लक्ष्मण सिंह निवासी चांदा का बाड़िया, तहसील मसूदा, जिला ब्यावर एवं खसरा संख्या 16 के खातेदारों द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। टीम ने मौके पर अवैध खनन पिट का नाप–जौक किया, जिसमें पाया गया कि लगभग 20 मीटर लम्बाई, 7 मीटर चौड़ाई एवं 2 मीटर गहराई में खुदाई की गई है। इस आधार पर लगभग 582.4 टन फैल्सपार खनिज का अवैध निर्गमन होना सामने आया। प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट हुआ कि खातेदारों एवं खननकर्ता द्वारा आपसी सहमति से यह अवैध खनन किया जा रहा है। इस पर 7.18 लाख रुपये की पेनल्टी आरोपित की गई है तथा संबंधित खननकर्ता एवं खातेदारों के विरुद्ध पुलिस थाना सदर में एफ.आई.आर. दर्ज कराने की कार्रवाई की जा रही है। खातेदारी अधिकार निरस्तीकरण की कार्रवाई भी प्रस्तावित है।

जिला कलेक्टर कमलराम मीना ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि जिले में अवैध खनन किसी भी परिस्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई करते हुए दोषियों पर कड़ी प्रशासनिक और कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

कार्रवाई के दौरान वन विभाग की टीम तैनात रही।

प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन पर ''स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार'' अभियान का शुभारंभ

महिलाओं के स्वस्थ होने पर ही गांव, जिला और देश स्वस्थ बनता है: मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को मध्यप्रदेश के धार से ''सशक्त नारी-सशक्त परिवार'' अभियान का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रतापनगर स्थित आरयूएचएस चिकित्सालय परिसर से वर्चुअल माध्यम से भाग लिया।

- मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर थैलेसीमिया कुटुंब योजना और मनदर्पण मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का शुभारंभ किया

मुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं के स्वस्थ होने पर ही गांव, जिला और देश स्वस्थ बनता है। प्रधानमंत्री मोदी ने महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं जैसे बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला योजना, सुकन्या समृद्धि योजना और मातृ वंदना योजना। उन्होंने कहा कि लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने की पहल भी मोदी की दूरदर्शिता का परिणाम है।मुख्यमंत्री ने बताया कि राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं का निरंतर विस्तार हो रहा है। वर्तमान में राज्य की मातृ मृत्यु दर राष्ट्रीय औसत से कम होकर 86 प्रति एक लाख पर पहुंच गई है। प्रदेश में संस्थागत प्रसव की दर 95 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है और 95 लेबर रूम एवं 44 ऑपरेशन थियेटर भारत सरकार द्वारा प्रमाणित किए गए हैं।मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर थैलेसीमिया कुटुंब योजना और मनदर्पण मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जेके लोन अस्पताल में 20 करोड़ रुपये की लागत से बनी बाल हृदय-छाती शल्य चिकित्सा इकाई का भी लोकार्पण किया गया। इसके अलावा उन्होंने लाभार्थियों को पोषण किट, स्वास्थ्य कार्ड, निक्षय मित्र प्रमाण पत्र और देसी घी योजना के कूपन वितरित किए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मध्यप्रदेश के धार से इस अभियान की शुरुआत करते हुए मातृ वंदना योजना के तहत 15 लाख महिलाओं को आर्थिक सहायता हस्तांतरित की। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति राष्ट्र की प्रगति का आधार है और किसी भी महिला को जागरूकता या संसाधनों के अभाव में स्वास्थ्य से वंचित नहीं रहना चाहिए।कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर, सांसद घनश्याम तिवाड़ी, मंजू शर्मा, विधायक कैलाश वर्मा सहित बड़ी संख्या में महिलाएं और अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को मध्यप्रदेश के धार से ''सशक्त नारी-सशक्त परिवार'' अभियान का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रतापनगर स्थित आरयूएचएस चिकित्सालय परिसर से वर्चुअल माध्यम से भाग लिया।

पतंजलि करेगा देश के प्रतिभावान विद्यार्थियों को पुरस्कृत

फ्री मेडिकल चैकअप, योग व हैल्थ कैम्प लगाए जाएंगे

नई दिल्ली। पतंजलि ग्रुप देश के प्रतिभावान विद्यार्थियों को पुरस्कृत करेगा। इसके साथ ही फ्री मेडिकल चैकअप एवं योग व हैल्थ कैम्प भी लगाए जाएंगे। यह जानकारी स्वामी रामदेव ने बुधवार को नई दिल्ली में प्रैस कॉफ्रेंस में दी। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में यह कार्यक्रम होंगे। उन्होंने बताया कि देश के सभी जिलों में सीबीएसई, बीएसबी (भारतीय शिक्षा बोर्ड) व स्टेट बोर्ड के प्रथम, द्वितीय व तृतीय प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रोत्साहन व गौरव देने के लिए पतंजलि द्वारा 11 से 51 हजार रुपयों से पुरस्कृत किया जाएगा।

देशभर में 750 स्थानों पर फ्री मेडिकल चैकअप एवं योग व हैल्थ कैम्प लगाए जाएंगे। देश में 750 से अधिक स्थानों पर क्रोनिक लीवर डिजीज, फैटी लीवर और लीवर सिरोसिस की निशुल्क औषधि वितरण एवं उपचार कैम्प लगाए जाएंगे। आज देश में करोड़ों लोग हार्ट व लीवर के रोगी हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में जिन असाध्य रोगों का इलाज नहीं है, पतंजलि ने योग-आयुर्वेद एवं स्वस्थ दिनचर्या तथा रिसर्च एण्ड एविडेंस बेस्ड औषधियों से ऐसे हजारों रोगियों को स्वस्थ किया है।

उन्होंने कहा कि भारत प्राचीनकाल से ही अर्थव्यवस्था के शिखर पर रहा है। 250 सालों में इस्ट इण्डिया कम्पनी से लेकर अनेकों कम्पनियों ने भारत की 100 ट्रिलियन से ज्यादा आर्थिक लूट केवल दो दशकों में की है। भारत की अर्थव्यवस्था को विश्व में सर्वोपरि बनाने के लिए प्रधानमंत्री के आव्हान वोकल फॉर लोकल व स्वदेशी के आंदोलन को गाँव-गाँव व घर-घर तक जनांदोलन के रूप में चलाया जाएगा। प्रधानमंत्री द्वारा चलाए जा रहे विकसित भारत अभियान को साकार करने के लिए संपूर्ण देश भर में स्वदेशी का अभियान चलाकर, भारत को विश्व की आर्थिक महाशक्ति बनाने के लिए तथा राष्ट्र निर्माण के सभी क्षेत्रों में स्वदेशी को गौरव प्रदान करने के लिए व विदेशी ताकतों से देश की लूट को बचाएंगे तथा भारत को परम वैभवशाली बनाएंगे।

पतंजलि ग्रुप के प्रतिभावान विद्यार्थी पुरस्कार समारोह और योग शिविरों के बारे में स्वामी रामदेव ने बुधवार को नई दिल्ली में प्रैस कॉफ्रेंस में दी।

सरस निकुंज में सजी गोवर्धन पर्वत की सांझी

जयपुर। इंदिरा एकादशी पर बुधवार को सुभाष चौक पानो का दरीबा स्थित श्री शुक संप्रदाय आचार्य पीठ श्री सरस निकुंज में सांझी उत्सव मनाया गया। श्री शुक संप्रदाय पीठाधीश्वर श्री अलबेली माधुरी शरण जी महाराज के सान्निध्य में गिर्राज पर्वत छप्पन भोग की सुंदर सांझी के दर्शन कराए गए। श्री सरस परिकर के प्रवक्ता प्रवीण बड़े भैया ने बताया कि सांझी में किशोरी जी द्वारा सखियों के साथ गिर्राज धरण महाराज और यमुना महारानी के पूजन के भाव से झांकी सजाई गई। चौकी पर गिर्राज पर्वत और छप्पन भोग की झांकी सजाई गई वहीं, एक बड़े पात्र में जल भरकर यमुना महारानी के दर्शन कराए गए।

वसुंधरा राजे, राजेन्द्र राठौड़ समेत अन्य के खिलाफ परिवाद खारिज

महिंद्रा सेज की भूमि से जुड़े 10 वर्ष पुराने प्रकरण में दायर परिवाद को अतिरिक्त न्यायिक मजिस्ट्रेट क्रम-11 ने खारिज किया

जयपुर। अतिरिक्त न्यायिक मजिस्ट्रेट क्रम-11 ने महिंद्रा सेज की भूमि से जुड़े प्रकरण में पूर्व सीएम वसुंधरा राजे, राजेंद्र राठौड़, गुलाब कटारिया, गजेन्द्र सिंह खींवसर सहित पूर्व आईएएस सीएस राजन व वीनू गुप्ता व अन्य के खिलाफ दस साल पहले दायर परिवाद को खारिज कर दिया है। पीठासीन अधिकारी पार्वती ने अपने आदेश में कहा कि परिवादी संजय छाबड़ा ने परिवाद पत्र के समर्थन में कोई साक्ष्य पेश नहीं की है। परिवादी ने सिर्फ मौखिक आरोप लगाए हैं। ऐसे में परिवाद को खारिज किया जाता है।

परिवाद में कहा गया कि इन आरोपियों ने मंत्रिमंडल के कैबिनेट सहयोगियों से मिलकर पद का दुरुपयोग किया और महिंद्रा ग्रुप के आनंद महिंद्रा को फायदा पहुंचाया। आरोपियों ने महिंद्रा लाइफ स्पेस डवलपर्स लिमिटेड के आधा दर्जन से अधिक अधिकारियों से मिलकर महिंद्रा सेज सिटी की सड़क, पार्क और स्कूल के लिए आरक्षित जमीन का लैंड यूज बदल दिया। इसके लिए तत्कालीन उद्योग सचिव वीनू गुप्ता ने लैंड यूज का प्रस्ताव बनाया और मुख्य सचिव सीएस राजन ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर तत्कालीन सीएम राजे व अन्य मंत्रियों को भेज दिया। आरोपियों ने कैबिनेट मीटिंग में महिंद्रा वर्ल्ड सिटी की सामाजिक आधारभूत संरचना की एक हजार एकड़ भूमि को घटाकर 446 एकड़ कर दिया। जिससे करीब पांच सौ एकड़ जमीन लाईफ स्पेस डवलपर्स को निजी फायदे के लिए दे दी। इस दौरान भूमि रूपान्तरण पर लगने वाले चार्ज की छूट के संबंध में वित्त विभाग से अनुमति भी नहीं ली गई। इस कार्रवाई में आरोपियों ने करीब पांच हजार करोड़ रुपए का राजकोष को नुकसान पहुंचाया।

अधिक से अधिक लोग करें हनुमान चालीसा पाठ

जयपुर। आगामी 4 अक्टूबर को श्री हनुमान चालीसा प्रबन्ध समिति के तत्वावधान में भांकरोटा में आयोजित होने वाले श्री हनुमान चालीसा के सामूहिक 108 पाठ के कार्यक्रम को लेकर भारत माता मंदिर में बैठक आयोजित की गई।बैठक की अध्यक्षता करते हुए विश्व हिंदू परिषद राजस्थान के संगठन मंत्री राजाराम ने अधिक से अधिक लोगों को सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ करने का आ ान किया। संत अमरनाथ महाराज के सानिध्य में पोस्टर का विमोचन किया। गया। कैलाश कुमावत ने बताया कि नि:शुल्क रजिस्ट्रेशन कराने की अंतिम तिथि 25 सितंबर है। इस दौरान महेश बम्ब, कैलाश कुमावत, रवीन्द्र खंगारोत, सीताराम बम्ब, सरदार सिंह, अनुज कुमावत, भागचंद वर्मा, मुकेश कुमावत, सुनील जैन मौजूद रहे।

हाईकोर्ट ने राज्य बुनकर संघ के प्रबंध निदेशक को तलब किया

- रिटायर्ड कर्मचारी को भुगतान नहीं करने के मामले में जवाब मांगा

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने रिटायर्ड कर्मचारी को समय पर पेंशन भुगतान नहीं करने से जुड़े मामले में राज्य बुनकर संघ लिमिटेड के एमडी को 24 सितंबर को वीसी या व्यक्तिश: उपस्थिति होकर बकाया भुगतान नहीं करने का कारण बताने को कहा है। जस्टिस महेन्द्र कुमार गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश अजीत सिंह की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान अदालती आदेश की पालना में बुनकर संघ की ओर से आय व्यय का विवरण अदालत में पेश किया गया। जिसमें बताया गया कि साल 2024-25 में कार की मरम्मत पर 9.55 लाख रुपए का खर्च किया गया। वहीं दिवाली पर भी करीब डेढ लाख रुपए खर्च किए गए। वहीं 2.20 करोड रुपए से अधिक कर्मचारियों के वेतन आदि पर खर्च किए गए। इसके अलावा बैंक खाते में करीब 135 करोड़ रुपए मौजूद हैं। इस पर याचिकाकर्ता के वकील नीरज कुमार शर्मा ने कहा कि संघ की ओर से अपने शपथ पत्र में याचिकाकर्ता को बकाया का विलंब से भुगतान पर ब्याज क्यों नहीं दिया जा सकता। याचिकाकर्ता को सितंबर, 2015 में रिटायर होने के 2 साल बाद ग्रेच्युटी और चार साल बाद अवकाश का भुगतान किया गया। जबकि याचिकाकर्ता के बाद रिटायर हुए कर्मचारियों को तुरंत ही समस्त बकाया का भुगतान किया जा चुका है। इस पर अदालत ने कहा कि यह समझ से परे है कि संघ की ओर से याचिकाकर्ता को समय पर बकाया भुगतान और देरी से भुगतान पर ब्याज क्यों नहीं दिया गया। ऐसे में संघ के एमडी वीसी या व्यक्तिश: पेश होकर इसका कारण बताए।

याचिकाकर्ता के वकील नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि याचिकाकर्ता दस साल पहले संघ से रिटायर हुआ था। संघ को उसे सेवानिवृत्ति से जुड़े परिलाभ तत्काल देने थे, लेकिन संघ ने लंबे समय तय इसका भुगतान नहीं किया और बाद में इस अवधि का ब्याज भी देने से इनकार कर दिया। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने संघ को अपना आय-व्यय का ब्यौरा पेश करने को कहा था।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रक्तदाताओं को उत्साह बढ़ाया

तेरापंथ युवक परिषद की ओर से आयोजित ब्लड डोनेशन ड्राइव में पहुंचे मुख्यमंत्री

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर बुधवार को सीतापुरा और आगरा रोड स्थित हैवेंस गार्डन में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव में भाग लिया। उन्होंने रक्तदान कर रहे युवाओं का उत्साहवर्धन किया और आमजन से भी अधिक से अधिक रक्तदान करने की अपील की।

- मुख्यमंत्री ने रक्तदान को पुण्य कार्य बताया, स्वदेशी अपनाने की अपील

मुख्यमंत्री ने कहा कि रक्तदान एक महान सेवा कार्य है, जिससे किसी जरूरतमंद की जान बचाई जा सकती है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के सेवा और समर्पण से प्रेरित होकर प्रदेश में 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा मनाने की जानकारी दी, जिसके अंतर्गत शहरी एवं ग्रामीण सेवा शिविर सहित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।मुख्यमंत्री शर्मा ने इस अवसर पर आमजन से स्वदेशी उत्पादों को अपनाने और वोकल फॉर लोकल अभियान को मजबूत बनाने का भी आ ान किया। उन्होंने कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए सरकार प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। इस अवसर पर सांसद मंजू शर्मा, विधायक कैलाश वर्मा, उप महापौर पुनीत कर्णावट सहित बड़ी संख्या में युवा एवं परिषद के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने टी स्टॉल पर चाय का लिया स्वाद

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को जयपुर के मानसरोवर स्थित शिप्रापथ क्षेत्र में एक टी-स्टॉल पर चाय बनाकर उसका स्वाद लिया और आमजन से आत्मीय संवाद किया। इस दौरान उन्होंने यूपीआई से डिजिटल भुगतान कर डिजिटल इंडिया की भावना को भी प्रकट किया। मुख्यमंत्री ने टी वेंडर राकेश मीणा से उनके कार्य और आजीविका की जानकारी ली। उन्होंने स्थानीय पार्षद और अधिकारियों को निर्देश दिए कि चाय सहित अन्य पथ विक्रेताओं को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना और मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना से जोड़ा जाए, ताकि वे आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें। शर्मा ने बताया कि प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना की तर्ज पर राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना शुरू की है।

प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर 'नमो प्रदर्शनी' का शुभारंभ

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर प्रदेशभर में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में बुधवार को जयपुर स्थित जवाहर कला केंद्र में 'नमो प्रदर्शनी' का भव्य आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन किया।

इस विशेष प्रदर्शनी में प्रधानमंत्री मोदी के अब तक के कार्यकाल में किए गए महत्वपूर्ण निर्णयों, नवाचारों एवं योजनाओं को जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, वोकल फॉर लोकल, आत्मनिर्भर भारत जैसी प्रमुख पहलों से संबंधित स्टॉल्स को देखा। प्रदर्शनी में ऑपरेशन सिंदूर तथा अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण जैसे ऐतिहासिक निर्णयों पर आधारित विशेष स्टॉल्स भी दर्शकों के आकर्षण का केंद्र रहे। कार्यक्रम के दौरान एक चित्रकार द्वारा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का चित्र भी बनाया गया, जिसे उपस्थित जनसमूह ने सराहा। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित पूर्व सैनिकों, युवा उद्यिमयों एवं कार्यकर्ताओं से संवाद कर उनके अनुभवों को जाना। प्रदर्शनी स्थल पर 'मोदी स्टोरी' श्रृंखला के अंतर्गत प्रधानमंत्री मोदी के साथ जनप्रतिनिधियों के प्रेरणादायी अनुभवों पर आधारित एक शॉर्ट फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि, विभिन्न सामाजिक संगठनों के सदस्य एवं बड़ी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

खाटूश्यामजी में जुटेंगे पुजारी

जयपुर। विश्व प्रसिद्ध धार्मिक नगरी खाटू श्यामजी में पुजारी सेवक महासंघ का द्वितीय प्रांतीय महाधिवेशन का आयोजन 18-19 सितम्बर को जयपुर वालों की धर्मशाला किया जाएगा। महाधिवेशन में राजस्थान लगभग पांच हजार पुजारियों के अतिरिक्त मध्यप्रदेश, गुजरात सहित अन्य राज्यों से भी पुजारी प्रतिनिधियों की भागीदारी होगी। बुधवार को नारायण धाम में आयोजकों ने महाधिवेशन की जानकारी दी। संरक्षक खाटू श्यामजी मंदिर के महंत मोहन सिंह दास महाराज ने बताया कि महाधिवेशन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी मंदिरों में कार्यरत सेवायत/पुजारियों की गंभीर समस्याओं पर विचार-विमर्श करना तथा उनके निस्तारण हेतु ठोस कदम सुझाना है।

मुख्य सचिव ने की प्रवासी राजस्थानी दिवस की तैयारियों पर चर्चा

हैदराबाद, सूरत और कलकत्ता में आयोजित होने वाले प्री-इवेंट प्रवासी मिलन के बारे में भी बैठक में चर्चा हुई

जयपुर (कासं)। मुख्य सचिव सुधांश पंत ने जयपुर एग्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर में 10 दिसम्बर 2025 को आयोजित होने वाले प्रथम प्रवासी राजस्थानी दिवस की तैयारियों की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। पंत ने अधिकारियों को नियमित प्रगति की समीक्षा करने और लंबित मुद्दों को तुरंत निपटाने के निर्देश दिए, ताकि कार्यक्रम का सुचारू समन्वय सुनिश्चित हो सके।

'प्रवासी राजस्थानी दिवस' के दौरान 'प्रवासी राजस्थानी सम्मान पुरस्कार' भी प्रदान किए जाएंगे। समारोह में उन प्रवासी राजस्थानियों को सम्मानित किया जाएगा, जिन्होंने सामाजिक, आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य किया है।

इसके अतिरिक्त, इस दिनभर चलने वाले कार्यक्रम में शिक्षा, पर्यटन, उद्योग, स्वास्थ्य और जल जैसे विभिन्न क्षेत्रों पर सेक्टोरल सत्र आयोजित किए जाएंगे। इन सत्रों का नेतृत्व विशिष्ट विशेषज्ञ करेंगे तथा प्रवासी सदस्य, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है, भी इसमें भाग लेंगे। करीबी समन्वय और सक्रिय पहुँच की आवश्यकता पर जोर देते हुए मुख्य सचिव सुधांश पंत ने कहा, कार्यक्रम के सुचारू संचालन और प्रवासी राजस्थानियों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सभी विभागों द्वारा करीबी समन्वय और प्रभावी योजना बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। बैठक के दौरान मुख्य सचिव ने प्रतिभागियों को विभिन्न शहरों जैसे हैदराबाद, सूरत और कोलकाता में आयोजित होने वाले प्री-इवेंट प्रवासी मिलन कार्यक्रमों के बारे में भी अवगत कराया। इन प्रवासी मिलनों का उद्देश्य प्रवासी समुदाय की अधिकतम भागीदारी को प्रोत्साहित करना और राज्य के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए सार्थक संबंधों को मजबूत करना है।इस बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव अभय कुमार, कुलदीप रांका, संदीप वर्मा, प्रमुख सचिव राजेश यादव, गायत्री राठौड़, उद्योग सचिव डॉ. जोगाराम, राजस्थान फाउंडेशन की आयुक्त डॉ. मनीषा अरोड़ा समेत कई अधिकारी मौजूद थे।

मुख्य सचिव सुधांश पंत ने 10 दिसम्बर 2025 को आयोजित होने वाले प्रथम प्रवासी राजस्थानी दिवस की तैयारियों की समीक्षा बैठक ली।

विश्वकर्मा पूजन दिवस मनाया

जयपुर। आश्विन कृष्ण एकादशी को छोटीकाशी में देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा पूजा दिवस भक्तिभाव के साथ मनाया गया। कारीगरों, शिल्पकारों और तकनीकी क्षेत्र से जुड़े सभी लोगों ने अपने औजारों, उपकरणों और कार्यस्थलों की पूजा कर भगवान विश्वकर्मा से उन्नित और समृद्धि की कामना की। भगवान विश्वकर्मा मंदिरों में सुबह अभिषेक कर नवीन पोशाक धारण कराकर फूलों से श्रृंगार किया गया। हवन के बाद महाआरती की गई। आगरा रोड घाट की गुणी स्थित विश्वकर्मा मंदिर में सुबह पंचामृत अभिषेक की मंदिर में पचरंगी ध्वजा चढ़ाई गई। भगवान को नवीन पोशाक धारण कराने के साथ पूजा-अर्चना संपन्न हुई।

आर.ए.एस. अभ्यर्थी की दिव्यांगता एम्स में जांचने के आदेश दिए

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने आरएएस भर्ती-2023 की लिखित परीक्षा में पास अभ्यर्थी की दिव्यांगता जांच के लिए एम्स, जोधपुर को निर्देश दिए हैं। वहीं अदालत ने याचिकाकर्ता को कहा है कि वह जांच के लिए 23 सितंबर को मेडिकल बोर्ड के समक्ष उपस्थित हो।

अदालत ने जांच रिपोर्ट सात अक्टूबर को अदालत में पेश करने को कहा है। जस्टिस मनीष शर्मा की एकलपीठ ने यह आदेश गोबिंद राम व अन्य की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने कि याचिकाकर्ता के पास सक्षम अधिकारी की ओर से जारी दिव्यांगता प्रमाण पत्र और यूनिक आईडी कार्ड भी है। दिव्यांगता प्रमाण पत्र में उसे पचास फीसदी स्थाई दिव्यांग घोषित किया गया है। इसके बावजूद भी आरपीएससी ने उसे यह कहते हुए साक्षात्कार में शामिल नहीं कर रही कि उसकी दिव्यांगता अस्थाई है। आयोग के मेडिकल बोर्ड ने उसे 52 फीसदी दिव्यांग बताते हुए दिव्यांगता की प्रकृति अस्थाई बताई है। याचिका में कहा गया कि उसके दिव्यांगता प्रमाण पत्र और आयोग के मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट में विरोधाभास है। ऐसे में उसकी जांच एम्स, जोधपुर के विशेषज्ञों से कराई जाए और उसे आरएएस के साक्षात्कार में शामिल होने दिए जाए। इस पर आरपीएससी के वकील एमएफ बेग ने कहा कि आयोग में आरएएस भर्ती के साक्षात्कार 24 अक्टूबर तक होना प्रस्तावित है। यदि मेडिकल रिपोर्ट याचिकाकर्ता के पक्ष में आती है तो उसे साक्षात्कार में शामिल किया जा सकता है। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिकाकर्ता का एम्स, जोधपुर से दिव्यांगता जांच कराने के आदेश देते हुए उसकी रिपोर्ट अदालत में पेश करने को कहा है।

प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन पर रही सेवा कार्यों की धूम

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर बुधवार को राजधानी में अनेक आयोजन हुए। स्वेज फार्म, नंदपुरी स्थित सिद्धेश्वर हनुमान मंदिर के प्रांगण में दिव्य शक्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि विधायक गोपाल शर्मा ने यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। साथ ही सेवा पखवाड़ा का शुभारंभ किया। संत अवधेशदास महाराज के सान्निध्य में विधि-विधान से हवन संपन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने हवन, पूजन और सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ में भाग लिया। सभी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सुदीर्घ, स्वस्थ और सुमंगल जीवन के साथ-साथ राष्ट्रहित और जनता की समृद्धि के लिए प्रार्थना की।

यज्ञ की पूर्णाहूति में अवधेशदास महाराज ने विधायक गोपाल शर्मा की उपस्थिति में सभी श्रद्धालुओं को स्वदेशी वस्तुओं को उपयोग करने का संकल्प कराया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की पहल में संत समाज पूरी तरह से राष्ट्रिहत के मोर्चे पर सदैव उनके साथ खड़ा है।विधायक गोपाल शर्मा ने सभी कार्यकर्ताओं और नागरिकों से आग्रह किया कि वे इस सेवा पखवाड़ा को एक अवसर के रूप में लें और समाज के हर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य करें। इस अवसर पर इंदु परमार, राधे-राधे क्लब अध्यक्ष मनोज बंसल, राजेश बंसल, नगर निगम चेयरमैन पवन शर्मा नटराज, पूनम शर्मा, पूर्व चेयरमैन भंवरलाल सैनी, पार्षद रेखा राठौड़ सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। निखिल वर्मा के नेतृत्व में शास्त्री नगर के चमत्कारेश्वर महादेव मंदिर में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसके बाद 521 दीयों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दीर्घायु होने की कामना के लिए महाआरती और प्रसाद वितरण कार्यक्रम हुए। पवन सैनी के नेतृत्व में केक कटिंग और नमो विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें विधायक गोपाल शर्मा ने प्रधानमंत्री के जीवन संघर्ष से प्रेरणा लेने का आव्हान किया।

अनूपगढ़ में धर्मान्तरण के बड़े रैकेट का खुलासा हुआ, 454 हिंदुओं को ईसाई बनाया

पुलिस ने दो जनों को राउंडअप किया, आरोपी के घर से रजिस्टर मिले हैं, जिनमें धर्मांतरण किए हुए लोगों के नाम और अन्य जानकारी मिली है

अनूपगढ़, (निसं)। श्रीगंगानगर में धर्मांतरण के बड़े रैकेट का खुलासा हुआ है। आरोपी ने 11 साल 454 हिंदुओं को ईसाई बनाने की बात कबूल की है। आरोपी ने बताया कि फ्रेंड्स मशीनरी प्रेयर बैंड संगठन उसे हर साल 20 लोगों को कन्वर्ट करने का टारगेट देता था। इसके लिए उसे 9 हजार रुपए महीना और भत्ते दिए जाते थे। मामला अनूपगढ़ थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 14 का है।

एसएचओ ईश्वर जांगिड़ ने बताया कि गांव 24 एपीडी के संदीप (23) ने थाने में धर्म परिवर्तन कराने की शिकायत दर्ज कराई। इसके बाद पुलिस ने आरोपी पौलुस बारजो (47) और आर्यन को राउंडअप किया। आरोपी के घर से रजिस्टर मिले हैं, जिनमें धर्मांतरण किए हुए लोगों के नाम और अन्य जानकारी मिली। पूछताछ में पौलुस बारजो ने 454 हिंदुओं को ईसाई बनाने की बात कबूल की है। पुलिस को दी शिकायत में पीड़ित संदीप ने बताया कि अनूपगढ़ रेलवे स्टेशन के पास बाइक स्पेयर पार्ट्स के दुकान मालिक आर्यन और उसके पिता विनोद मेरे पुराने परिचित है। एक महीने पहले मैं उनकी दुकान पर बाइक का सामान लेने गया था। बातों-बातों में उन्होंने मेरी शादी के बारे में पूछा। मैंने बताया कि मेरी शादी अभी तक नहीं हुई है। आर्यन और उसके पिता विनोद ने मुझे शादी का झांसा देकर संगठन के इंचार्ज पौलुस बारजो से मिलवाया।

संदीप ने कहा कि 20 दिन पहले पौलुस बारजो ने मुझसे कहा कि अगर तुम ईसाई धर्म अपना लेते हो तो प्रभु तुम पर खुश हो जाएंगे और तुम्हारी शादी हो जाएगी। वे मुझे बहलाकर प्रेम नगर की नहर पर ले गए, जहां पानी में डुबकी लगवाकर ईसाई बना दिया। इसके बाद ये तीनों अन्य हिंदुओं को ईसाई धर्म में लाने के लिए मुझे प्रताड़ित करने लगे। जब मैं ज्यादा प्रताड़ित होने लगा तो पुलिस और विश्व हिंदू परिषद सहित कुछ अन्य लोगों को इनके बारे में बताया।

- आरोपी ने बताया कि फ्रेंड्स मशीनरी प्रेयर बैंड संगठन उसे हर साल 20 लोगों को कन्वर्ट करने का टारगेट देता था, इसके लिए उसे 9 हजार रुपए महीना और भत्ते दिए जाते थे
- आरोपी पौलुस बारजो ने बताया कि वह गरीब, असहाय या किसी बीमारी से ग्रसित हिंदू परिवारों से मिलता है और उन्हें कन्वर्ट करने के लिए उनका ब्रेनवॉश करता है
- पौलुस बारजो ने बताया कि वह झारखंड के गांव कटिंगगेल का रहने वाला है, वह 1995 में हिंदू से ईसाई बना था, बड़े भाई ने भी ईसाई धर्म अपनाया है

पौलुस बारजो ने बताया कि वह झारखंड के गांव कटिंगगेल का रहने वाला है। वह 1995 में हिंदू से ईसाई बना था। उसने बताया कि बड़े भाई ने भी ईसाई धर्म अपनाया है। ईसाई बनने के बाद वह 2003 में चेन्नई के एफएमपीबी संगठन से जुड़ा। इसके लिए उसका इंटरव्यू हुआ। संगठन ने उसे ट्रेनिंग के लिए झांसी भेज दिया। एक साल की ट्रेनिंग के बाद उसे सबसे पहले राजस्थान के सीकर जिले में भेजा गया। 2008 में वह अनूपगढ़ आया और 2016 तक रहा। इसके बाद वह अन्य राज्यों में चला गया। 2022 में वह फिर अनूपगढ़ आया। अभी वह विनोद के घर रह रहा था। संगठन ने हर साल 20 लोगों को कन्वर्ट करने का टारगेट दे रखा है। इसके लिए संगठन उसे 9 हजार रुपए महीने सैलरी और भत्ते देता है। किराया, खाना, सत्संग, आने-जाने का खर्च, बच्चों की स्कूल फीस संगठन ही देता है।

पौलुस बारजो ने बताया कि वह गरीब, असहाय या किसी बीमारी से ग्रसित हिंदू परिवारों से मिलता है और उन्हें कन्वर्ट करने के लिए उनका ब्रेनवॉश करता। अब तक उसने 454 लोगों को कन्वर्ट किया है। ये सभी लोग हिंदू थे। यहां पर उसके अलावा श्यामलाल और सुरजीत नाम के दो लोग हैं, जो धर्मांतरण करवाते हैं। टारगेट पूरा करने के लिए तीनों ने अनूपगढ़ और आस-पास के गांवों में सहयोगी छोड़ रखे हैं। जिनका पूर्व में धर्म परिवर्तन करवा चुके हैं। इनमें महिलाएं भी शामिल हैं। संगठन की ओर से दो पीजीएम और 36 जीबी में चर्च बनाया जाना है। जिसके लिए लोगों से सहयोग लिया जा रहा है। चर्च के लिए विनोद कुमार ने साढ़े तीन लाख रुपए दिए हैं। इसके लिए जमीन खरीद चुके हैं।

विश्व हिंदू परिषद के जिलामंत्री कृष्ण राव ने बताया कि पौलुस बारजो अपने सहयोगियों के साथ मिलकर हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करवा रहा है। ये लोग हिंदू धर्म के देवी-देवताओं के लिए निंदनीय शब्दों का प्रयोग करते हैं। विश्व हिंदू परिषद ये बिल्कुल भी सहन नहीं करेगा। संदीप ने हिम्मत दिखाते हुए मामला दर्ज करवाया है। विश्व हिंदू परिषद ने पुलिस और प्रशासन से आरोपियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की है।

बुजुर्ग को हनीट्रैप के जाल में फंसाकर 12.90 लाख ठगे

मास्टरमाइंड युवती और सहयोगी को पुलिस ने गिरफ्तार किया

सीकर, (निसं)। 64 साल के बुजुर्ग को हनीट्रैप के जाल में फंसाकर 12.90 लाख रुपए हड़पने के मामले में मास्टरमाइंड युवती और उसकी सहयोगी को गिरफ्तार किया गया है। मास्टरमाइंड खुद को सोशल मीडिया पर समाजसेवी बताती है। उसके सोशल मीडिया पर हजारों फॉलोअर्स है। गिरफ्तारी के एक दिन पहले रेणुका चौधरी अपने फेसबुक पेज पर लाइव आई थी। फेसबुक पर रेणुका चौधरी काफी एक्टिव रहती। सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल होने के उसके कई फोटो भी फेसबुक पर मौजूद हैं। कई नेताओं के स्वागत करने की पोस्ट भी उसके फेसबुक पेज पर हैं।

धोद थानाधिकारी राकेश कुमार मीणा ने बताया कि मास्टरमाइंड रेणुका चौधरी (30) पुत्री बजरंग लाल निवासी घस्सु का बास और सहयोगी सुबिता (37) पत्नी सुरजाराम जाट निवासी रामपुरा को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया है। पुलिस दोनों को पकड़ने के लिए धोद चौराहे पर गई तो गिरफ्तारी के डर से बचने के लिए मास्टरमाइंड रेणुका चौधरी बार-बार बेहोश होने का नाटक करती रही। कभी चलती-चलती नीचे गिर जाती और चिल्लाने लगती। महिला पुलिसकर्मियों ने बड़ी मशक्कत से उसे जेल भेजा। पीड़िता रामकरण सरकारी नौकरी से रिटायर्ड हैं।

सीकर के धोद पुलिस थाने में 30 अगस्त को बुजुर्ग रामकरण ने मुकदमा दर्ज करवाया था। रिपोर्ट में बताया था कि उसकी फेसबुक पर रेणुका चौधरी नाम की महिला से पहचान हुई थी। रेणुका चौधरी उसे कई बार वीडियो कॉल भी करती थी। अपनी परिचित महिला सुबिता की बेटी की इंस्टाग्राम आईडी से भी उसे मैसेज करवाया। इसके बाद रेणुका चौधरी के कहने पर सुबिता ने अपनी बेटी को रामकरण से मिलने के लिए फॉर्म हाउस पर भी भेजा। कुछ मिनट बाद रेणुका भी अपने साथ कुछ लोगों को लेकर वहां पहुंच गई। उन्होंने रेप केस में फंसाने की धमकी देकर सोने की अंगूठी, चेन और 25 हजार रुपए ले लिए। इसके बाद एक स्टांप पर लिखावट करवाकर रेणुका ने खुद के अकाउंट में 12.90 लाख रुपए ट्रांसफर करवा लिए। मास्टरमाइंड को पता था कि बुजुर्ग के पास काफी पैसा है। ऐसे में बुजुर्ग को अपनी परिचित के जरिए जाल में फंसाया। पूछताछ में रेणुका चौधरी ने बिल्कुल भी सहयोग नहीं किया, लेकिन उसकी सहयोगी सुबिता ने पुलिस को पूरी हकीकत बता दी।

दिनदहाड़े कार सवार बदमाशों ने महिला का किया अपहरण

आरोप है कि अपहरणकर्ताओं में युवती का पिता भी शामिल था

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर के खेरोदा थाना क्षेत्र के भटेवर में बुधवार सुबह दो कारों से आए करीब 8-10 बदमाशों ने एक विवाहित युवती का घर में घुसकर अपहरण कर लिया। आरोप है कि अपहरणकर्ताओं में युवती का पिता भी शामिल था। युवती के अपहरण का विरोध करने पर अपहरणकर्ताओं ने उसके ससुर के साथ मारपीट की और घर में बंद कर फरार हो गए। विवाहिता के पति पवन (25) पिता पन्नालाल जणवा ने थाने में रिपोर्ट दी है। रिपोर्ट में बताया कि वे किसी काम से घर से बाहर गए थे। तभी उनके घर पर लाल और काले रंग की दो कारें अचानक आकर रुकी। उनमें से करीब 10 से 12 युवक उनके घर में घुसे और उसकी पत्नी कोमल के साथ मारपीट करने लगे। पिता को कमरे में कुंदी लगाकर बंद कर दिया। फिर कोमल को जबरन कार में डालकर ले गए।

- बताया जा रहा है कि पिता और परिजन युवती के प्रेम विवाह से नाराज थे, इसी कारण उन्होंने अपहरण की घटना को अंजाम दिया

जानकारी के अनुसार पिता और परिजन युवती के प्रेम विवाह से नाराज थे, इसी कारण उन्होंने अपहरण की घटना को अंजाम दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने जानकारी लेकर विवाहिता की तलाश शुरू कर दी है। युवती के अपहरण की पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई है। बदमाश उसे जबरदस्ती एक कमरे में बंद कर देते हैं। इसके बाद वे महिला को हाथ पांव पकड़कर घसीटते हुए कार तक ले जाते हैं और उसे जबरदस्ती अंदर डालकर फरार हो जाते हैं। बदमाशों ने महज 2-3 मिनट में इस पूरी वारदात को अंजाम दिया। अब पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर बदमाशों की तलाश में जुटी है।

खेरोदा थानाधिकारी सुरेश विश्नोई ने बताया कि भटेवर निवासी कोमल पत्नी पवन के अपहरण की घटना सामने आयी है। कोमल और अपहरणकर्ताओं की तलाश की जा रही है। अपहरण करने में उपयोग हुई एक कार बरामद कर ली गयी है, जबकि दूसरी कार का पीछा कर रहे हैं। पुलिस जल्द ही पीड़िता कोमल को रेस्क्यू कर लेगी। रिपोर्ट पर अपहरण में महिला के पिता को नामजद किया है।

ऑपरेशन पोलो में जोधपुर का योगदान अविस्मरणीय : शेखावत

जोधपुर। तेलंगाना की राजधानी में हैदराबाद मुक्ति दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने मंच से ऐतिहासिक क्षणों का स्मरण कर जोधपुर की वीर परंपरा को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि जोधपुर स्टेट फोर्स के भारतीय सेना में विलय के पश्चात ऑपरेशन पोलो में जोधपुर का योगदान अविस्मरणीय है। उस समय सैनिकों ने जिस अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया था, वही परंपरा आज भी भारतीय सेना द्वारा गर्व के साथ आगे बढ़ाई जा रही है।

- हैदराबाद मुक्ति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने शिरकत की
- 'लेफ्टिनेंट कर्नल धौंकल सिंह की हैदराबाद मुक्ति संग्राम में अहम भूमिका'

अपने उद्बोधन में केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि हैदराबाद मुक्ति संग्राम में जोधपुर स्टेट फोर्स की भूमिका केवल सैन्य सफलता तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने का कार्य किया। यह केवल जोधपुर का ही नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र का गौरव है। ऑपरेशन पोलो के समय नागौर जिले के छोटे से गांव मामडोली का नाम भी गर्व से लिया गया। मामडोली के सपूत लेफ्टिनेंट कर्नल धौंकल सिंह मेड़तिया (राठौड़) ने हैदराबाद मुक्ति संग्राम में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाई थी। मातृभूमि के प्रति उनकी निष्ठा, शौर्य और बलिदान को याद करते हुए उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई। ले. कर्नल मेड़तिया का योगदान इस तथ्य को स्थापित करता है कि भारत के छोटे-छोटे गांवों की माटी ने ऐसे सपूत दिए हैं, जिन्होंने देश की एकता और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। स्टेट फोर्स के परिवारों में आज भी देश की सेनाओं एवं अर्द्ध सैन्य बलों की सेवाओं के प्रति प्रतिभागी बनने का जज्बा आज भी बरकरार है। आज जब डेढ़ सौ करोड़ भारतीय गणतंत्र भारत की संकल्पशक्ति का प्रतीक बनकर खड़े हैं, तब मरुधरा की इस धरती के छोटे से गांव मामडोली को स्वर्ण जड़ित करने वाले इस वीर पुत्र की गाथा नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार दो सगे भाइयों की मौत

हादसे के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया

जयपुर/कालाडेरा। जयपुर ग्रामीण जिले के कालाडेरा थाना इलाके में बुधवार दोपहर को तेज रफ्तार ट्रक की टक्कर से बाइक सवार दो सगे भाइयों की मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों के शवों को मोर्चरी में रखवाया। बताया जा रहा है कि टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। वहीं इस हादसे के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया।

सीओ गोविन्दगढ़ राजेश जांगिड़ ने बताया कि हादसा सोमवार दोपहर डेढ़ बजे कालाडेरा थाना क्षेत्र के दूध डेयरी के पास हुआ था, जहां कालाडेरा थाना क्षेत्र के हस्तेड़ा निवासी दो सगे भाई लालचंद कुमावत (40) और रामेश्वरलाल (45) किसी कार्य से चौमूं की ओर आ रहे थे। इस दौरान तेज रफ्तार ट्रक ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं हादसे के बाद ट्रक ड्राइवर मौके से फरार हो गया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को मोर्चरी में रखवा कर परिजनों को सूचित किया गया। वहीं पुलिस वाहन चालक की तलाश में जुटी है।

पालिका के वरिष्ठ सहायक ने 1.90 लाख रुपये की रिश्वत ली

नगर पालिका राजगढ़ के वरिष्ठ सहायक राकेश धायल को रिश्वत लेते गिरफ्तार किया

झुंझुनूं/जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की झुंझुनूं टीम ने बुधवार को कार्रवाई करते हुए नगर पालिका राजगढ़ जिला चूरू के वरिष्ठ सहायक राकेश धायल को 1.90 लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया गया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी झुंझुनूं को परिवादी ने शिकायत दी कि नगर पालिका राजगढ़ में खाली भूखंड भूमि के कन्वर्जन के लिए पत्रावली जमा करवाई थी। जहां भूमि शाखा प्रभारी और वरिष्ठ सहायक राकेश घायल ने भूमि कन्वर्जन फीस के अलावा तीन लाख रुपये की मांग की। इसके बाद एसीबी ने शिकायत पर गोपनीय रिश्वत मांग सत्यापन के दौरान वरिष्ठ सहायक राकेश धायल ने नक्शा नवीस पवन मुद्गल से मिलीभगत कर परिवादी से 96 हजार 500 रुपये कन्वर्जन फीस एवं एक लाख रुपये की रिश्वत की मांग करना पाया पाया गया। जिस पर ट्रेप की कार्रवाई करते हुए भूमि शाखा प्रभारी और वरिष्ठ सहायक राकेश घायल को रिश्वती राशि ठाहण कर अपनी कार्यालय टेबल पर रखी जहां से 1.90 रुपये रिश्वत बरामद की है।

अंतरराष्ट्रीय सीमा क्षेत्र का डीजीपी ने दौरा किया, पुलिस और बीएसएफ का मनोबल बढ़ा

बाड़मेर, (निसं)। राज्य में बेहतर पुलिसिंग और कानून-व्यवस्था की मजबूती को लेकर राजस्थान पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा जोधपुर संभाग के दौरे पर हैं। इसी क्रम में उन्होंने बाड़मेर जिले के सीमावर्ती गडरा रोड थाना और मुनाबाव सीमा चौकी का दौरा किया। भारत-पाकिस्तान सीमा से महज़ पांच किलोमीटर दूर स्थित गडरा रोड थाने पर पहुंचकर डीजीपी शर्मा ने न केवल थाने का गहन निरीक्षण किया, बल्कि अधिकारियों से कानून-व्यवस्था और क्षेत्र में अपराधों की प्रकृति की जानकारी भी ली। इस दौरान उन्होंने थाने में संधारित अभिलेखों को देखा और पुलिस की कार्यप्रणाली की समीक्षा की। डीजीपी ने सीमा क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था का जायज़ा लेकर पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए। निरीक्षण के बाद पुलिस महानिदेशक ने थाने में तैनात जवानों से आत्मीय संवाद किया। जवानों की समस्याएं व अपेक्षाएं सुनते हुए उन्होंने उनके साथ रात्रिभोज भी किया। पुलिस प्रमुख को अपने बीच पाकर जवान उत्साहित नज़र आए और उन्होंने पूरी निष्ठा व समर्पण भाव से कर्तव्य निर्वहन का संकल्प दोहराया।

पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने पुलिस और बीएसएफ के जवानों से संवाद किया।

गडरारोड थाने के निरीक्षण के पश्चात् डीजीपी शर्मा भारत-पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय सीमा पर मुनाबाव चौकी पहुंचे, जहां उन्होंने बीएसएफ अधिकारियों और जवानों से मुलाकात की। डीजीपी ने सीमा पर तैनात बीएसएफ की गतिविधियों और सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा और अन्य गतिविधियों के बारे में भी ली जानकारी। बीएसएफ के जवानों से संवाद दौरान पुलिस महानिदेशक ने उनके अनुशासन व साहसिक कार्यों की सराहना करते हुए विशेष रूप से ऑपरेशन सिंदूर के दौरान किए गए पराक्रम की प्रशंसा की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राजस्थान पुलिस हमेशा बीएसएफ के सहयोग के लिए तत्पर है। सीमावर्ती क्षेत्र में पुलिस महानिदेशक का यह दौरा न केवल सुरक्षा बलों के मनोबल को बढ़ाने वाला साबित हुआ है, बल्कि इससे पुलिस और बीएसएफ के बीच बेहतर तालमेल को भी मजबूती मिली है।

पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने पुलिस लाइन में पुलिसकर्मियों के कल्याण, उनकी समस्याओं के निस्तारण और पुलिस परिवार के प्रतिभावान बच्चों के सम्मान करते हुए पुलिस परिवार के प्रति संवेदनशीलता दिखाई। डीजीपी शर्मा ने पुलिस लाइन की विभिन्न शाखाओं, क्वार्टर गार्ड, मेस, जिम और आवासीय क्वार्टरों का निरीक्षण किया। उन्होंने साफ-सफाई, व्यवस्था और उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने पुलिसकर्मियों और उनके परिवारों से सीधे संवाद किया। पुलिस परिवार के सदस्यों ने पानी, बिजली और अन्य सुविधाओं से जुड़ी अपनी समस्याओं को डीजीपी के सामने रखा, जिस पर उन्होंने तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए।

डीजीपी शर्मा ने पुलिस परिवार के उन बच्चों को सम्मानित किया जिन्होंने शिक्षा, खेल और कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। पुलिस लाइन में सम्पर्क सभा का आयोजन किया गया, जिसमें पुलिस अधिकारी और जवानों ने अपनी विभिन्न समस्याओं को डीजीपी के सामने रखा। डीजीपी ने सभी समस्याओं को पूरी संवेदनशीलता के साथ ध्यानपूर्वक सुना और जिला तथा रेंज स्तर की समस्याओं के तुरंत निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। अपने दौरे के दौरान डीजीपी ने पुलिस लाइन परिसर में पौधारोपण भी किया और सभी जवानों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने अल्पाहार के दौरान पुलिस जवानों से बातचीत की और समस्याओं को सुना। दौरे के दौरान डीजीपी के साथ महा निरीक्षक पुलिस जोधपुर रेंज राजेश मीना, उप महानिरीक्षक पुलिस, कुंवर राष्ट्रदीप और पुलिस अधीक्षक बाड़मेर नरेंद्र सिंह मीना सहित बाड़मेर के जिले के सभी अति. पुलिस अधीक्षक, वृत्त अधिकारी एवं थानाधिकारी भी उपस्थित थे।

- मुनाबाव बॉर्डर पर बीएसएफ के अधिकारियों और जवानों से डीजीपी रूबरू हुए

रिश्वत लेते पटवारी गिरफ्तार

बाड़मेर/जयपुर। एसीबी की बाड़मेर टीम ने पटवार मंडल नवातला जेतमाल तहसील चौहटन जिला बाड़मेर के पटवारी दिनेश कुमार को परिवादी के पिता के नाम ग्राम स्थित शामलाती खेत में खातेदार (परिवादी के पिता) का नाम अलग दर्ज हैं, जबकि आधार कार्ड एवं अन्य सरकारी दस्तावेजों में नाम सही दर्ज हैं। नाम में उक्त असमानता की वजह से पीएम किसान सम्मान निधि की किस्त वर्ष 2022 से बंद हैं। जिसको राजस्व रिकार्ड में दुरूस्त कर पीएम सम्मान निधि प्रारंभ कराने की एवज में पटवारी को दो हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी बाड़मेर टीम को परिवादी ने शिकायत दी कि उसके पिता का राजस्व रिकॉर्ड में नाम दुरूस्त कर रूकी हुई पीएम सम्मान निधि प्रारंभ कराने की एवज में पटवारी दिनेश कुमार चार हजार रुपये की रिश्वत की मांग कर रहा है।

DIRECTOR WORKS (EO)
Rajasthan University Of Veterinary & Animal Science, Bikaner (Raj.)
क्रमांक : F( )/DW(EO)/RAJUVAS/2025-26/617 - 627 दिनांक :- 16/09/2025
निविदा सूचना संख्या 05 वर्ष 2025-2026
राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की ओर से विश्वविद्यालय में विभिन्न स्थानों पर निर्माण कार्यों के लिए उपयुक्त श्रेणी में, इस विश्वविद्यालय में एवं अन्य विश्वविद्यालयों में, राज्य सरकार एवं राज्य सरकार के अधिकृत संगठनों तथा केन्द्र सरकार व केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों, जो कि राज्य सरकार के उपयुक्त श्रेणी के समकक्ष हो, पंजीकृत संवेदको से ई-टेन्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में ऑनलाईन निविदा प्राप्त की जावेगी। निविदा से सम्बधित विवरण वेब साईट www.dipr.rajasthan.gov.in/tenders.asp, www.rajuvas.org, www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। UBN No.: VAU2526WSOB00065
राज.संवाद/सी/25/10223 सेवानिवृत्त भू-सम्पदा अधिकारी

कार्यालय बीकानेर विकास प्राधिकरण, बीकानेर
Near Collector Office, Bikaner (Rajasthan) Fax :- 91-151-2226012, Phone :-91-151-2226012, 91-151-2226013
E-Mail Address:- uitbikaner@yahoo.co.in Web Site :- urban.rajasthan.gov.in/uitbikaner
क्रमांक - बी.डी.ए./स्टोर/2025-26/5892 दिनांक :- 16/09/2025
ई-बोली सूचना संख्या 14/स्टोर/2025-26
बीकानेर विकास प्राधिकरण, बीकानेर की ओर से अखिल भारतीय स्तर, प्राधिकरण एवं राजकीय विभागों में नियमानुसार पंजीकृत संवदेको से ई-बोली आमन्त्रित की जाती है। इन कार्यों की अनुमानित लागत, बोली डाऊनलॉड एवं अपलोड करने व खोलने की दिनांक एवं बोली शर्तों आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
UBN No.:- ITB2526SLOB00219
राज.संवाद/सी/25/10215 सचिव

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर
टाउनहॉल लिंक रोड, उदयपुर (राज.) 313001
दुरभाष स. 0294-2421255, 2420013, Helpline no.0294-2426262,
Email:- ceoudr.lsg@rajasthan.gov.in electricalumc50@gmail.com Website :- https://udaipurmc.org/
क्रमांक :-ननिउ/ विद्युत/2025-26/609 दिनांक :- 12.09.25
ई-बोली आमन्त्रण सूचना संख्या - ई 07/2025-26
नगर निगम कार्यालय उदयपुर द्वारा विद्युत शाखा से सम्बंधित विभिन्न विकास कार्य जिसकी अनुमानित लागत राशि 18.50 लाख हेतु ई-प्रोक्यूरमेन्ट के माध्यम से ऑनलाईन निविदा दिनांक 22.09.2025 समय सायं 6.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। विस्तृत जानकरी www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।
UBN No. UNP2526WSOB00082 आयुक्त
राज.संवाद/सी/25/10021 नगर निगम, उदयपुर

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर
टाउनहॉल लिंक रोड, उदयपुर (राज.) 313001
दुरभाष स.0294-2421255, 2420013, Helpline no. 0294-2426262 वेबसाइट. www-udaipurmc.org
क्रमांक : निविजा/2025-26/ई -26 दिनांक :- 16.09.2025
(ई-भुगतान) बोली आमन्त्रण सूचना संख्या - ई 26/2025-26
नगर निगम कार्यालय उदयपुर द्वारा विभिन्न विकास कार्यो हेतु कुल राशि रु0 136.32 लाख के कुल 02 कार्यो हेतु इच्छुक निविदादाताओं से निर्धारित निविदा प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया के तहत निविदा आमंत्रित की जाती है निविदा के कार्यो की प्रारम्भ तिथि 17.09.2025 एवं अंतिम तिथि 29.09.2025 तथा निविदा खुलने की तिथी 01.10.2025 रहेगी निविदा से संबंधित अन्य समस्त विवरण इंटरनेट साईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है।
UBN No. UNP2526WSOB00085 अधीक्षण अभियन्ता
राज.संवाद/सी/25/10247 नगर निगम, उदयपुर

कार्यालय अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक करौली (राज.)
केशवपुरा पुलिया मण्डरायल रोड करौली, E-Mail : adpcsmsakarauli@gmail.com
क्रमांक :- एडीपीसी/समग्र शिक्षा/करौली/Civil/2025-26/277 दिनांक :- 12/09/2025
ई-निविदा सूचना संख्या 01 (सिविल)/2025-26
राजकीय विद्यालय/आंगनबाडी में मरम्मत कार्यो हेतु)
राज्य एवं केन्द्र सरकार के राजकीय/अर्द्धशासकीय/स्वायत्तशासी निकायों में सक्षम श्रेणी में मरम्मत कार्यो हेतु पंजीकृत संवेदकों से बजट घोषणा 2025-26, एवं पी.एम.श्री. वर्ष 2024-25 योजनान्तर्गत स्वीकृत 01 राजकीय विद्यालय एवं 40 आंगनबाडियों में मरम्मत कार्यो हेतु राशि रू 60.64 लाख (प्रति कार्य की राशि रूपये 0.98 लाख से 1.97 लाख के मध्य) बाबत् कार्यवार ई-टेण्डरिंग के माध्यम से ई-निविदाऐं 15/09/2025 प्रातः 10.00 बजे से 22/09/2025 को सायं 6.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है।
- निविदा से सम्बधित समस्त विस्तृत विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
- यू.बी.एन. नं RSE2526WSRC00795 अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक
राज.संवाद/सी/25/10056 समग्र शिक्षा, करौली

THE RAJASTHAN SMALL INDUSTRIES CORPORATION LTD.
A Govt. of Rajasthan Undertaking, CIN:- U91110RJ1961SGC001118
CORRIGENDUM
NIB Number : 13/2025-26 (UBN : RSI2526SLOB00013)
Bids are invited for the Procurement of Services of Strategic Business Promoter to Equip, Operate, Manage & Transfer Business Services at ICD, Bhilwara from the eligible and experienced bidders. As per suggestions received in Pre-Bid meeting held on 30.07.2025, some clarifications have been amended in bid document. Therefore, the bid submission date has been extended till 5.00 PM on 03.10.2025.
The Bid will be opened on 06.10.2025 at 11:00am.
Due to technical error in the uploading revised date corrigendum on **sppp.rajasthan.gov.in** portal. SPPP portal will show old dates of submission and opening. Bidder are requested to ignore it the dates of SPPP shown. Last date of submission will be treated as per revised date corrigendum uploaded on eproc.rajasthan.gov.in. Bidder can now submit their bids as per revised dates mentioned in this corrigendum. Other particulars of the bid may be viewed on the procurement portal **(https://eproc.rajasthan.gov.in)** of the state and the official website of RSIC i.e. **https://www.industries.rajasthan.gov.in/rajsico**
The approximate value of the procurement is INR Rs. 3.50 Crores
Raj.Samwad/C/25/10237 **Managing Director**

बीकानेर नगर निगम
नगर निगम मार्ग, बीकानेर (राजस्थान) फैक्स नं :- 0151-2226906, फोन नं:- 0151-2226902, 2226905,
Email Address :- bikanernagarnigam@gmail.com, Website :-www.bikanermc.org
क्रमाक/भण्डार/2025-26/15768 दिनांक 15.09.2025
(ई-निविदा सूचना सं. 01/2025-26)
बीकानेर नगर निगम को आगामी 02 वर्ष के लिए अस्थाई टैन्ट व्यवस्था हेतु सामग्री आपूर्ति कार्य की अनुमानित लागत राशि रूपये 1.00 करोड़ हेतु इच्छुक सम्भरणकर्ता कार्य करने/सामग्री संभरण करने के लिए अधिकृत एवं अनुभवी हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा कार्य से सम्बन्धित सम्पूर्ण विवरण एवं तिथि राज्य सरकार की ई-प्रोक्योरमेटपोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.govt.in तथा नगर निगम बीकानेर की वेबसाईट www.bikanermc.org पर देखी व डाऊनलोड की जा सकती है तथा निर्धारित अवधि तक प्राक्योरमेंट पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in पर अपलोड की जा सकती है।
1. UBN Code :- DLB2526SLOB18342 आयुक्त
राज.संवाद/सी/25/10253 नगर निगम, बीकानेर

जयपुर में फर्जी कॉल सेंटर का भंड़ाफोड, 4 आरोपी गिरफ्तार

मानसरोवर थाना पुलिस ने साइबर ठग गिरोह के ठिकाने पर दबिश दी

जयपुर (कासं)। मानसरोवर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए फर्जी कॉल सेंटर के जरिए म्यूल अकाउंट में साइबर ठगी करने वाले गिरोह के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए चार आरोपितों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपितों में नागौर की बीआर मिर्धा कॉलेज का पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष सुरेंद्र दौतड़ भी शामिल है। इस कार्रवाई के दौरान पुलिस ने एक डेस्कटॉप, पांच लैपटॉप, 9 मोबाइल, 13 सिम कार्ड, एक पावर बैंक, पांच पेमेंट स्कैनर, दो वाई-फाई कैमरा, तीन चेक बुक, एक पासबुक, 13 एटीएम कार्ड, तीन ऑफिस मोहर, 6600 रुपए नकद और 300 नेपाली मुद्रा जब्त की है। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है।

आरोपी सुरेन्द्र दौतड़, चन्द्रशेखर, रितेश जांगिड़ और महेश स्वामी

पुलिस उपायुक्त जयपुर (दक्षिण) राजर्षि राज वर्मा ने बताया कि ऑपरेशन साइबर शील्ड के तहत मानसरोवर थाना इलाके में कार्रवाई की गई। जहां आतिश मार्केट में फर्जी कॉल सेंटर छापेमारी करते हुए सुरेन्द्र दौतड(31) निवासी नागौर मानसरोवर जयपुर, चन्द्रशेखर (25) निवासी लाखेरी जिला बूंदी हाल शिप्रापथ जयपुर, रितेश जांगिड़ (27) निवासी चूरू और महेश स्वामी(23) निवासी चुरू को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपित सुरेंद्र दौतड नागौर की बीआर मिर्धा कॉलेज का छात्रसंघ अध्यक्ष रह चुका है। इस गिरोह के खिलाफ साइबर क्राइम पोर्टल पर उत्तर प्रदेश, तेलंगाना और ओडिशा में भी शिकायत दर्ज है। ये ऑनलाइन गेमिंग और जुआ-सट्टा के बहाने साइबर ठगी की वारदातों को अंजाम देते थे।

- **आरोपितों में नागौर की बी.आर. मिर्धा कॉलेज का पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष सुरेंद्र भी शामिल**

ऑनलाइन ट्रेडिंग में मुनाफे का झांसा देकर 81.75 लाख रुपये की ठगी

जयपुर । राजधानी जयपुर के सांगानेर थाना इलाके में ऑनलाइन ट्रेडिंग एप के जरिए बड़े मुनाफा का झांसा देकर 81.75 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। इस संबंध में पीड़ित ने थाने में मुकदमा दर्ज करवाया है।

सांगानेर सदर थानाधिकारी अनिल कुमार ने बताया कि पीड़ित रणजीत सिंह निवासी वाटिका रोड ने मामला दर्ज करवाया था कि वह जीनस कंपनी में डिप्टी मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। उसके वॉट्सऐप पर एक मैसेज आया, जिस पर क्लिक करने पर वह एक ऑनलाइन ट्रेडिंग एप के ग्रुप के साथ जुड़ गया। इसके बाद ग्रुप में आए एक लिंक पर क्लिक कर ट्रेडिंग एप इंस्टॉल करवाई गई। आरोपियों ने ऑनलाइन ट्रेडिंग एप डाउनलोड कर पैसा कमाने की नई-नई तरकीब बताई। वह आरोपियों के झांसे में आकर उनके बताए अनुसार रकम जमा करवाता रहा। इसके बाद पीड़ित उनके कहे अनुसार बैंक खातों में 81.75 लाख रुपए जमा करवाए। इसके बाद रकम वापस मांगने पर फोन उठाना बंद कर दिय। व्हाट्सएप पर उसका नंबर ब्लॉक कर उसे ग्रुप से भी हटा दिया।

फैक्ट्रियों से कपड़ा चुराने वाली गैंग के तीन बदमाश गिरफ्तार

आरोपियों के कब्जे से चुराया हुआ लाखों रुपए का कपड़ा और वारदात में प्रयुक्त कार जब्त

जयपुर (कासं)। मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए फैक्ट्रियों से कपड़ा चोरी करने वाली गैंग के तीन शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया गया हैं।

पुलिस ने बदमाशों से चोरी किया गया लाखों रुपए का कपड़ा और वारदात में प्रयोग ली गई एक कार भी बरामद की है। पुलिस जांच में सामने आया कि गिरफ्तार बदमाशों के खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। जिसमें वह जेल जा चुके हैं। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (दक्षिण) राजर्षि राज वर्मा ने बताया कि मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए फैक्ट्रियों से कपड़ा चोरी करने वाली गैंग के शातिर बदमाश राजू दास निवासी डिग्गी नुक्कड जिला टोक हाल मुहाना, निर्मल सिह उर्फ कान्हा निवासी निवाई जिला टोंक हाल मुहाना जयपुर और महेंद्र मीना निवासी फागी जयपुर ग्रामीण हाल मुहाना जयपुर को गिरफ्तार किया गया है। थानाधिकारी गुर भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि पांच सितंबर को पीड़ित मुकेश चौधरी ने मामला दर्ज करवाया था कि उसकी फैक्ट्री डिग्गी मालपुरा रोड पर है। जहां फैक्ट्री में तीन बदमाश टवेरा कार लेकर आए और कपड़ा चोरी कर ले गए। पुलिस टीम ने मुहाना इलाके में फैक्ट्रियों में कपड़ा चोरी की सभी वारदातों के फुटेज देखना शुरू किया। पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर तीनों बदमाशों को गिरफ्तार किया।

मुहाना थाना पुलिस ने फैक्ट्रियों से कपड़ा चोरी करने वाली गैंग के तीन शातिर बदमाशों को गिरफ्तार कर सामान जब्त किया।

50 लाख रुपये ठगने वाला गिरफ्तार

जयपुर (कासं)। श्याम नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए शातिर साइबर अपराधी को गिरफ्तार किया हैं। जिसके खिलाफ जयपुर शहर में लगभग 80 से 85 साइबर रिपोर्ट दर्ज हैं। जो समाचार पत्रों में प्रॉपर्टी खरीद-फरोख्त संबंधी विज्ञापनों से मोबाइल नंबर लेकर बात करता और प्रॉपर्टी किराए पर लेने या खरीद-फरोख्त के बदले रकम अपने खाते में जमा करवाता और इसके बाद अपना मोबाइल बंद कर देता। उसने अब तक करीब 50 लाख रुपए की ठगी की वारदात कबूल की है। वह ऑनलाइन सट्टा खेलने का आदी है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण राजर्षि राज ने बताया कि श्याम नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए शातिर साइबर अपराधी परमिन्दर सिंह उर्फ सन्नी निवासी भरतपुर हाल करधनी हाल रामनगरिया जयपुर को गिरफ्तार किया हैं। आरोपित ऑनलाइन सट्टा खेलने का आदि है साइबर ठगी से आया हुआ पैसा सीधा ही आरोपित सटोरियों के खातों में जमा करवा दिया करता था। आरोपित जयपुर शहर में फ्लैट, दुकान, मॉल किराये पर दिलाने के नाम पर भी लोगों के साथ साइबर ठगी किया करता था। उसके खिलाफ जयपुर के अलावा दिल्ली, मुंबई सहित अन्य शहरों में ठगी के 80 से ज्यादा मुकदमे दर्ज हैं। थानाधिकारी दलबीर सिंह ने बताया कि 2 अप्रैल को परिवादी विनायक कुमार जोशी ने मामला दर्ज करवाया था कि उसके फ्लैट संख्या 512 गोल्डन, लिफ, टॉक रोड को किराये पर देने के लिए 15-16 फरवरी 2025 को एक पेपर में विज्ञापन दिया था। 16 को एक फोन आया जिस ने खुद को कंवर पाल सिंह बताया और फ्लैट का वीडियो बनाकर अपने व्हाट्सएप मोबाइल पर मंगवाया। आरोपी ने 19 फरवरी को सुबह कॉल आया और कहा कि आपका फ्लैट एक कस्टमर जिनका नाम आशुतोष अग्रवाल है उसे पसंद आया है, आशुतोष अग्रवाल एक्सिस बैंक में असिस्टेंट वाइस प्रेसिडेंट के पद पर कार्यरत है। इनका स्थानांतरण अहमदाबाद से जयपुर एक्सिस बैंक की मैन ब्रांच सी स्कीम जयपुर में हुआ है। कंवर पाल ने खुद को रेंट ब्रोकर बताया और कहा कि लीज एग्रीमेंट सीधे बैंक से 3 वर्ष के लिए होगा, जिसका किराया 33 हजार मासिक के हिसाब से 3 साल की लीज एग्रीमेंट पर स्टाम्प ड्यूटी 36 हजार रुपये बताई क्योंकि एग्रीमेन्ट की दो प्रतियां तैयार करवायी जायेगी। जिसके बाद पीड़ित ने 36 हजार और 17 हजार 668 के दो अकाउंट आरोपी के खाते में जमा करवा दिये । उसके बाद से आरोपी ने मोबाइल बंद कर लिया था। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपित को चिन्हित करते हुए पकड़ा है।

- **फ्लैट-दुकान और मॉल किराये पर दिलाने के नाम पर करता था ठगी**

विराजपुरा में महाविद्यालय के लिए मुख्यमंत्री को सौंपा ज्ञापन

जयपुर (कासं)। श्री हरियाणा गौड़ विद्यालय समिति ने ग्राम विराजपुरा (तहसील बस्सी, जिला जयपुर) में महाविद्यालय की स्थापना हेतु भूमि आवंटन की मांग को लेकर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को ज्ञापन सौंपा।

समिति ने खसरा संख्या 44, रकबा 16.50 हेक्टेयर भूमि में से 10 हजार वर्ग मीटर भूमि महाविद्यालय के लिए शीघ्र आवंटित करने का अनुरोध किया है। प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि क्षेत्र के युवाओं को उच्च शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इस मांग पर प्राथमिकता से विचार किया जाए। ज्ञापन सौंपने के अवसर पर समिति अध्यक्ष राजेंद्र, पूर्व अध्यक्ष जगदीश बंदावला, रमेश कामरेड, महामंत्री भागचंद, गिरधारी, घनश्याम, सुनील टीलवाला, राजेश भाजूपुरा सहित समाज के अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। समिति पदाधिकारियों ने इस प्रयास को सफल बनाने के लिए समाज के सभी बंधुओं से सहयोग की अपील भी की

सार-समाचार

अपना घर आश्रम में मनाया पीएम का जन्मदिन

जयपुर । मानव सेवा ट्रस्ट राजस्थान एवं ऑल इंडिया वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में अपना घर आश्रम, जामडोली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि परिवहन मंत्रालय की राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा परिषद के सदस्य डॉ. निर्मल जैन रहे, जिन्होंने अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व, राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान तथा जनकल्याणकारी योजनाओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि मोदी का जीवन समाज सेवा, समर्पण और राष्ट्रप्रेम का प्रेरणादायक उदाहरण है। स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर के वरिष्ठ आचार्य, सदस्य तथा ट्रस्ट मीडिया प्रभारी प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना ने जानकारी दी कि आश्रम की लगभग 211 माताओं के साथ केक काटकर जन्मदिन मनाया एवं उनको भोजन कराया गया । कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की मंगलकामनाएँ कीं। इस अवसर पर नवनीत जैन, कविता मीना, कौशल सत्यार्थी, रितु जैन, पृथ्वी, रामेश्वर, कमल सहित अन्य गणमान्य नागरिक, स्वयंसेवक तथा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

'कार्यकर्ता का सम्मान ही पार्टी का सम्मान'

जयपुर । राज्य में इसी साल होने वाले निकाय और पंचायत चुनावों में भाजपा ऐतिहासिक सीटें लेकर नया रिकार्ड कायम करेगी। यह बात भाजपा राष्ट्रीय महासम्पर्क अभियान के प्रदेश सह संयोजक अंबिका प्रकाश पाठक ने कही। पाठक बुधवार से शुरू हो रहे पार्टी के महासम्पर्क अभियान के शुभारंभ मौके पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 14 करोड लोगों के साथ भाजपा विश्व की सबसे बडी पार्टी है और सिर्फ भाजपा में ही रीत है कि यहां कार्यकर्ता के सम्मान को ही पार्टी का सम्मान माना जाता है। सिर्फ भाजपा की ऐसी पार्टी है जो एक कार्यकर्ता को राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष या मुख्यमंत्री बना सकती है अन्य दलों में तो भाई भतीजावाद है। राज्य में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में आने वाले चुनावों में जीत का नया इतिहास रचा जाएगा। राजधानी के श्री रामरामेश्वर मंदिर, हाई कोर्ट कॉलोनी, गांधी नगर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान एक दर्जन मकानों में जाकर महासम्पर्क अभियान की शुरूआत की गई साथ ही हर घर के एक सदस्य को भाजपा की सदस्यता दिलाने की पहल भी की गई। इस दौरान एक दर्जन से अधिक लोगों को पार्टी का दुपट्टा ओढाकर पार्टी की सदस्यता भी दिलाई गई। इस मौके पर रामजानकी गुप्ता,शेलेन्द्र शर्मा, महेश कुमार शर्मा, जगदीश प्रसाद शर्मा, रामविलास लखेरा, जगदीश प्रजापत, मोहनलाल गुप्ता, गिर्राज प्रजापत, रामसहाय तेली, गंगासहाय छीपा, हीरालाल, जगतबहादुर, मुनीम सिंह रावत, प्रेमलता, सोहनी बाई, शिबूसिंह, रईस खान, वीरेन्द्र लखेरा, बलबीर सिंह, राजू सिंह, मधु शर्मा, राजेश कुमार शर्मा, करणीदान, सुदर्शन त्रिपाठी, रमेश पाराशर, सचिन सेन, रामशकल व सुमन सहित भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मदन राठौड़ ने शुरू किया सेवा पखवाड़ा

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी ने बुधवार को प्रदेशभर में सेवा पखवाड़े की शुरुआत की। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने जयपुर में हवामहल के बाहर स्वच्छता अभियान चलाकर इसकी शुरुआत की। उन्होंने आमजन को स्वच्छता की शपथ दिलाई और चाय बनाकर कार्यकर्ताओं को पिलाई। इस दौरान उन्होंने अंबेडकर सर्किल पहुंचकर बाबा साहब की प्रतिमा की सफाई कर माल्यार्पण किया।

हरिभाऊ बागडे से तेलंगाना के राज्यपाल की शिष्टाचार भेंट

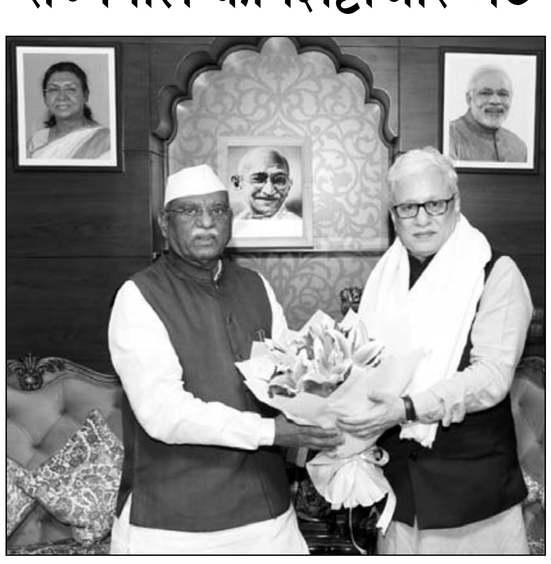

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे से राजभवन में बुधवार को तेलंगाना के राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने मुलाकात की। राज्यपाल से उनकी यह शिष्टाचार भेंट थी।

जेडीए के शहरी सेवा शिविर में उमड़ी भीड़

जयपुर। जयपुर विकास आयुक्त आनंदी ने बताया कि बुधवार से शहरी सेवा शिविर शुरू हो गए हैं। जेडीए प्रशासन 17 अक्टूबर तक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में तथा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देश पर "सेवा पखवाड़ा" मनायेगा। बुधवार को जेडीए के नागरिक सेवा केंद्र में आयोजित शिविर में भारी जन सैलाब आया, जिन्होंने आवेदन कर जेडीए की सेवाओं का लाभ उठाया। जेडीए कमिश्नर आनंदी ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हौसला अफजाई करते हुए शहरी सेवा शिविर का शुभारम्भ किया। उन्होंने कहा कि प्राप्त आवेदनों का निस्तारण आज ही किया जाये। शिविर में अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा प्राप्त आवेदनों का आज ही निस्तारण किया गया, जिससे अधिक संख्या में आमजन लाभान्वित हुए। जेडीसी ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में इन शिविरों के माध्यम से अंतिम व्यक्ति तक राहत पहुँचाई जा रही है।

जयपुर डिस्कॉम ने बकाया 25 करोड़ रु. वसूल किए

जयपुर । जयपुर विद्युत वितरण निगम ने 18 हजार से अधिक लंबित मामलों का निस्तारण करने तथा इन प्रकरणों में उपभोक्ताओं पर बकाया चल रही राशि में से करीब 25 करोड़ रूपए वसूलने में सफलता हासिल की है।

बीते दिनों राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से इन प्रकरणों का उपभोक्ताओं की सहमति के आधार पर निस्तारण किया गया। जिसके बदले उपभोक्ताओं ने डिस्कॉम को मौके पर ही तुरंत 20 करोड़ 71 लाख रूपए जमा करा दिए। वहीं 4 करोड़ 31 लाख रूपए की राशि आगामी दिनों में जमा कराने की सहमति दी है। इस प्रकार जयपुर डिस्कॉम को बकाया 25 करोड़ 2 लाख रूपए वसूलने तथा इन विवादों को शीघ्र निपटाने में सफलता मिली है।

डिस्कॉम के सभी तीन जोन में से बिजली चोरी, पीडीसी कनेक्शन, बिजली बिल राशि आदि से संबंधित सर्वाधिक बकाया मामले भरतपुर जोन में निस्तारित किए गए। इस जोन के करौली सर्किल में 2814 उपभोक्ताओं ने मौके पर ही 5.27 करोड़ रूपए, धौलपुर सर्किल में 2109 उपभोक्ताओं ने 3.19 करोड रूपए, सवाई माधोपुर सर्किल में 2055 उपभोक्ताओं ने 2.27 करोड़ रूपए, डीग में 1539 उपभोक्ताओं ने 2.35 करोड़ तथा भरतपुर सर्किल में 1683 उपभोक्ताओं ने 1.25 करोड़ रूपए जमा कराए। यहां कुल 95 हजार उपभोक्ताओं को लोक अदालत के सम्मुख प्रस्तुत होने के नोटिस भेजे गए थे जिनमें से 11 हजार 735 उपभोक्ता प्रस्तुत हुए और 10 हजार 200 प्रकरणों का राजीनामे के आधार पर निस्तारण किया गया और मौके पर ही 14 करोड़ 34 लाख रूपए निगम को प्राप्त हुए। वहीं जयपुर जोन के 9 सर्किलों में कुल 2 करोड़ 92 लाख रूपए तथा कोटा जोन के 4 सर्किलों में 3 करोड़ 45 लाख रूपए की मौके पर ही समझाइश के माध्यम से प्रकरण समाप्त कर वसूली की गई। उल्लेखनीय है कि कटे कनेक्शन के बकाया, बिजली बिल में त्रुटि, बिजली चोरी आदि के लंबित प्रकरणों का लोक अदालत के माध्यम से मौके पर ही समझाइश के आधार पर निस्तारण किया जाता है। जयपुर डिस्कॉम के सभी 18 सर्किलों ने ऐसे लंबित मामलों में राजीनामे के आधार पर निस्तारण करने के लिए 2 लाख 30 हजार 227 प्रकरणों में उपभोक्ताओं को नोटिस जारी किए थे।

- **आपसी समझाइश से सुलझे 18 हजार से अधिक प्रकरण**
- **विभाग ने 2 लाख 30 हजार प्रकरणों में जारी किए थे नोटिस**

सांस्कृतिक सृजन पखवाड़ा शुरू

जयपुर । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में जवाहर कला केन्द्र में बुधवार से सांस्कृतिक सृजन पखवाड़े की शुरुआत हुई। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कार्यक्रम में भाग लिया और प्रधानमंत्री को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम का आयोजन कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा राजस्थान ललित कला अकादमी और जेकेके के सहयोग से किया जा रहा है, जो 2 अक्टूबर तक चलेगा। उपमुख्यमंत्री ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी के जीवन यात्रा पर आधारित चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का जीवन प्रेरणादायक है और आज देशभर में सेवा पखवाड़ा मनाकर उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है। भारतीय संस्कृति की विविधता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विरासत पूरी दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र है, और यही हमारी सबसे बड़ी ताकत भी है।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर जवाहर कला केन्द्र में पौधा लगाया।

जयपुर में हुआ लगभग 5500 यूनिट रक्तदान

जयपुर । गुलाबी नगरी में रक्तदान-महादान की मुहिम में लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् (अभातेयुप) की ओर से बुधवार को भव्य रूप से रक्तदान अमृत महोत्सव 2.0 का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस और परिषद के 61वें स्थापना दिवस पर आयोजित हुए इस रक्तदान अभियान का सुबह 7 बजे से आरम्भ हुआ। शहर भर में आयोजित हुए 126 शिविर की शुरुआत आगरा रोड स्थित हेवन गार्डन से हुई, जिसके बाद अन्य सेंटर्स पर भी लोगों का हुजूम लगता दिखा। इसी के साथ सीतापुर स्थित लोढ़ा इमपेक्स के सेंटर पर भी मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का सेंटर स्थापित किया गया। इस दौरान जयपुर क्षेत्र में करीब 5500 यूनिट रक्तदान हुआ। जहां सभी रक्तदाताओं और आयोजकों का हौसला बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, सांसद मंजु शर्मा, विधायक कैलाश वर्मा, उप महापौर ग्रेटर नगर निगम पुनीत कर्णावत, पूर्व मेयर ज्योति खंडेलवाल ने शिरकत की। इस दौरान रक्तदान कर रहे सभी लोगों से आत्मीय मुलाक़ात की और रक्तदान का महत्व समझाया।

वहीं विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75वें जन्म दिवस पर बधाई दी हैं। देवनानी ने कहा कि सामाजिक जीवन में पाँच दशक से अधिक समय से देशवासियों के कल्याण हेतु बिना रुके, बिना थके अनवरत कार्य करने वाले मोदी हर एक देशवासी के लिए 'राष्ट्र प्रथम' की जीवंत प्रेरणा हैं।

बैंक खाते किराए पर लेने वाला पुलिस के हत्थे चढ़ा

गिरफ्तार आरोपी यशवंत और जब्त सामग्री

जयपुर । शिप्रा पथ पुलिस ने कार्रवाई करते हुए स्टूडेंट्स को रुपए का लालच देकर उनके बैंक खाते साइबर अपराधियों को मुहैया करवाने वाले आरोपित को गिरफ्तार किया है। जिसके पास से पुलिस टीम ने 4.50 लाख, 1 लैपटॉप, 3 मोबाइल फोन, 23 सिम कार्ड 1 चेक बुक 1 पास बुक 27 एटीएम कार्ड बरामद किये। फिलहाल पुलिस आरोपित से पूछताछ करने में जुटी है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (दक्षिण) राजर्षि राज वर्मा ने बताया कि स्टूडेंट्स को रुपए का लालच देकर उनके बैंक खाते साइबर अपराधियों को मुहैया करवाने वाले आरोपित यशवंत सिंह निवासी अंता जिला बारां हाल मानसरोवर जयपुर को गिरफ्तार किया। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपित पढाई करने वाले बच्चों को पैसों का लालच देकर उनके खाते किराये पर लेकर साइबर पोर्टल 1930 पर होने वाली शिकायतों में राशि को होल्ड से बचाने के लिये साइबर फ्रॉड की राशि को अलग अलग खातों में ट्रांसफर कर पैसे निकलवाने का काम कमीशन के आधार पर करता था। इस राशि को आरोपी एटीएम से निकाल लिया करता था। पुलिस की गठित टीम ने साइबर शिल्ड के तहत कार्यवाही करते हुए प्रतिबिम्ब पोर्टल से प्राप्त साइबर शिकायत व मोबाईल नम्बरों के आधार एक एफआईआर दर्ज कर नंबर की लोकेशन के आधार पर दबिश देकर साइबर अपराधी यशवंत सिंह को पकड़ा है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

- **स्टूडेंट्स को रुपए का लालच देकर उनके बैंक खाते साइबर अपराधियों को मुहैया कराता था**

"स्वस्थ नारी-सशक्त परिवार" कार्यक्रम में ऑनलाइन शरीक हुए राज्यपाल बागड़े

जयपुर । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को 8वें पोषण माह के साथ "स्वस्थ नारी-सशक्त परिवार" अभियान का शुभारंभ किया। राज्यपाल

हरिभाऊ बागडे ने राजभवन से इस अभियान में ऑनलाइन भाग लिया। उन्होंने बाद में कहा कि भारत भर में महिलाओं, किशोरियों और बच्चों के लिए स्वास्थ्य सेवा और पोषण सेवाओं को मजबूत करने की दिशा में यह ऐतिहासिक कदम है। राज्यपाल बागडे ने कहा कि देश में महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के इस राष्ट्रव्यापी सघन अभियान से महिलाओं के स्वास्थ्य की प्रारंभिक पहचान, रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया जा सकेगा। यह अभियान बेहतर पोषण और स्वस्थ जीवनशैली के लिए जागरूकता की दिशा में भी बेहद महत्वपूर्ण है।

Celebrating World Bamboo Day: Nature's Green Gold

Observed every year on September 18, World Bamboo Day highlights the ecological, economic, and cultural significance of bamboo. Known as the 'green gold,' bamboo is one of the fastest-growing plants in the world and plays a crucial role in sustainable development. In India, where bamboo is deeply woven into rural livelihoods, crafts, and construction, the day serves as a reminder of its potential in reducing carbon footprints, creating green jobs, and supporting local economies. Celebrations include awareness drives, exhibitions, and workshops to encourage greater use of bamboo as an eco-friendly alternative to plastic and wood.

#BENEFITS

USE OF CARBON DIOXIDE

Carbon dioxide is commonly used as a raw material for production of various chemicals; as a working material in fire extinguishing systems; for carbonation of soft drinks; for freezing of food products

Rutgers scientists have developed catalysts that can convert carbon dioxide, the main cause of global warming, into plastics, fabrics, resins and other products. The electrocatalysts are the first materials, aside from enzymes, that can turn carbon dioxide and water into carbon building blocks containing one, two, three or four carbon atoms with more than 99 per cent efficiency. Two of the products created by the researchers, methylglyoxal (C3) and 2,3-furandiol (C4), can be used as precursors for plastics, adhesives and pharmaceuticals. Toxic formaldehyde could be replaced by methylglyoxal, which is safer.

The discovery, based on the chemistry of artificial photosynthesis, is detailed in the journal Energy & Environmental Science.

"Our breakthrough could lead to the conversion of carbon dioxide into valuable products and raw materials in the chemical and pharmaceutical industries," said study senior author Charles Dismukes, Distinguished Professor in the Department of Chemistry and Chemical Biology and Department of Biochemistry and Microbiology at Rutgers University-New Brunswick. He is also a principal investigator at Rutgers' Waksman Institute of Microbiology. Previously, scientists showed that carbon dioxide can be electrochemically converted into methanol, ethanol, methane and ethylene with relatively high yields. But such production is inefficient and too costly to be commercially feasible, according to

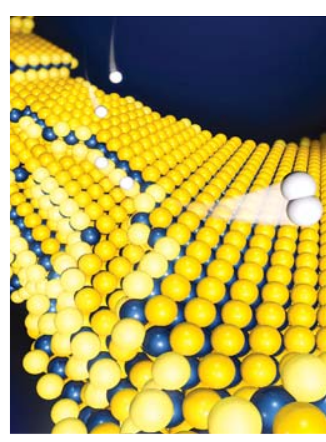

study lead author Karin Calvinho, a chemistry doctoral student in Rutgers' School of Graduate Studies.

However, carbon dioxide and water can be electrochemically converted into a wide array of carbon-based products, using five catalysts made of nickel and phosphorus, which are cheap and abundant, she said. The choice of catalyst and other conditions determine how many carbon atoms can be stitched together to make molecules or even generate longer polymers. In general, the longer the carbon chain, the more valuable the product is.

Based on their research, the Rutgers scientists earned patents for the electrocatalysts and formed RenewCO2, a start-up company. The next step is to learn more about the underlying chemical reaction, so that it can be used to produce other valuable products such as diols, which are widely used in the polymer industry, or hydrocarbons that can be used as renewable fuels. The Rutgers experts are designing, building and testing electrolyzers for commercial use.

Rajputs Did Not Take To The Gun Easily

PART: 1

Badayuni, present at the battle, makes no mention of them on either side but one of the Rana's elephants was injured by a bullet. The Rajputs are often said to have fully adopted Mughal culture by the late sixteenth century but their attitude to guns and cannon certainly differed from that of the Mughals. For centuries, Hindu kingly tradition had extolled the importance of becoming a chakravartin, a great ruler dominating by force of arms neighbouring lesser kings. It was unthinkable by Rajput warriors that this status could be achieved using gunpowder weapons. The Rajputs never lost their virile belief that war was a matter of individual combat for personal glory. They largely ignored other societies' tactical development of firearms, which diminished the individual's ability to show his skill with edged weapons and his courage.

'A Leviathan Attacks Hamza and His Men' painting.

A Rajput blunderbuss made for a chaukidar.

Anjali Sharma
Senior Journalist & Wildlife Enthusiast

Even small numbers of matchlocks gave great military advantage in regional warfare in Asia in the early sixteenth century. Much is made of the consequences for firearms development due to the Portuguese arrival in India and further east but the role of the Turks in the development of firearms in this vast region is scarcely mentioned, though they too in the same period became an Indian Ocean power with particular interests in pilgrim traffic, the spice trade and jihad. Ayalon's first recorded use of a handgun (as opposed to a cannon) in Egypt is 1490. In the Indian Ocean, the Mamluks looked to the Turks for cannon and guns with which to fight jihad against the Portuguese.

Alliances made by the Turks explain why some places between India and China have Ottoman-style gun locks and others Portuguese. These two styles of gun replaced such gun design influence as the Chinese had disseminated in the East, though archaic firearms continued in use among the poorest people into the early twentieth century. In 2004, the arms historian Iqtidar Alam Khan wrote: 'Contemporary evidence can be cited to prove the wide use of a

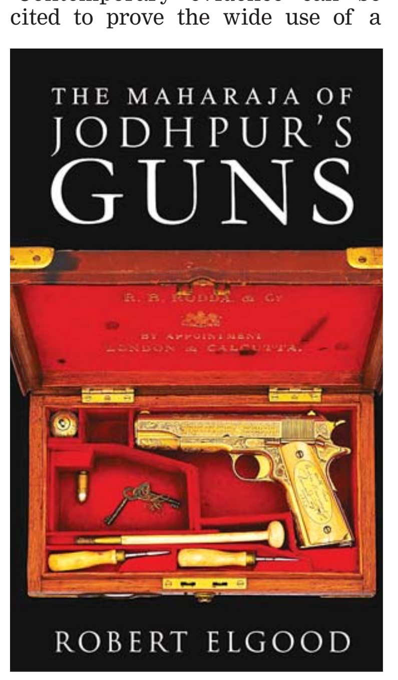

Babur's army in battle with Rana Sanga at Khanwa.

primitive type of gunpowder-based artillery in the whole of India as early as the middle of the fifteenth century. But similar evidence for the handguns is not strong.'

The matchlock mechanism used in India until the twentieth century was first created in Nuremberg in the fifteenth century and copied by the Turks. After the Persian defeat at Chaldiran in 1514, the Persians captured and copied Turkish guns. Ottoman gunstocks closely copied late fifteenth-century European guns, depicted in the Codex Monacensis of c.1500. Apart from stock similarities, the chamber end of Indian barrels is invariably marked on the exterior by a raised band or astragal, an early Ottoman detail, intended to reinforce the chamber, which was made of thicker metal than the rest of the barrel. The comb back-sight with a sighting notch or hole also derived from Ottoman barrels as is the decoration of some muzzles. These sights offered the shooter's right eye some slight protection from exploding barrels. The Mughal emperors appear to have either had access to European guns or copied European designs from at least Humayun's reign (1530-40 and 1555-6) because his Memoirs describe him owning a double-barrelled gun in 1539.

The historian Saxena suggests that cannon and matchlocks were adopted in Rajasthan following the battle of Khanua in 1527. Until the Rajputs established trusted relations with the Mughals, it is hard to guess where they might have

#THE INDIAN MATCHLOCK

A gold mounted Sindhi Jezail matchlock.

obtained cannon and guns and any such adoption was negligible and without military consequences. Very few were available in north India until later in the sixteenth century. The Mughal Hamza Nama from the 1560s depicts armies but very few guns. A Leviathan Attacks Hamza and His Men, painted circa 1567, shows two ships, one with a cannon barrel protruding from the forecastle, fighting off a sea monster. Among the passengers we see a crossbowman, three archers and two matchlock men.

Their gunstocks have a pronounced step below the breech, a standard feature of Persian and Indian matchlocks until late in the sixteenth century. Significantly, one gun has been drawn showing a serpentine, the S-shaped trigger mechanism that guides the lighted match to the touch hole. From Abu'l Fazl, we learn that the Emperor Akbar ordered guns to be made with two lengths of wrought-iron barrels, banduk, the full-sized barrel of about 170 cm long (66 ins); and the shorter damanak, 113 cm (41 ins) approximately.

It has been claimed that Babur's use of firearms ended outdated methods of warfare in India. Not as far as the Rajputs were concerned. Maharana Vikramaditya (r.1531-7) attempted to arm infantry with guns at Mewar and forfeited the support of his aristocracy. Fifty years after Mughal guns defeated the Rajputs, the Rana of Udaipur appears not to have brought firearms to the battle of Haldighati in 1576.

Badayuni, present at the battle, makes no mention of them on either side but one of the Rana's elephants was injured by a bullet. The Rajputs are often said to have fully adopted Mughal culture by the late sixteenth century but their attitude to guns and cannon certainly differed from that of the Mughals. For centuries, Hindu kingly tradition had extolled the importance of becoming a chakravartin, a great ruler dominating by force of arms neighbouring lesser kings. It was unthinkable by Rajput warriors that this status could be achieved using gunpowder weapons. The Rajputs never lost their virile belief that war was a matter of individual combat for personal glory. They largely ignored other societies' tactical development of firearms, which diminished the individual's ability to show his skill with edged weapons and his courage.

A warrior should fight his enemy up close and the Rathores had such contempt for firearms that a wound from a sword received double the compensation paid to a similar wound from a gun. The seventeenth-century Iranian traveller in India, Abdullah Sani, who attended Shah Jahan's court, expressed surprise at the large numbers of Rajputs and Afghans serving in the Mughal army. However, Jodhpur paintings rarely show Rajputs of status with guns until the second half of the eighteenth century. Hunting scenes show bows being used, though there are many literary references to Rajputs using guns.

Asia in the gunpowder revolution.

The fame of Rani Durgavati (d.1564), queen of Gondwana, reached Akbar's court. She was a good shot with gun and arrow and continually went hunting... It was her custom that whenever she heard that a tiger had made his appearance, she would not drink water till she had shot him.

In contrast to Rajput disdain, Akbar was very interested in guns. Abu'l Fazl tells us Akbar 'introduces all sorts of new methods and studies their applicability to practical purposes. Thus, a plated armour was brought before His Majesty, and set up as a target; but no bullet was so powerful as to make an impression on it.' More of these were ordered. Since rulers and generals were expected to direct battles from the vantage point of a howdah on the back of the largest elephant available, where they made excellent targets, one can see why this might

The first Battle of Panipat, 1526.

appeal to him. Abu'l Fazl acknowledges the importance to Akbar of guns, saying he is responsible for various gun inventions. 'With the exception of Turkey, there is perhaps no country which in its guns has more means of securing the government than this.' He further says: 'His Majesty looks upon the care bestowed on the efficiency of this branch as one of the higher objects of a king, and therefore devotes to it much of his time. Daroghas and clever clerks are appointed to keep the whole in proper order.' The Padshahnama refers in 1636 to 'Bahadur Beg, supervisor of the Imperial matchlocks.' Matchlocks 'are in particular favour with His Majesty, who stands unrivalled in their manufacture, and as a marksman.' 'Many masters are to be found among gunmakers at court' including Ustad Kabir and Husayn. 'It is impossible to count every gun; besides clever workmen continually make new ones, especially gajnals and narnals.'

The Portuguese priest Francis Henriques, a member of the first Jesuit mission to Jalal-uddin Akbar, in 1580 wrote from Fatehpur Sikri: 'Akbar knows a little of all trades, and sometimes loves to practise them before his people, either as a carpenter, or as a blacksmith, or as an armourer, filing.' Henriques's companion, Father Monserrate, confirmed this in his Commentary: "Zelaldinus (Latin for Jalal-ud-din) is so devoted to building that he sometimes quarries stone himself along with the other workmen. Nor does he shrink from watching and even himself practising for the sake of amusement the craft of an ordinary artisan. For this purpose, he has built a workshop near the palace where also are studios and work rooms for the finer and more reputable arts, such as painting, goldsmith work, tapestry-making, carpet and curtain making, and the manufacture of arms. Hither, he very frequently comes and relaxes his mind with watching those who practise their arts.

Many early Turkish gun barrels were made of bronze but wrought iron gradually replaced these. In 1556, Janissaries sent to further Ottoman interests in Central Asia had their iron barrelled arquebuses seized by the Khan of Bukhara, who gave them inferior copper-barrel arquebuses in return. Early Indian gun barrels were made of sheet of iron rolled into a tube with the two edges brought together and braised. 'They also take cylindrical pieces of iron, and pierce them when hot with an iron pin. Three or four such pieces make one gun.' Joining three or four pieces of metal to make a gun barrel sounds particularly hazardous but it should be remembered that in Mughal India, as in Ottoman Turkey, it was common to make cannon in two parts, and since guns were seen as small cannon, the same practice applied. The powder chamber required much thicker walls than the rest of the barrel and was made separately. The two parts were then joined, the joint reinforced by an astragal.

Barrel-making in Hindustan improved when they were made by twisting a ribbon of iron round a mandrel. In the next stage, the metal was heated and the mandrel held vertically and hammered to weld the edges. 'Numerous accidents' were caused by barrels exploding. Abu'l Fazl tells us that Akbar tested new guns personally and put the experience to good use.

His Majesty has invented an excellent method of construction. They flatten iron, and twist it round obliquely in form of a roll, so that the folds get longer at every twist; they then join the folds, not edge to edge, but so as to allow them to lie one over the other, and heat them gradually in the fire.

The overlap described by Abu'l Fazl as Akbar's invention was already used for joining the cannon which were cast in two parts, the powder chamber (daru-khana) and the stone chamber (tash-awi). Ottoman cannon were made with a screw thread to join the parts but the Indians lacked the technical knowledge to make this. The result of Akbar's new gun-barrel-making technique was that: 'Matchlocks are now made so strong that they do not burst, though let off when filled to the top.' His system may have made barrels stronger but it also made them a great deal heavier, which was unimportant to him as he was extremely strong. There were still casualties however. Maharana Hamir Singh severely wounded his hand when his gun exploded during a hunt in 1778. He died from the infected wound six months later.

To be continued...

rajeshsharma1049@gmail.com

#RAKSHAT HOOJA

'Gaslight'

True to this meaning, the play is both an intimate domestic drama and a potent social critique

Rajasthan International Center (RIC) continued its tradition of bringing world-class theater to Jaipur with its September 5 staging of Patrick Hamilton's *Gaslight*. The production, adapted and directed by Saurabh Shrivastava, was performed in Hindi, an inspired choice that brought the story closer to the audience.

Patrick Hamilton's *Gaslight* is a master class in psychological suspense and theatrical craftsmanship. First staged in 1938, the play feels startlingly contemporary, its themes of manipulation, control, and fragile perception as relevant as ever. What makes Gaslight endure is not only its chilling premise, a husband subtly undermining his wife's sanity for personal gain, but the precision with which the director builds tension. Scene by scene, like a light dimming onstage, the atmosphere tightens until the audience finds itself as uncertain and trapped as the heroine. By the time the truth is revealed, the room feels heavy with anticipation, the effect almost unbearable.

To contextualize the play's impact, consider the term, 'gaslighting' that it inspired. Webster's Dictionary defines 'gaslighting' as the psychological manipulation of a person, often over a prolonged period, that causes the victim to doubt the validity of their own thoughts, perceptions, or memories. This process typically leads to confusion, diminished self-confidence, and a growing dependency on the perpetrator.

True to this meaning, the play is both an intimate domestic drama and a potent social critique. Long before the term 'gaslighting' entered what we now, at times wryly, call the 'woke' vocabulary, Hamilton's play exposed its insidious cruelty. Today, these themes resonate all the more deeply. Hamilton's insight into psychological abuse, veiled as care and concern, gives the play extraordinary contemporary relevance.

The production's success owes much to its taut dialogue and meticulous pacing. Saurabh Shrivastava, who adapted, directed, and starred in the lead role, masterfully wields the sinister power of suggestion, leaving both characters and audience questioning reality. The atmosphere he crafts, enhanced by fading lights and a claustrophobic set, transforms the domestic space into a psychological prison, both suffocating and enthralling. Saurabh, who established Gandharva Theater Group after retiring from a distinguished career in the Indian Police Service, wrote, directed, and played the role of Manjeet, the calculating antagonist. His performance is chilling: coolly manipulative, menacing without raising his voice, commanding attention through stillness as much as presence. His cruelty, understated yet devastating, is a study in emotional control. He was ably supported by Khushboo Kamal as Bela, the vulnerable heroine. Watching her resist a carefully orchestrated campaign of psychological torment is both harrowing and inspiring, her performance holding the audience in quiet solidarity. Vineeth Vishwanathan, as the CID Officer, provides a brief but electrifying turn, delivering some of the play's sharpest comic lines. Supporting roles were equally assured, anchoring the story's tension. The production values, lights, sound, and stage design, worked seamlessly, drawing no attention to themselves but allowing the narrative to take full possession of the stage.

Few plays manage to weave suspense, social commentary, and emotional depth so cohesively. Gaslight, the play, balances sharp dialogue with moments of unbearable silence, allowing pauses and gestures to echo louder than words. The result is devastating. When the curtain finally fell, the applause carried not just appreciation but a trace of unease, audiences left the theater entertained, unsettled, and perhaps, a little more aware of the shadows flickering in their own lives.

Reviewed by: AJAY GOEL

THE WALL

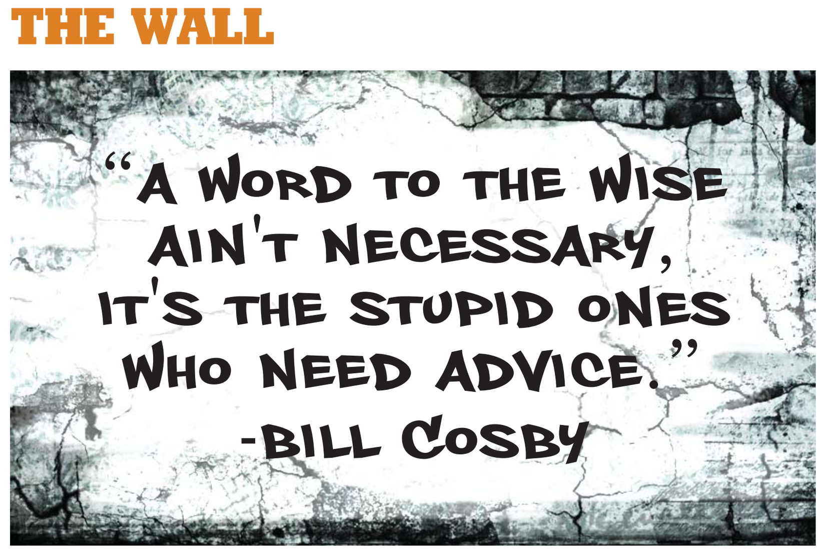

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

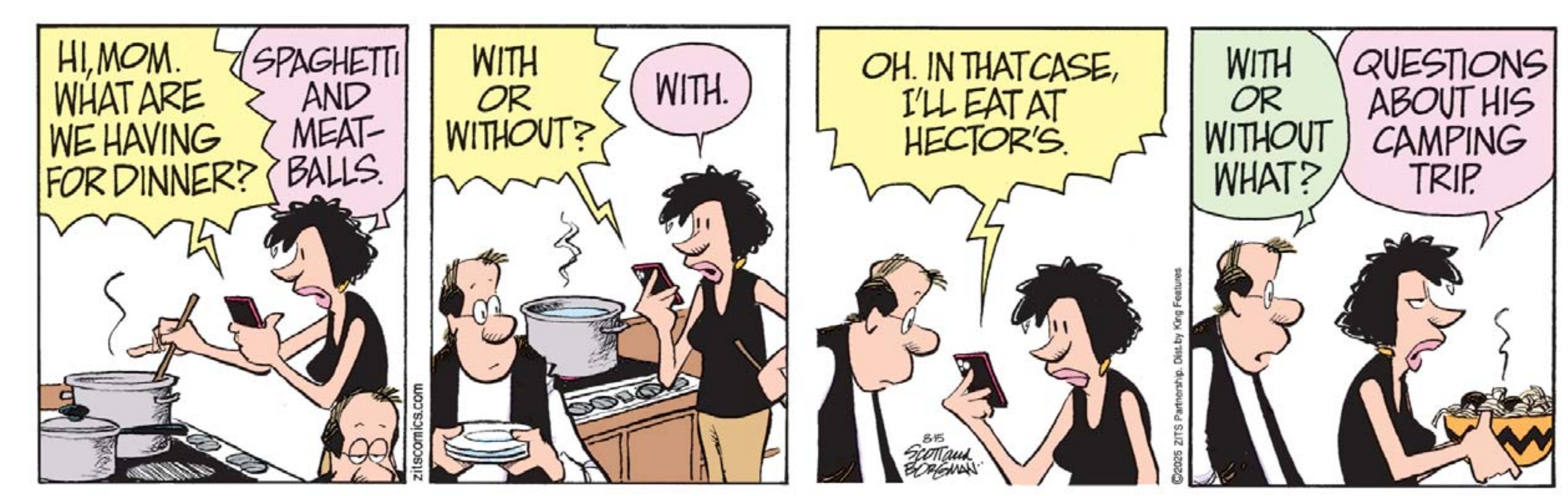

अग्रवाल-खण्डेलवाल ट्रस्ट व बद्रीनाथ मंदिर के पुजारी के बीच विवाद गहराया

पुलिस ने मंदिर परिसर के बाहर मौजूद भीड़ को तितर-बितर करने के लिए बल प्रयोग किया

गंगापुर सिटी, (निसं)। शहर के मध्य स्थित बद्रीनाथ मंदिर को लेकर अग्रवाल-खंडेलवाल धर्मशाला ट्रस्ट और पुजारी रामेश्वर शर्मा के बीच बुधवार को एक बार फिर विवाद गहरा गया है। पिछले तीन वर्षो से चल रहा यह विवाद बुधवार को उस समय तीखा हो गया, जब पुलिस ने मंदिर परिसर के बाहर मौजूद भीड़ को तितर-बितर करने के लिए बल प्रयोग किया। बुधवार को समाज के लोग मंदिर पहुंचकर विवाद सुलझाने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया।

आरोप है कि पुलिस के बल प्रयोग से लोगों में आक्रोश फैल गया। देखते ही देखते हजारों महिला-पुरुष मंदिर के बाहर धरने पर बैठ गए। हालात बिगड़ते देख शहर का मुख्य बाजार बंद हो गया और पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी शुरू हो गई। धरने पर बैठे अग्रवाल-खण्डेलवाल समाज के लोगों का कहना है कि पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिससे समाज के कई लोग चोटिल हुए हैं। पुलिस प्रशासन के विरोध में गंगापुर सिटी सहित सवाईमाधोपुर, करौली, वजीरपुर में प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर निष्पक्ष जांच की मांग की और ट्रस्ट की सम्पत्ति को पुजारी से मुक्त कराकर ट्रस्ट को सौंपने की मांग की। इससे

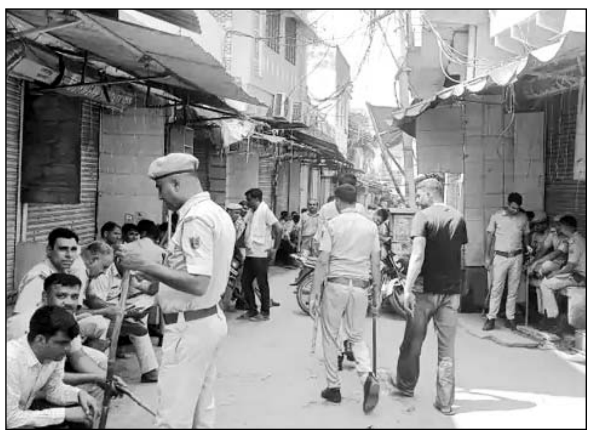

बद्रीनाथजी मंदिर के बाहर पुलिस जाब्ता तैनात रहा।

पहले पुरानी अनाज मण्डी स्थित सीताराम जी कें मंदिर पर दोनो समाजों की आमसभा का आयोजन किया गया। जिसमें प्रशासन के द्वारा पुजारी को संरक्षण देने एवं अग्रवाल खण्डेलवाल ट्रस्ट अध्यक्ष की ओर से मारपीट की एफआईआर दर्ज नहीं करने पर आक्रोश फैल गया। समाज के जेड वन प्रशासन की इस तरह की कार्रवाई से आक्रोशित हो गया और सभी ने एकराय हो कर बाजार में रैली निकाल कर बद्रीनाथ मंदिर पहुंचे जहां पर पहले से ही सुरक्षा के लिए लगे पुलिसकर्मियो ने सभी को मंदिर में प्रवेश करने से रोका जिस पर धक्का मुक्की हो गई। वहीं पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करने के लिए बल प्रयोग कर दिया।

पुजारी पर गाली-गलौज और मारपीट का आरोप :-चार दिन पहले ही ट्रस्ट पदाधिकारियों ने पुजारी रामेश्वर शर्मा पर गाली-गलौज और मारपीट के आरोप लगाए थे। समाज का कहना है कि इस संबंध में थाने में प्राथमिकी दर्ज कराने का प्रयास किया गया, लेकिन पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज नहीं की।

प्रशासन की सख्त निगरानी :-स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अतिरिक्त जिला अधिकारी रामकिशोर

- **हालात बिगड़ते देख शहर का मुख्य बाजार बंद हो गया और पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की**

मीणा, उपखण्ड अधिकारी बृजेंद्र मीणा, एएसपी राकेश राजोरा, डीएसपी सीताराम, कोतवाली, सदर व अन्य थानों के अधिकारी और सैकडों पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे। एडीएम की मौजूदगी में ट्रस्ट और समाज के पदाधिकारियों के बीच बातचीत का दौर शुरू किया गया। धरने में जिलाध्यक्ष गोविन्द बरनाला, नगर परिषद सभापति शिवरतन अग्रवाल, पूर्व उपसभापति दीपक सिंघल, अग्रवाल-खण्डेलवाल धर्मशाला ट्रस्ट अध्यक्ष सहित समाज के कई प्रमुख लोग शामिल हुए। समाज की ओर से मांग की गई कि प्रशासन निष्पक्ष कार्रवाई करे और न्यायालय के आदेशों की पालना सुनिश्चित की जाए। अग्रवाल-खंडेलवाल ट्रस्ट का दावा है कि बद्रीनाथ मंदिर समाज की संपत्ति है, जबकि पुजारी रामेश्वर शर्मा इसे सर्वसमाज का मंदिर बताते हैं। शर्मा परिवार कई पीढ़ियों से यहां पूजा-अर्चना और देखरेख करता आया है। पहले यह परिवार वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में कार्यरत था, लेकिन ट्रस्ट ने जब कर्मचारियों को बदलने का निर्णय लिया तो पुजारी परिवार ने मंदिर खाली करने से इनकार कर दिया। ट्रस्ट अध्यक्ष रवीन्द्र खण्डेलवाल ने बताया कि न्यायालय से ट्रस्ट के पक्ष में फैसला सुना दिया, इसके बावजूद प्रशासन ने आज तक कोई कार्रवाई नहीं की।

पुलिस प्रशासन द्वारा लाठी चार्ज करने के विरुद्ध एवं अपराधियों को संरक्षण देने के विरोध में गंगापुर सिटी सहित सवाई माधोपुर जिले एवं तहसील स्तर पर सभी व्यापारिक प्रतिष्ठान दुकान बंद रखने का निर्णय लिया है। अग्रवाल खंडेलवाल ट्रस्ट धर्मशाला के सामने चल रहे धरने पर निर्णय के अनुसार अग्रवाल समाज संघ जिला अध्यक्ष गोविंद प्रसाद बरनाला ने बताया कि सभी व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रखकर एवं सरकारी कर्मचारी एक दिन का अवकाश लेकर सभी समाज के बंधु धरना स्थल पहुंचे। प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि ट्रस्ट की धर्मशाला एवं मंदिर से असामाजिक तत्वों को शीघ्र गिरफ्तार नहीं किया गया एवं लाठीचार्ज करने वाले पुलिस प्रशासन पर कार्रवाई नहीं की गई तो पूरे राजस्थान बन्द का आव्हान किया जायेगा।

अज्ञात कारणों से घर में आग लगी, लाखों का नुकसान

घरेलू सामान सहित नकदी व आभूषण भी जले

पावटा, (निसं)। कस्बा पावटा ढाणी माच्छावाली नवोदय विद्यालय के पीछे स्थित एक घर में बुधवार को अज्ञात कारणों से आग लग गई। आग लगने से हड़कम्प मच गया। इस घटना में घर गृहस्थी का सामान सहित नकदी व आभूषण जिनकी कीमत करीब तीन लाख रुपए है, जलकर राख हो गया। गनीमत यह रही कि परिवार के बच्चे स्कूल और सदस्य बाहर होने की वजह से कोई जनहानि नहीं हुई।

यह मामला प्रागपुरा थाना क्षेत्र के कस्बा पावटा स्थित ढाणी माच्छावाली नवोदय विद्यालय के पीछे मुकेश पुत्र मालीराम के घर का है जहां अचानक आग की लपटें उठने लगीं। खेतों में काम कर रहे परिजनों और पड़ोसियों ने धुआं देखकर तुरंत पानी डालकर उसे बुझाने का प्रयास किया। वही पावटा प्रागपुरा नगरपालिका फायर बिग्रेड को फोन किया गया। जब जाकर आग पर काबू पाया जा सका। आग लगने से घर में घरेलू सामान, हाल में फसल बेच कर आए 55 हजार रुपए नकद, करीब एक लाख के आभूषण, कूलर, फ्रिज, पंखे सहित अन्य सामान पूरी तरह जल गया। पीड़ित परिवार को करीब तीन लाख रुपये का नुकसान हुआ है। पीड़ित मुकेश ने बताया कि जब तक आसपास के लोग निजी नलकूप चलाकर व फायर बिग्रेड आग पर काबू पाते, तब तक सब कुछ जल चुका था। स्थानीय लोगों ने बताया कि परिवार मजदूरी और खेती करके जीवन यापन कर करता है इस आगजनी से परिवार को आर्थिक रूप बड़ा नुकसान हुआ है जिससे प्रशासन ने गुहार लगाई कि परिवार को सरकार द्वारा सहायता प्रदान की जाए। वहीं हल्का पटवारी ने सूचना मिलते ही मौके पर जाकर मौका मुवायना किया।

आग से घर का सामान जलकर राख हो गया।

दो जनों को सात वर्ष का कठोर कारावास

रतनगढ़, (निसं)। थाना रतनगढ़ के 10 वर्ष पुराने प्रकरण 172/245 सरकार बनाम सोनू उर्फ़ सन्नी मामले में अपर जिला सेशन न्यायाधीश सुरेंद्र कौशिक ने दोनों अभियुक्तों को सात-सात वर्ष की कठोर कारावास एक-एक लाख रुपया के जुर्माने का अर्थदंड से दंडित किया है। अपर लोक अभियोजक डॉ जयाकांत बिंवाल ने बताया कि प्रकरण में तत्कालीन थानाधिकारी रतनगढ़ छुगसिंह ने 15 जुलाई 2015 को 50 किलो 800 ग्राम डोडा पोस्ट साबुत व 500 ग्राम अफीम को अपने क़ब्ज़े में रखने व परिवहन करने के अपराध में गिरफ़्तार किया था। न्यायालय में गवाहों के बयानों में प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर अभियुक्त गण जितेन्द्र पुत्र राजेंद्र निवासी भूथनकला हरियाणा व सोनू उर्फ़ सन्नी पुत्र सुभाष निवासी झालनिया फतेहाबाद को दोषी मानकर बुधवार को सात-सात वर्ष के कठोर कारावास व एक-एक लाख का अर्थदंड से दंडित किया जाकर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया। अभियोजन पक्ष की ओर से पैरवी अपर लोक अभियोजक डॉ. जयाकांत बिंवाल ने की।

नकबजन गैंग का पर्दाफाश, दो जने गिरफ्तार

रात्रि के समय मंदिरों व सूने मकानों में चोरी करते थे

बांसवाड़ा, (निसं)। सदर थाना पुलिस ने रात्रि के समय मंदिरों व सूने मकानों में चोरी करने वाली गैंग का पर्दाफाश करते हुए दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर दर्जनों घटनाओं के खुलासे का दावा किया है।

जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने बताया कि जिले में हो रही चोरी की वारदातों का पर्दाफाष करने के लिये एएसपी डॉ. राजेश भारद्वाज के सुपरविजन व पुलिस उप अधीक्षक गोपीचंद मीणा के निकट पर्यवेक्षण में सदर थानाधिकारी बुद्धाराम के नेतृतव में पुलिस टीम गठित की गयी। इस टीम ने गहन अनुसंधान, तकनीकि विश्लेषण, मुखबीर तंत्र एवं आसूचनाएं संकलित करते हुए जिले में अलग-अलग जगहों पर मंदिरों व सुने मकानों में रात्रि के समय नकबजनी व चोरी की घटना के आस-पास लगे सीसीटीवी कैमरों से फुटेज प्राप्त किये। पुलिस टीम ने मुखबिरों से लगातार संपर्क में रहते हुए सूचनाएं प्राप्त की वहीं पूर्व में चालानशुदा अपराधियों पर सतत

पुलिस ने नकबजनी गैंग के आरोपी को गिरफ्तार किया।

निगरानी रखते हुए उनके मोबाईल नंबरों की सीडीआर प्राप्त कर जांच की। पूर्व में नगबजनी, चोरी व अन्य प्रकरणों में शामिल संदिग्ध रमेश पुत्र रमीया पुत्र भाणजी निनामा निवासी खेरडाबरा को डिटेन कर पूछताछ की तो उसने सुनील व उसके साथियों के साथ मिलकर 9 वारदातों को अंजाम देना स्वीकार किया। पुलिस टीम में थानाधिकारी बुद्धाराम विश्नोई, सहायक उपनिरीक्षक रमेशचन्द्र, हैड कांस्टेबल केशवचन्द्र, पुलिस लाईन के हैड कांस्टेबल गजेन्द्र सिंह, सदर थाना के कांस्टेबल मुकेश, राहुल व विजय शामिल रहे।

चार हजार रुपये की रिश्वत लेते लाइनमैन गिरफ्तार

करौली/जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की करौली टीम ने बुधवार को कार्रवाई करते हुए कार्यालय सहायक अभियन्ता (ओएंडएम) जयपुर डिस्कॉम बसेड़ी जिला धौलपुर के नयावास फीडर तकनीकी द्वितीय (लाइनमैन) लोकेश कुमार मीना को परिवादी से उसके पिता के नाम स्वीकृत घरेलू विद्युत कनेक्शन पर स्थापित विद्युत मीटर में अधिक रीडिंग को जीरो करने एवं मीटर को बदलने की एवज में चार हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की (कार्यवाहक) पुलिस महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी की करौली टीम को परिवादी ने शिकायत दी कि उसके पिता के नाम स्वीकृत घरेलू विद्युत कनेक्शन पर स्थापित विद्युत मीटर की विद्युत उपभोग रीडिंग को जीरो करने एवं मीटर को बदलने की एवज में छह हजार रुपये की रिश्वत मांग रहा है। जिस पर एसीबी करौली के पुलिस निरीक्षक जगदीश भारद्वाज के नेतृत्व में ट्रेप की कार्रवाई करते हुए लाईनमैन लोकेश कुमार मीना को चार हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया है।

ँएसीबी की टीम ने लाईनमैन (गोले में) को गिरफ्तार किया।

गर्ल्स हॉस्टल के मालिक पर धमकाने का आरोप

कोटा, (निसं)। बोरखेड़ा थाना इलाके के कोरल पार्क में उस समय विवाद खड़ा हो गया जब एक गर्ल्स हॉस्टल का मालिक बंदूक लेकर बॉयज हॉस्टल में धमकाने के लिये पहुंचा। जानकारी के अनुसार कोरल पार्क में स्थित बॉयज हॉस्टल के छात्रों ने बालकनी में खड़े होकर केले खाये थे, जिसके छिलके पास में स्थित गर्ल्स हॉस्टल की बालकनी में फेंक दिये। जिसके बाद हॉस्टल में रह रही छात्राओं ने इसकी शिकायत हॉस्टल के मालिक से की। बोरखेड़ा थाने में मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने मामले में जांच शुरू कर दी। मामला सोमवार रात का बताया जा रहा है।

बोरखेड़ा थाना अधिकारी देवेश भारद्वाज ने बताया कि बोरखेड़ा इलाके के कोरल पार्क में बॉयज हॉस्टल के पास में गर्ल्स हॉस्टल है। थानाधिकारी ने बताया कि बॉयज हॉस्टल वार्डन महेन्द्र गोचर ने थाने में शिकायत दी थी, जिसमँ गर्ल्स हॉस्टल के मालिक विवेक गर्ग पर आरोप लगाया कि उसने हॉस्टल में घुसकर गन से डराया धमकाया है। इस पूरे प्रकरण की जांच पड़ताल की गई।

थानाधिकारी ने बताया कि प्रथमदृष्टा से जांच में सामने आया कि छात्रों ने गर्ल्स हॉस्टल की बालकनी में केले के छिल्के फेंके थे जिसके बाद पूरा विवाद खड़ा हो गया। विवेक गर्ग के पास लाईसेंसी रिवाल्वर है और वह हमेशा साथ में रखता है। छात्राओं ने सामने वाले हॉस्टल के छात्रों की शिकायत हॉस्टल के मालिक से की थी। इस पर गर्ल्स हॉस्टल संचालक विवेक गर्ग जो बाहर रहते है फिलहाल कोटा आये हुए थे, हॉस्टल को उनकी पत्नी संभालती है। हॉस्टल मालिक विवेक गर्ग छात्रों को समझाने गया था। मामले की जांच की जा रही है।

नवरात्र घट स्थापना की तैयारियां जोरों पर

जयपुर। राजा पार्क स्थित वैष्णो देवी मंदिर पंचवटी सर्किल में इस बार नवरात्रा पर्व विशेष धूमधाम से मनाया जाएगा। 22 सितंबर को नवरात्रा घट स्थापना के साथ ही नौ दिनों तक धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

जानकारी के अनुसार मंदिर में नवरात्रे से पहले मंदिर में रंग-रोगन का कार्य चल रहा है और माता की मूर्ति का विशेष श्रृंगार किया जा रहा है। वहीं घट स्थापना के साथ ही मंदिर के दर्शन खुलेगे। जिसका समय सुबह छह बजे से दोपहर 12 तक और शाम पांच बजे रात दस बजे खुले रहेगे। मंदिर कमेटी उपाध्यक्ष कमलेश कुमार ने बताया कि पूरे मंदिर परिसर को रंगीन लाइटों, चुनरी और रंग-बिरंगे फूलों से सजाया जा रहा है। माता का अनूठा श्रृंगार किया जाएगा। नौ दिनों तक माता को सात से नौ बार नए पोशाक धारण कराए जाएंगे।

मंदिर कमेटी कोषाध्यक्ष इन्द्रजीत शर्मा ने बताया कि पूरे नवरात्र के दौरान प्रतिदिन सुबह और शाम चार से पाँच हजार दोने प्रसादी भक्तों को वितरित की जाएगी। इसमें माता का भोग हलवा,चना और पूडी रहेगा।

मंदिर कमेटी अध्यक्ष राज भाटिया और सचिव राजकुमार भाटिया ने बताया कि यह मंदिर वर्ष 2004 में स्थापित हुआ था। तब से ही यहां माता को साल के 365 दिन सुबह-शाम देशी घी के हलवे और चने का भोग लगाया जाता है और भक्तों में बाँटा जाता है।

इसके अलावा नवरात्रा के अतिरिक्त भी हर दिन माता को दिन में तीन बार नई पोशाक (साड़ी) धारण करवाई जाती है। बाद में ये साड़ियाँ गरीब बच्चियों की शादी में दान की जाती हैं और कुष्ठ आश्रमों व ज़रूरतमंद परिवारों तक पहुँचाई जाती हैं।

पंजाब के राज्यपाल कटारिया जोधपुर पहुंचे

जोधपुर, (कासं)। पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया बुधवार को भगवंतो के दर्शनार्थ चौरड़िया भवन पहुंचे। उन्होंने गुरुदेव सुमति मुनि मसा आदि ठाणा के दर्शन कर गुरु भगवंतो से बोध प्राप्त कर मांगलिक श्रवण किया। इस अवसर पर राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया का संघ अध्यक्षत देवराज बोहरा में साफा पहनाकर, मंत्री माणकचंद्र ललवानी ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

इस अवसर पर उगमराज कोठारी ने सामायिक उपकरण तथा अशोक बोहरा ने जिनवाणी में आनन्द आवै नामक पुस्तक भेंट कर कटारिया का अभिनंदन किया। रवि बोहरा ने तिलक लगाकर, गौतम खिंवसरा एवं धर्मेश रूटिया ने शाल ओढ़ाकर तथा सुश्रावक प्रसन्नचंद मेहता, जसवंत राज मेहता, प्रकाश भंसाली, राजेन्द्र लुणिया, मुकेशु मुथा, किशोरमल बोहरा, अमृत लालवाणी, पारसमल पालगोता ने माला पहनाकर स्वागत किया। राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने संघ के प्रति सद्भावना प्रकट की। इससे पूर्व सुमति मुनि ने आज अपने प्रवचन में बताया कि शरीर की लाचारी को छोड़ कर आत्मा का ध्यान रखना चाहिए। हमारी कोई गलती बताकर हम पर उपकार कर रहा है। हमारी गलती हो या नहीं हो हमको कर्म क्षय का अवसर प्रदान किया है। हम भाव अपना कर स्थिर रह सकते हैं। हमको जब भी समय मिले हमको प्रतिकुल परिस्थतियों, व्यक्तियों के मध्य रहकर करुणाभाव अपना कर स्थिर रह सकते हैं। साध्वी श्री ने कहा कि जिसको अपने आप बोध होता है वह निसर्ग रुचि है एवं जिनको उपदेश सुन कर धर्म रुचि बढ़े वह अभिगम रुचि है।

किशनगढ़ बास के सरकारी विद्यालयों का न्यायाधीश ने किया निरीक्षण

किशनगढ़ बास, (निसं)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण (रालसा) जयपुर के निर्देशानुसार न्यायाधीश रनवीर सिंह ने बुधवार को किशनगढ़ बास उपखण्ड क्षेत्र के करीब एक दर्जन सरकारी विद्यालयों का औचक निरीक्षण कर स्कूल भवनों की हालत व छात्रों के लिए की गई वैकल्पिक व्यवस्था का अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी आशीष यादव व किशनगढ़ बास पुलिस थाना सहायक उप निरीक्षक सतीश कुमार मौजूद रहे। निरीक्षण की सूचना से सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में हड़कंप मच गया। आनन-फानन में शिक्षकों ने बच्चों को जर्जर कमरों से हटाकर दूसरे कमरों में बैठा दिया और विद्यालयों के मुख्य गेट पर ताला लगा दिया गया। शिक्षकों के द्वारा अन्य स्कूलों में फोन के माध्यम से सूचना दिए जाने की बात सामने आई तो न्यायाधीश नाराजगी जताई।

- **स्कूल भवनों की हालत व छात्रों के लिए की गई वैकल्पिक व्यवस्था का अवलोकन किया**
- **निरीक्षण के दौरान अधिकतर विद्यालयों के भवनों की स्थिति जर्जर एवं दयनीय पायी गयी**

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण खैरथल के लिपिक हेमराज परेवा ने बताया कि निरीक्षण राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुरूप स्कूलों के जर्जर भवनों और छात्रों के लिए की गई वैकल्पिक व्यवस्था की जांच के उददे्श्य को लेकर न्यायाधीश रनवीर सिंह ने टीम के साथ क्षेत्र के गांव थानाघोड़ा, पड़ासला, मिर्जापुर, रावका, लालपुरी, घांसौली, बृसिंगपुर, सच्चुराम राजपूत की ढाणी सहित 13 सरकारी विद्यालयों का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान अधिकतर

सरकारी विद्यालयों के भवनों की जर्जर हालत को निरीक्षण के दौरान न्यायाधीश व टीम ने कैमरे में लिया।

विद्यालयों के भवनों की स्थिति जर्जर एवं दयनीय पायी गयी। भवनों की दीवारों में सीलन व दरार पायी गयी साथ ही छत का प्लास्टर उखड़ा हुआ मिला जिनमें बच्चों को पढ़ाया जाना सुरक्षा की दृष्टि से न्यायसंगत नहीं बताया गया, जो जर्जर और असुरक्षित भवन सबसे बड़ी चिंता का विषय थे। लगभग सभी विद्यालयों के शौचालयों में गंदगी पायी गयी इसके साथ ही बालिकाओं के लिए बने शौचालयों की स्थिति और भी अति दयनीय मिली जिससे संक्रमण का खतरा बना हुआ है। निरीक्षण में न्यायाधीश ने पाया कि विद्यालयों के जर्जर भवनों में ही विद्यार्थियों का शिक्षण कार्य करवाया जा रहा है इसके लिए अलग से कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं कराई गई है जो किसी गम्भीर दुर्घटना के घटित होने का संकेत दे रही है।

कस्तूरबा आवासीय विद्यालय का किया निरीक्षण

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा सचिव तथा जिला प्रभारी सचिव कृष्ण कुणाल ने बुधवार को श्रीडूंगरगढ़ के जैतासर में संचालित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय का निरीक्षण किया। इस दौरान शिक्षा निदेशक सीताराम जाट, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सोहनलाल तथा जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय) किशन दान चारण, एडीपीसी कृष्ण कुमार बिश्नोई, सहायक निदेशक विक्रम सिंह चौहान सहित शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारी मौजूद रहे। प्रभारी सचिव ने आवासीय विद्यालय में बालिकाओं के रहने-खाने की व्यवस्थाओं का फीडबैक लिया और सभी व्यवस्थाएं चाक-चौबंद रखने के निर्देश दिए। उन्होंने बालिकाओं से भी पढ़ाई और अन्य व्यवस्थाओं की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से व्यवस्थाओं में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी जाएगी। शिक्षा विभाग के अधिकारी इसकी नियमित मॉनिटरिंग करें तथा सुनिश्चित करें कि बालिकाओं को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो। उन्होंने कहा कि बेटियां खूब मन लगाकर पढ़ें और अपने परिवार और शहर का नाम रोशन करें। प्रभारी सचिव ने नवनिर्मित बिल्डिंग का निरीक्षण किया। इसकी गुणवत्ता पर संतोष जताया। स्कूल परिसर में उन्होंने पौधारोपण किया तथा जिले में शिक्षा विभाग द्वारा किए गए पौधरोपण की जानकारी ली।

अलापुर में जाति बदलकर फर्जीवाड़े से जमीन खरीदने के मामले की सच्चाई सामने आई

- **पटवारी की रिपोर्ट ने खोली फर्जीवाड़े की कलाई, तहसीलदार व पटवारी पर गाज गिर सकती है**
- **पटवारी ने अपनी रिपोर्ट अलवर एसडीएम को भेज दी है, जिसमें उसने दावा किया है कि भूमि खरीददार जीत सिंह एससी का ना होकर ओबीसी का है**

अलवर, (निसं)। आलापुर गांव में जाति बदलकर जमीन खरीदने का मामले की सच्चाई पटवारी की रिपोर्ट के साथ ही सामने आ गई है। पटवारी ने अपनी रिपोर्ट अलवर एसडीएम को भेज दी है, जिसमें उसने दावा किया है कि भूमि खरीददार जीत सिंह एससी का ना होकर ओबीसी का है। जगता बसई के पटवारी प्रेमपाल सिंह राठौड़ ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि पीपली का बास मे निवासी जीत सिंह पुत्र बंजार सिंह के नाम कई जमीन है, जिनके रिकॉर्ड के मुताबिक जीत सिंह राय सिख है ना कि मजबी सिख इसकी गवाही दर्जनों ग्रामीणों ने पटवारी की रिपोर्ट पर दी है। पीड़ित पक्ष को यह न्याय मीडिया की लगातार खोजपूर्ण खबरों के बाद ही मिल पाना संभव हुआ है। अब एक कड़ी में एक और खरीदारी की जाति रिपोर्ट गोविंदगढ़ के पटवारी की आना बाकी है जैसे ही दूसरी रिपोर्ट आएगी जिला प्रशासन हरकत में आ जाएगा।

मामले के अनुसार अलवर तहसील अंतर्गत पडने वाली माचडी पंचायत के गांव अलापुर में जाति बदलकर एससी के गुजरमल पुत्र मवासी की भूमि को ओबीसी के बंजार सिंह और रणजीत सिंह राय सिख ने मजबी सिख बनकर अपने नाम करवा ली थी। मामले को मीडिया ने जोर-शोर से उठाया। बाद में अलापुर निवासी भूमि धारक का पोता ने एक शिकायती पत्र अलवर एसडीएम के सम्मुख पेश कर उन्हें भी इस मामले से अवगत कराते हुए खरीददार जीत सिंह पुत्र बंजार सिंह राय सिख निवासी पीपली का बास तहसील किशनगढ़ बास और रणजीत सिंह पुत्र नत्था सिंह राय सिख निवासी तहसील लक्ष्मणगढ़ सहित नए खरीदार जाति बदलने वाले तहसीलदार और पटवारी को आरोपी बनाकर उनके खिलाफ कार्यवाही करने की मांग करते हुए भूमि को वापिस उसी के नाम करवाने की मांग की थी।

क्या लिखा है शिकायती पत्र में :-अलापुर निवासी गुर्जर मल के पोत्र दिनेश कुमार पुत्र किशोरी लाल ने इस संदर्भ में एक शिकायती पत्र अलवर एसडीएम को उनके कार्यालय पहुंच कर सौंपा है, जिसमें उसने बताया है हाल खसरा नम्बर 22 एवं 24 को जीत सिंह पुत्र बंजार सिंह जाति राय सिख ने प्रथम बार जमीन मालिक गुजरमल पुत्र मवासी जाति जाटव खातेदार से मजबी सिख बनकर एससी की जमीन की खरीद की थी, जिसका नामांतरण संख्या 536 एव 537 निर्णय 31 मई 1990 को स्वीकृत कर जमाबंदी 2045-48 में नामांतरण का नोट अंकन कर दिया गया। नामांतरण में भी जीत सिंह पुत्र बंजार सिंह की जाति मजहबी सिख दर्ज की गई, जिसने राजस्थान टीनेक्स एक्ट 1955 की धारा 42 का उल्लंघन किया गया है, जिसके बाद से लगातार 2069-2072 खाता संख्या 106 में जीत सिंह पुत्र बंजार सिंह निवासी पीपली का बास तहसील किशनगढ़ बास अलवर की जाति रिकार्ड में मजबी सिख दर्ज की गई। उस समय तत्कालीन पटवारी नंदकिशोर परेवा हाल आफिस कानूनगो मालाखेड़ा द्वारा जमाबंदी 2069-72 के खाता संख्या 106 को आधार मानते हुए शुद्धि पत्र संख्या 2 दिनांक 14 जून 2018 को अलापुर से रणजीत पुत्र नत्था सिंह जाति राय सिख से मजबी सिख कर दी गई, परन्तु जानबूझकर उसी खाते में दर्ज जीत सिंह पुत्र बंजार सिंह की जाति रायसिख से मजबी सिख करना छोड़ दी गई, जिस कारण जीत सिंह ने पुन: उक्त खसरों का बेचान रेशम कौर पत्नी तारा सिंह जाति राय सिख वगेराह को कर दिया। अगर उसी समय तत्कालीन पटवारी नंद किशोर परेवा शुद्धि पत्र 2 भरते समय हेराफेरी नहीं की होती तो टिनेक्सी एक्ट की धारा 42 की रिपोर्ट सक्षम अधिकारी को की होती तो उक्त खसरों का बेचान रुक सकता था, लेकिन उसने ऐसा नही किया।

शिकायतकर्ता ने एसडीएम अलवर से मांग की है कि इस भूमि की खरीद-फरोख्त में फर्जीवाड़ा किया गया है एवं फर्जीवाड़े में शामिल तत्कालीन पटवारी सहित अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए एवं उक्त जमीन को वापिस गुजर मल के नाम दर्ज करवाई जाए।

केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने जी.एस.टी. रेट में सुधारों पर चर्चा की

केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने बुधवार को बीजेपी अलवर के कार्यालय पर जीएसटी सुधारों पर मीडिया से बातचीत की।

अलवर। केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि भिवाड़ी में जलभराव का मसला नेशनल हाईवे से जुड़ा हुआ है। जिसके समाधान के लिए हम लोग दिल्ली में केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से मिल चुके। उनको समाधान के कई सुझाव भी दिए हैं। आगे जल्दी उनसे बातचीत कर भिवाड़ी में जल भराव का समाधान निकाला जाएगा।

इससे पहले हमने राजस्थान व हरियाणा के मुख्यमंत्री से भी बातचीत की है। दोनों कलेक्टर से चर्चा की है। अब इस मसले को जल्दी सुलझाएंगे। केंद्रीय मंत्री ने यह बात बुधवार को बीजेपी अलवर के कार्यालय पर जीएसटी सुधारों पर मीडिया से बातचीत करते हुए कही।

भूपेंद्र यादव ने कहा कि अलवर को वास्तव में अच्छे शहर के रूप में लाना है जो नियोजित विकास के लिए नागरिकों की सक्रिय सहभागिता जरूरी है। जिसके लिए सबको अपने व्यवहार में बदलाव करना चाहिए। जैसे अलवर शहर में 80 हजार मकान हैं। सबको घर में कचरा पात्र रखना चाहिए। हम सब गीला और सूखा कचरा अलग-अलग करने लग जाएं और ऑटो टिप्पर में डालने लग जाएं तो काफी बदलाव आ सकता है।

केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर सेवा सप्ताह पखवाड़ा 2 अक्टूबर तक चलेगा। जिसमें महिला, दिव्यांग, गरीब, मजदूर व किसानों के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। स्वस्थ नारी सशक्त परिवार कार्यक्रम शुरू किया है। सभी महिलाओं के हेल्थ की निशुल्क जांच व इलाज कराया जाएगा। जीएसटी पर जानकारी देते हुए कहा कि देश में दीपावली पर बड़ा धमाका करने की बात प्रधानमंत्री ने कही थी। नवरात्र के पहले दिन से जीएसटी सुधारों का फायदा मिलना शुरू हो जाएगा। देश में जीएसटी आया तब कांग्रेस ने बहिष्कार किया था।

ऐसा कहा गया कि जीएसटी लागू करने के बाद सत्ता चली जाती है। लेकिन बीजेपी ने जीएसटी लागू किया और उसके बाद लगातार दो बार सत्ता में आ गए। सहमति के आधार जीएसटी काउंसिल का प्रारंभ किया गया था।

मंत्री ने आगे कहा- जीएसटी के वर्गीकरण से दो ही स्लैब होने चाहिए। तभी जाकर सुधार होगा। जीएसटी सुधार करते हुए अब आगे खेती के उपकरण, दवा काफी सस्ते होंगे। देश के मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को बढ़ावा होगा। जिससे राजस्व भी बढ़ेगा। जितनी खपत बढ़ेगी उतना राजस्व मिलेगा।

संक्षिप्त

बैठक आयोजित

फुलेरा। बिचून रोड स्थित श्री विश्वकर्मा मन्दिर में जांगिड़ ब्राह्मण समाज ने मंदिर समिति अध्यक्ष यादराम कोतूकथलिया की अध्यक्षता में सृष्टि के रचयिता भगवान श्रीविश्वकर्मा का पूजन एवं भव्य आरती का आयोजन किया गया। उसके बाद एक बैठक आयोजित हुई, जिसमें समाज उत्थान, सामाजिक कुरुतियों को दूर करने एवं आगामी 5 नवम्बर को होने वाले सामूहिक विवाह सम्मेलन के विषय में आवश्यक निर्णय लिए गए। इस अवसर पर नवल किशोर दायमा, मांगीलाल लावण्डीवाल, चन्द्रकांत लावण्डीवाल, सीपी त्रिपाठी, मोहनलाल बूंदवाल, शांतिलाल देहमन, राजेंद्र लावण्डीवाल, मोहनलाल सावड, कृष्णकांत जाला, छगनलाल धामा, मुरारीलाल खंडेलवाल, सुरेशचंद लावण्डीवाल, लक्ष्मीनारायण पंवार, रवि कुमार लावण्डीवाल सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

देवाल बने मीडिया संयोजक

फुलेरा। अखिल भारतीय अनुसूचित जाति-जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कर्मचारी महासंघ (सेवास्तम्भ), राजस्थान ने संगठन को सशक्त बनाने के उद्देश्य से नई नियुक्ति की घोषणा की है। जीएल कालोया पूर्व न्यायाधीश के दिशा-निर्देशानुसार और प्रदेश महासचिव रविशंकर की अनुशंसा पर फुलेरा के मिश्र कॉलोनी निवासी राजकुमार देवाल को मिडिया संयोजक पद पर नियुक्त किया गया। नव नियुक्त मीडिया संयोजक देवाल को नियुक्ति पत्र प्राप्ति के 15 दिनों के भीतर पदभार ग्रहण कर जिलाध्यक्ष एवं प्रदेश कार्यालय को सूचित करना अनिवार्य रहेगा। यह नियुक्ति संगठन की संचार प्रक्रिया को प्रभावी बनाकर जनसंपर्क को सशक्त करने तथा संविधान द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। उक्त जानकारी सेवास्तंभ के अध्यक्ष दिनेश जाटोलिया ने दी है।

150 छायादार व फलदार पौधे लगाए

निवाई। पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों के तहत बुधवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सीदड़ा में सघन वृक्षारोपण किया गया। प्रधानाचार्य बीरबल मीणा ने कहा कि बताया कि आज का पर्यावरण ही कल का भविष्य है। यूथ व इको क्लब प्रभारी मांगीलाल थोरी ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम के तहत विद्यालय के खेल मैदान एवं परिसर में 150 छायादार पेड़ लगाए गए है। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम में सरपंच राम सहाय मीणा, उप सरपंच रामधन मीणा, एसएमसी अध्यक्ष लाली देवी मीणा,सीआर रामकिशोर मीणा, विधायक प्रतिनिधि बाबूलाल मीणा व रतिराम मीणा सहित विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों ने छायादार व फलदार पौधे लगाए हैं। उन्होंने बताया कि विद्यालय परिवार हर वर्ष विद्यालय परिसर व खेल मैदान में पौधारोपण करता है तथा उनकी देखभाल भी की जाती है।

मेगा पीटीएम का आयोजन

निवाई। बुधवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में मेगा पीटीएम का आयोजन हुआ। प्रधानाचार्य देवेंद्रपाल सिंह ने बताया अभिभावक विद्यालय की प्रार्थना सभा में उपस्थित रहे। इस दौरान विषय विशेषज्ञों ने शैक्षिक व सह शैक्षिक गतिविधियों व उपलब्धियों की जानकारी दी। मौखिक पठन प्रवाह, एन नामांकित एवं ड्रॉप आउट विद्यार्थियों की सूची का पठन, वृक्षारोपण, ओजोन मंडल सुरक्षा व विद्यालय में रीडिंग कॉर्नर की विशेष जानकारी दी गई।

रावण जन्म लीला का मंचन

पावटा। आदर्श रामलीला मंडल पावटा द्वारा रामलीला मैदान में चल रही प्राचीन रामलीला के दूसरे दिन रावण व रामजन्म लीलाओं का मंचन किया गया। इस दौरान कई प्रारंभिक लीलाओं के पश्चात दशानन रावण का जन्म हुआ। जन्म के पश्चात रावण ने ब्रह्मा से वर मांगा कि उसकी मृत्यु कभी किसी तरह से न हो और वो अजर अमर हो जाए।

नम्बर मिलाइए
9587884433
सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

'शहरी सेवा शिविरों का अधिक से अधिक लाभ लेंवे'

- शिविर का जिला प्रभारी सचिव अर्चना सिंह और जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने किया निरीक्षण,
- शिविर में 101 पट्टों को किया वितरण, स्वच्छता की दिलाई शपथ

निवाई। जिला प्रभारी सचिव अर्चना सिंह और जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण किया। पालिका परिसर में निरीक्षण के दौरान दोनों अधिकारियों ने शिविर में मौजूद कर्मचारियों से विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर फीडबैक लिया और व्यवस्थाओं की जानकारी ली। इस दौरान अधिकारियों ने लाभार्थियों से सीधे संवाद कर योजनाओं से मिलने वाले लाभ पर भी चर्चा की। इस दौरान विधायक रामसहाय वर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी, जिला प्रभारी सचिव अर्चना सिंह, जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल, एसडीएम रामकरण सिंह, भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष नितिन छाबड़ा ने लाभार्थियों को पट्टे वितरण किए। इस दौरान विधायक वर्मा ने लोगों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। शिविर के दौरान शहरी क्षेत्र के लाभार्थियों को 101 पट्टों का वितरण किया। इस दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 18 लाभार्थियों को 50-50 हजार रूपए के चेक प्रदान किए गए। इसके साथ ही मुख्यमंत्री शहरी रोजगार योजना में 40 जॉब कार्ड, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत 6 लाभार्थियों को 50 हजार रुपए का आर्थिक लाभ तथा घरेलू शौचालय निर्माण के लिए 12 लाभार्थियों को प्रथम किश्त जारी की गई।

इस मौके पर स्वच्छता ही सेवा अभियान 2025 का शुभारंभ भी किया गया। इस दौरान उपस्थित भाजपा कार्यकर्ताओं व आमजन को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी ने बताया कि स्वच्छता ही सेवा अभियान 17 अक्टूबर तक चलेगा।

उन्होंने बताया कि अभियान के तहत शहर में विशेष सफाई कार्य किए जाएंगे। 25 सितंबर को जन प्रतिनिधि श्रमदान करेंगे। वहीं 1 अक्टूबर को स्वच्छता रैली का आयोजन होगा। इस दौरान शहर मंडल अध्यक्ष नितिन छाबड़ा, जयनारायण कुमावत भाजपा नटवाड़ा मंडल अध्यक्ष बद्री विजय, अरनिया मंडल अध्यक्ष शिवराज गुर्जर, डांगरथल मंडल अध्यक्ष केदार जाट, ममता जाट, मंजू बलाई, जीतपाल गुर्जर, पुरुषोत्तम शर्मा, जितेंद्र धारवाल सहायक अभियंता चन्द्र प्रकाश मीणा, कनिष्ट अभियंता चन्द्र प्रकाश चौधरी, कनिष्ठ अभियंता पप्पू लाल मीणा, हनुमान गुर्जर, वरिष्ठ सहायक हरीश मीणा व रोडूमल सैनी सहित कई कार्यकर्ता, अधिकारी, कर्मचारी एवं कई लाभार्थी मौजूद थे।

बनास नदी में ट्रैक्टर चालक की डुबने से मौत

टोंक। मेहंदवास थाना क्षेत्र में स्थित चूली रपट को पार करते समय एक ट्रैक्टर असंतुलित होकर बनास नदी में पलट गया, इस दौरान चालक भी पानी में डुब गया, जिसे निकालने के पहले ही उसकी मौत हो गई।

मेहंदवास थाना प्रभारी ओम प्रकाश चौधरी ने बताया कि क्षेत्र से गुजर रही बनास नदी के चूली गांव के रपटे पर तेज गति से बह रहे पानी में मंगलवार को चालक बाबूलाल मीणा पुत्र बजरंगलाल उम्र 40 साल निवासी चूली जो ट्रैक्टर चलाकर टोंक जाने आने के लिए रपटा पार कर रहा था, तभी पानी के तेज बहाव में ट्रैक्टर असंतुलित होकर बह गया तथा बाबूलाल भी ट्रेक्टर के नीचे गिर जाने से पानी में डुब गया। नीचे फंसे रहने के कारण उसकी डुबने से मौत हो गई। जब इस का पता ग्रामीणो को चला तो उन्होने पुलिस को सूचना दी, बाद में पुलिस मौके पर पंहुचकर ग्रामीणों की मदद से चालक को बाहर निकाला, जिसे सआदत चिकित्सालय टोंक पर ले गये, अस्पताल में डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया।

मिलावाटी दूध की सूचना पर बानसूर में की कार्यवाही

कोटपूतली। राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे "शुद्ध आहार मिलावट पर वार" विषेश अभियान के तहत आगामी त्यौहारों के सीजन को देखते हुये खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रक आयुक्त डॉ. टी. शुभमंगला, जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी, एडीएम ओमप्रकाश सहारण के निर्देशन में खाद्य सुरक्षा टीम के द्वारा बानसूर कस्बे के ग्राम गुंता में कार्यवाही की गई। सीएमएचओ डॉ. आशीष सिंह शेखावत ने जानकारी देते हुये बताया कि बानसूर के ग्राम गुंता में मिलावटी दूध बनाने की सूचना मिलने पर खाद्य सुरक्षा अधिकारियों के जांच दल द्वारा यादव डेयरी का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान दूध डेयरी पर मिलावटी सामानों की जांच कर खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने उच्च अधिकारियों को सूचना दी। साथ ही स्थानीय पुलिस थाने में सूचना देकर मौके पर जाप्ता बुलाया गया। इस दौरान परिसर में 03 बड़ी मिक्सी, 15 किलो स्किम्ड मिल्क पाउडर, 30 लीटर रिफाईंड पामोलिन तेल मिले। जिसमे करीब 250 लीटर दूध जब्त कर जांच शुरू की।

दो दर्जन से अधिक जर्जर विद्यालयों का किया निरीक्षण

निरीक्षण करते हुये सचिव संतोष गुप्ता।

दौसा। राजस्थान उच्च न्यायालय की डीबी सिविल रिट पीटीशन सूओ मोटो बनाम यूनियन ऑफ इंडिया में पारित आदेश की पालना में बुधवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव संतोष अग्रवाल ने दौसा जिले में स्थित मुख्यालय एवं गांवों में स्थित विद्यालय भवनों का निरीक्षण किया गया।

सचिव संतोष अग्रवाल ने बताया कि माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय की डी.बी. सिविल रिट पीटीशन (पीआईएल) संख्या 11613/2025, सुओ मोटो बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया में दिनांक 09.09.2025 को पारित आदेश एवं श्रीमान् सदस्य सचिव महोदय राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव को रैण्डम सैम्पल सर्वे के रूप में विद्यालय भवनों के निरीक्षण के निर्देश प्रदान किए गए हैं। उक्त निर्देशों की पालना में बुधवार को राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मित्रपुरा, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पालावास, राजकीय प्राथमिक विद्यालय मोडा, राजकीय प्राथमिक विद्यालय दांतली जिला दौसा, महात्मा गांधी राजकीय इंग्लिश मिडियम स्कूल कुण्डल जिला दौसा, राजकीय उच्च प्रा. विद्यालय भांवती तहसील बांदीकुई जिला दौसा, राजकीय प्रा. विद्यालय ढांणी सौरतलाई जिला दौसा तथा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेडोली इत्यादि कई विद्यालयों का सर्वे किया गया।

भाजपा कार्यकर्ता जन सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें : विधायक पटेल

- पीएम मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सेवा पखवाड़ा कार्यक्रमों का होगा आयोजन
- कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर भाजपा उत्तर मंडल की कार्यशाला आयोजित

कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते विधायक पटेल।

कोटपूतली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष में सेवा पखवाड़ा कार्यक्रमों को लेकर भाजपा कोटपूतली उत्तर मंडल की कार्यशाला बुधवार को ग्राम देवता के सहज भारती मंदिर में विधायक हंसराज पटेल की अध्यक्षता में आयोजित हुई।

इस मौके पर विधायक पटेल ने सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी देते हुये संगठन को मजबूत बनाने की बात कही। साथ ही कार्यकर्ताओं से जन सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया।

मंडल अध्यक्ष एड. रमेश रावत ने संगठन के चार प्रमुख अभियानों पर कार्यकर्ताओं से विस्तृत चर्चा की जो 17 सितंबर से 02 अक्टूबर तक चलेंगे। इससे पूर्व सभी कार्यकर्ताओं ने मंदिर प्रांगण की साफ-सफाई करके स्वच्छता अभियान का शुभारम्भ किया।

इस दौरान पूर्व मंडल अध्यक्ष शेरसिंह यादव, मंडल महामंत्री सुरेंद्र सिंह तंवर, मंडल उपाध्यक्ष अशोक मान, दाताराम रावत, कैलाश जांगिड़, दुलीचंद यादव, ओबीसी मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष मंगल यादव, एससी मोर्चा के मंडल अध्यक्ष महेश धानका, मनोज डेलीगेट, सरपंच रामनरेंद्र शर्मा, हंसराज रावत, झाबरमल रावत, अशोक जांगिड़, देवकीनंदन टेलर, संजय गुर्जर, राकेश आर्य, सत्यवीर यादव, कैप्टन प्रेम सिंह, राजेश शर्मा, पूर्ण जांगिड़, प्रवीण, सूरजन यादव, दाताराम यादव समेत भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहें।

नाम परिवर्तन

मैं आर्मी नं. 15718862A,रैंक-L/HAV उमरे योगेश बाबूराव, निवासी-बिलवाड़ी, वावदडे, तहसील/जिला-जलगांव, महाराष्ट्र ने भविष्य के समस्त उद्देश्यों के लिए अपने सर्विस रिकॉर्ड में अपने पिताजी का नाम उमरे बाबूराव नामदेव से बदलकर बाबूराव नामदेव उमरे व जन्मतिथि 22-06-1968 से बदलकर 01-04-1968 व अपनी माताजी का नाम लताबाई से बदलकर लताबाई बाबूराव उमरे व जन्मतिथि 07-05-1973 से बदलकर 01-06-1962 कर ली है।

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्यगण मोहम्मद याकूब पुत्र श्री रियाजुद्दीन व नाजरा बानो पत्नी श्री मोहम्मद याकूब, निवासीगण-36, बड़ी मस्जिद के पास, बंजारो का मौहल्ला, हसनपुरा-ए, जयपुर, राजस्थान के पुत्र साजिद खान मेरे अभिभाष्यगण के कहे में नही हैं मेरे अभिभाष्यगण का कहना नही मानता है तथा मेरे अभिभाष्यगण के साथ मारपीट एवं गाली-गलोच करता है जिस कारण मेरे अभिभाष्यगण ने अपने पुत्र साजिद खान को अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्तियों से बेदखल कर दिया है। अब मेरे अभिभाष्यगण का अपने पुत्र से कोई सम्बन्ध व सरोकार नही रहा है यदि कोई व्यक्ति इससे किसी प्रकार का कोई लेन देन या संव्यवहार करता है तो उसके लिये वह स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरे अभिभाष्यगण किसी प्रकार से उत्तरदायी नही होंगे। सूचित रहें।
जयपुर दिनांक (निसारूल फज़ल) एडवोकेट मो.-9983299892

खोया-पाया

मैं अशोक कु.यादव पुत्र कालूराम निवासी-पावटा, जिला-कोटपुतली-बहरोड का निवासी हूं मेरे प्रोपट्री के दस्तावेज दिनांक 14.9.25 को समय 12:06:37 PM पर खो गये FIR LR No. 2896156/2025 जिसमें पट्टा-नक्शा-रजिस्ट्री गुम हो गये पट्टा नं.107 जारी दि. 22.2.23 खसरा नम्बर-1893 किसी को मिले तो सूचना दें- मो-9001674040

नाम परिवर्तन

मैंने मेरा नाम अब्दुल सईद पुत्र अब्दुल गफूर से बदलकर अब्दुल सईद अंसारी पुत्र अब्दुल गफूर रख लिया है भविष्य में मुझे नये नाम से जाना जावे। पता-सी-84-ए, गोविन्दपुरी, पूर्व, रामगढ मोड, आमेर रोड, जयपुर

मैंनें अपना नाम कमरून निसा (QAMRUN NISA) से बदलकर कमरू निशा (KAMARU NISHA) धर्मपत्नी श्री अब्दुल मजीद निवासी 15, गणेश विहार कॉलोनी, दरबार कॉलोनी जयपुर रख लिया है। भविष्य में मुझे कमरू निशा (KAMARU NISHA) के नाम से जाना पहचाना जावें।

मैंने मेरा नाम सत्येंद्र प्रकाश (Satyendra Prakash) से बदल कर सत्येंद्र प्रकाश खारड़िया (Satyendar Prakash Khardia) रख लिया है भविष्य मे ही मुझे इसी नाम से जाना जाए। A-494/e Near Saint Edmunds School, Malviya Nagar Jaipur 302017

मैंने मेरा नाम नीतू (Neetu) से बदल कर नीतू रानी (Neetu Rani) रख लिया है। भविष्य मे मुझे इसी नाम से जाना जाए। A-494/E Near Saint Edmunds School, Malviya Nagar Jaipur 302017

मैं हडियल अनसोयाबेन दामजीभाई M/o आर्मी नंबर 15180961N हवलदार हडियल कमलेश दामजी यूनिट 199 मीडियम रेजिमेंट हूँ, मेरे पुत्र के सैन्य दस्तावेजों में मेरा नाम "अनसोयाबेन" है। जो कि गलत है, मेरा असली नाम हडियल अनसोयाबेन दामजीभाई है और मेरा जन्म तिथि 21/11/1968 है जो कि गलत है मेरा सही जन्मतिथि 01/01/ 1973 है।

मैं हडियल दामजीभाई धनजीभाई F/o आर्मी नं 15180961एन हवलदार हडियल कमलेश दामजी यूनिट 199 मीडियम रेजिमेंट हूं, मेरे पुत्र के सैन्य दस्तावेजों में मेरा नाम "दामजी" है। जो गलत है मेरा असली नाम हडियल दामजीभाई धनजीभाई है।

I BHANWAR KULDEEP SINGH KHANGAROT S/O MANOHER SINGH KHANGAROT R/o. Address:- Vill- SANJHARIYA, POST- THIKARIYA, TH: SANGANER, DIST: JAIPUR has changed my name from BHANWAR KULDEEP SINGH KHANGAROT S/O MANOHER SINGH KHANGAROT to KULDEEP SINGH KHANGAROT S/O MANOHAR SINGH KHANGAROT for all future purposes.

I Prachi Gupta D/o Maneesh Kumar Gupta Declare that my Father name incorrectly mentioned in my education certificate as Manish Gupta instead of Maneesh Kumar Gupta. Address: 6/18, SFS, Mansarovar, Jaipur- 302020

I have changed my name from Roshan Lal Meena to Roshan Meena for all purposes R/o 194 Vivek Vihar, Jagatpura, Jaipur

I have changed my name from Harish Kumar Baharwani to Harish Baherwani R/o Flat No C/206 Ramakrishna Apartment Shipra Path Mansarovar Jaipur

I have changed my name from Amit Kumar to Amit Rawal R/o 200 Shyampuri Kalwar Road Jhotwara Jaipur

कार्यालय नगर निगम जयपुर, हैरिटेज
(पुराना पुलिस मुख्यालय, हवामहल के पीछे, बडी चौपड)
क्रमांक-एफ6()/उपायुक्त लैण्ड/ननिज(हैरिटेज)/2025/622 दिनांक-17/9/25

सार्वजनिक सूचना

श्री अजय सिंह, श्रीमती मधु सोनी एवं श्रीमती शशीकला द्वारा आवेदन पेश कर भूखण्ड संख्या एफ-71 मेजर शेतान सिंह कॉलोनी बनीपार्क विस्तार जयपुर का नाम हस्तांतरण चाहा गया है। जिसमें विक्रय पत्र, उपहार-पत्र व अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है। इस हेतु वचन-बद्धता (अण्डरटेकिंग) प्रस्तुत किया गया है। इस बाबत किसी व्यक्ति, संस्था, फर्म/कम्पनी को कोई आपत्ति/सुझाव हो तो 7 दिवस में अथोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय उपायुक्त (लैण्ड) नगर निगम, जयपुर, हैरिटेज के कार्यालय में अपनी आपत्ति मय कारणों सहित पेश करें। अन्यथा निर्धारित अवधि की समाप्ति के बाद नियमानुसार नाम हस्तांतरण दिये जाने की कार्यवाही सम्पादित कर ली जायेगी।
(तनुजा सोलंकी) उपायुक्त (लैण्ड) नगर निगम जयपुर, हैरिटेज

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 379/2025
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)

चूंकि श्री राजमल शर्मा निवासी एफ 108. प्लॉट न 83-85, नारायण विहार जयपुर ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत प्रन्यास ओलम्पियन इंटरनेशनल एजुकेशन सोसायटी जयपुर 505, लायन्स लेन, हनुमान नगर विस्तार वैशाली नगर जयपुर राजस्थान के सम्बन्ध में जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 10/9/25 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया। आइदा तारीख पेशी 17/11/25
मोहर अदालत — सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग जयपुर

प्रपत्र संख्या INC-26

कंपनी (निगमन) नियम, 2014 के नियम 30 के अनुसार,
कंपनी के पंजीकृत कार्यालय को एक राज्य से दूसरे राज्य में बदलने के लिए समाचार पत्र में प्रकाशित किया जाने वाला विज्ञापन
केंद्र सरकार के समक्ष
(क्षेत्रीय निदेशक)
क्षेत्रीय निदेशक, उत्तर पश्चिमी क्षेत्र पीठ, अहमदाबाद
कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 13 की उप-धारा (4) और कंपनी (निगमन) नियम, 2014 के नियम 30 के उप-नियम (5) के खंड (क) के मामले में
और
सिक्स डिग्रीज शिप मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड (CIN: U70200RJ2024PTC092880) के मामले में, जिसका पंजीकृत कार्यालय प्लॉट संख्या 100, स्कीम संख्या 39, कनकपुरा, जोतवाड़ा, जयपुर, कालवाड़, राजस्थान, भारत, 302012.
आम जनता को सूचित किया जाता है कि कंपनी, कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 13 के अंतर्गत केंद्र सरकार को आवेदन प्रस्तुत करने का प्रस्ताव करती है, जिसमें 28 अगस्त 2025 को आयोजित असाधारण आम बैठक में पारित विशेष प्रस्ताव के अनुसार कंपनी के एसोसिएशन के ज्ञापन में परिवर्तन की पुष्टि की मांग की जाती है ताकि कंपनी अपना पंजीकृत कार्यालय "राजस्थान राज्य" से "हरियाणा राज्य" में परिवर्तित कर सके।
कोई भी व्यक्ति जिसका हित कंपनी के पंजीकृत कार्यालय के प्रस्तावित परिवर्तन से प्रभावित होने की संभावना है, वह एमसीए-21 पोर्टल (www.mca.gov.in) पर निवेशक शिकायत प्रपत्र भरकर या अपनी आपत्तियाँ पंजीकृत डाक द्वारा क्षेत्रीय निदेशक को, जिसमें उनके हित की प्रकृति और विरोध के आधार बताते हुए एक हलफनामा शामिल हो, इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से चौदह दिनों के भीतर, क्षेत्रीय निदेशक उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, आरओसी भवन, रूपल पार्क सोसाइटी के सामने, अंकुर बस स्टॉप के पीछे, नारनपुरा, अहमदाबाद-380013, गुजरात, के पते पर भेज सकता है। इसकी एक प्रति आवेदक कंपनी को उसके पंजीकृत कार्यालय, ऊपर उल्लिखित पते पर भेजनी होगी:
के लिए और की ओर से:
सिक्स डिग्रीज शिप मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड
हस्ताक्षरकता/- मुकुल बजाज (निदेशक) डीआईएनः 08368754
हस्ताक्षरकर्ता/- अमित कुमार (निदेशक) डीआईएनः 11240354

आम सूचना मेरे अभिभाष्य रईस अहमद पुत्र स्व. कल्लू खां, निवासी-मकान नम्बर-6, फाजिलशाह शनि मंदिर के पास, बास बदनपुरा, जयपुर का पुत्र साहिल अहमद पुत्र रईस अहमद उनके कहने, सुनने में नही है, उनके साथ गलत व्यवहार एवं गलत संगत करता है, घर में कोई सहयोग नही करता है, मेरा अभिभाष्य अपनी समस्त प्रकार की चल व अचल सम्पत्ति, सामाजिक सम्बन्धो से अपने पुत्र साहिल को बेदखल करता है। इससे मेरे अभिभाष्य को कोई वास्ता नही है। कोई भी व्यक्ति इससे किसी भी प्रकार का सव्यवहार करता है तो उसके लिये वह स्वयं ज़िम्मेदार होगा।
(मुकेश सैन एडवोकेट) मो.नं.93145-63517

खोया पाया

मेरे आवास प्लाट नं.8, प्रेम कॉलोनी, टोंक रोड, जयपुर के मूल सोसायटी मूल, रसीद, साईट प्लान जो कि दि दिशा को-ओपरेटिव हाउसिंग सोसायटी लिमिटेड, जयपुर द्वारा गीता देवी महरवाल पत्नी श्री रामचरण महरवाल के नाम से जारी है खो गये है कृपया मिलने पर सूचित करें-9166511234

मेरे प्लाट नम्बर- 626, उदय विहार, JDA कॉलोनी जयपुर का अलाटमेंट लेटर कहीं खो गया मिलने पर सूचित करें - 8949005479

मेरा फ्लैट संख्या 42/08/01 मानसरोवर जयपुर के मूल आवंटन कम कब्जा पत्र एवं हैन्डिंग ओवर सर्टिफिकेट गुम हो गये है मिलने पर सम्पर्क करें। पुल्कित मनुजा मो-8690109620

मेरे आवास 22/13/02, स्वर्ण पथ, मानसरोवर का नोड्यूज सर्टिफिकेट कहीं खो गया है जो की राज. आवासन मण्डल द्वारा मनोज भारद्वाज के नाम से जारी था कृपया मिलने पर सूचित करें सुनील सोनी 9414241197

यह कि मेरा नगर पालिका मण्डल किशनगढ-रेनवाल के द्वारा राज. ग्रान्ट एक्ट 1961 में जारी पट्टा जो कि यासीन मोहम्मद पुत्र श्री हाजी सुण्डा जाति मुसलमान निवासी कि.रेनवाल उपक्षेत्र सं.09 दिनांक 23.10.1983 के नाम जारी था। जिसका क्षेत्रफल 21 फुट x 9 फुट = 21 वर्गगज था। जिसकी मूल प्रति मेरे द्वारा गुम हो गई है। अतः उक्त पट्टा किसी व्यक्ति को मिले तो मुझे 7740958041 नम्बर पर सम्पर्क करें।

जयपुर विकास प्राधिकरण की अनुमोदित आवासीय योजना आफिसर्स कोलोनी के भूखंड संख्या- A-18 के मूल पट्टे, साइट प्लान व स्टांप्स व रजिस्ट्री दिनांक- 27.06.2018 आदि कहीं गुम हो गए हैं। मिलने पर सूचित करें। महेश कुमार शर्मा, (मुख्त्यारआम वाग्मी शर्मा व सासाबिन्दु त्रिपाठी) निवासी प्लॉट नंबर- 7-न-2 जवाहर नगर, जयपुर। मो. नं- 9636781994

मेरे भूखण्ड सं-54 नागरिक गृह निर्माण सहकारी समिति की योजना विजय नगर जयपुर का सहकारी समिति से जारी मूल आवंटन-पत्र, साईट प्लान और सोसाइटी रसीद जयपुर गुम हो गई है सूचित करे- सारिका अग्रवाल मो-9828595345

मेरे भूखण्ड सं-10 श्री जनता को-ऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी लि. की योजना कानराम नगर का मूल साईट प्लान, सोसाइटी रसीद कही गुम हो गई है सूचित करे- नीलू जांगिड मो-9351682989

मेरे प्लाट नंबर B-32 सरस्वती नगर का मूल इकरार नामा जो कि उदय भानु माहेश्वरी और शंकर लाल मीणा के बीच 15/11/1999 को हुआ हे जो जयपुर में खो गया है सूचित करे हरि सिंह नरूका मो 9799332960

राजस्थान सरकार
कार्यालय जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, जयपुर
क्रमांकः न्याय/विस्फोटक मैगजीन/2025/2378 दिनांकः 16-9-25
लोक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैसर्स शिवदर्श एक्सप्लोसिव एण्ड एनर्जी के साझेदार (1) प्रकाश चन्द गुर्जर पुत्र बाबूलाल गुर्जर निवासी ढाणी चौधरी वाली ग्राम हात्याज, जिला सीकर। (2) सुशील कुमार गुर्जर पुत्र श्री मंगल चन्द गुर्जर निवासी मामोला जिला सीकर द्वारा राजस्व ग्राम पातुड़ी तहसील दूदू जिला जयपुर की खसरा संख्या नं. 11 व नया खसरा संख्या 663/11 की 0 .69 है। उक्त भूमि पर विस्फोटक नियम 2018 के तहत संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक फरीदाबाद द्वारा दिनांक 10.9 .2025 को किए गए अनुमोदन अनुसार मैग्जीन निर्माण की स्वीकृति चाहने के संबंध में अनापत्ती प्रमाण पत्र चाहने हेतु प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया गया।
उक्त मैग्जीन निर्माण की स्वीकृति के संबंध में अनापत्ती प्रमाण पत्र किए जाने हेतु ग्रामवासी ग्राम पातुड़ी तहसील दूदू जिला जयपुर एवं अन्य किसी भी आम नागरिक को कोई आपत्ति हो तो उनके कारणों सहित अधोहस्ताक्षकर्ता के कार्यालय में उक्त लोक सूचना के प्रकाशित होने की दिनांक से एक माह की अवधि में प्रस्तुत को उक्त अवधि के पश्चात प्रस्तुत आपति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा। यह लोक सूचना विस्फोटक नियम 2008 के नियम 103(3) के तहत मेरे हस्ताक्षर व कार्यालय की मुद्रा सहित आज दिनांक को जारी की गई है।
(डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी) जिला मजिस्ट्रेट, जयपुर

कार्यालय नगर परिषद् शाहपुरा, जयपुर (राज0)
(पीपली तिराहे के पास, शाहपुरा,जयपुर)
Email:- shahpura.jaipur@gmail.com
क्रमांकः-न.प.शा./भूमि/2025-26/183 दिनांक- 12.09.2025
आपत्ति आमन्त्रण सूचना
सूचित किया जाता है कि निम्नांकित आवेदको द्वारा नगर परिषद शाहपुरा, जयपुर में कृषि भूमि नियमन/69ए पट्टा/ उपविभाजन/पुर्नगठन/भवन निर्माण हेतु आवेदन किया गया है।

क्र. सं.	आवेदक का नाम व पिता /पति का नाम	स्थित भवन/भूमि का मौहल्ला रास्ता , खसरा नं. व दिशा	कुल क्षेत्रफल (वर्ग गज)	विशेष विवरण
1	प्रिंसिपल महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, जाजै खुर्द, शाहपुरा,जयपुर	जाजैखुर्द, शाहपुरा, जयपुर खसरा नं. 1526/250, पूर्व – खाली भूमि पश्चिम– स्कुल का खेल मैदान , उत्तर– स्कुल का खेल मैदान , दक्षिण – ग्राउण्ड	4395.60	संस्थानिक पट्टे हेतु
2	कृष्णा आई हॉस्पिटल प्रोपराईटर प्रकाश चन्द यादव पुत्र श्री जगदीश प्रसाद यादव	कृष्णा आई हॉस्पिटल, बिदारा, शाहपुरा, जयपुर, खसरा नं. 1757/800, पूर्व– 33 फुट आम रास्ता, पश्चिम– दिल्ली जयपुर हाइवे एन.एच. 48, उत्तर – 40 फीट आम रास्ता , दक्षिण– भागीरथ का प्लॉट	403.33	संस्थानिक पट्टे हेतु

अतः किसी को भी इस बाबत् आपत्ति हो तो 07 दिवस में मय सबूत लिखित में अद्योहस्ताक्षरकर्ता को आपत्ति पेश करे, बाद अवधि विचार संभव नही होगा।
राज.संवाद/सी/25/10204 आयुक्त

कार्यालय नगरपालिका मण्डल मनोहरपुर जिला जयपुर
E-mail : npmanoharpur@rajasthan.gov.in
क्रमांक :- न.पा.मनो./2025-26/1670 दिनांक :- 16.09.2025
आपत्ति आमंत्रण सूचना
एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका मनोहरपुर क्षेत्र में स्थित विभिन्न भूखण्डों की निम्नानुसार पत्रावली/प्रार्थना पत्र मय साईट प्लान राजस्थान नगरीय क्षेत्र कृषि भूमि के अकृषि उपयोग के अनुज्ञा एवं आवंटन नियम 2012 के तहत् निस्तारण हेतु विचाराधीनहै

क्र.सं.	नाम	पिता/पतिकानाम	पता	क्षेत्रफल	विषय
1.	श्री दाताराम भडाणा	श्री नाथू राम भडाणा	श्री श्याम मार्केट, मनोहरपुर S-186 A	67.49 वर्गमीटर वाणिज्यक	नियमन
2.	श्री शिव राम गुर्जर	श्री रामेश्वर प्रसाद गुर्जर	श्री श्याम मार्केट, मनोहरपुर S-186 B	67.49 वर्गमीटर वाणिज्यक	नियमन
3.	श्रीमती सुमन यादव	श्री कैलाश चंद यादव	श्री श्याम मार्केट, मनोहरपुर P – 68, 69	246.29 वर्गमीटर आवासीय	नियमन
4.	श्रीमती गुलाब देवी	श्री मोहन लाल	श्री श्याम मार्केट, मनोहरपुर P-18	104.55 वर्गमीटर आवासीय	नियमन
5.	श्री रामेश्वर प्रसाद सामरिया	श्री भोलु राम सामरिया	श्री श्याम मार्केट, मनोहरपुर S-182B	33.97 वर्गमीटर वाणिज्यक	नियमन
6.	श्रीमती केशरी देवी	श्री लक्ष्मी नारायण यादव	श्री श्याम मार्केट, मनोहरपुर P-05	127.32 वर्गमीटर आवासीय	नियमन
7.	श्री सुभाष यादव	श्री रामचन्द्र यादव	श्री श्याम मार्केट, मनोहरपुर P-26	104.55 वर्गमीटर आवासीय	नियमन
8.	श्री जगदीश प्रसाद बुनकर	श्री रघु नाथ बुनकर	श्री श्याम मार्केट, मनोहरपुर P-04	124.01 वर्गमीटर आवासीय	नियमन
9.	श्री रामेश्वर दयाल बुनकर	श्री प्रभाती लाल बुनकर	श्री श्याम मार्केट, मनोहरपुर P-03	130.88 वर्गमीटर आवासीय	नियमन

उक्त भूमि के नियमन के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई भी आपत्ति है तो वह आपत्ति को सबूत मय लिखित में इस सूचना प्रकाशन की तिथि से सात दिवस के अंदर इस कार्यालय में अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है। अवधि पश्चात् प्राप्त किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति स्वीकार नहीं की जावेगी एवं तदानुसार प्रकरण का निस्तारण कर दिया जावेगा।
उक्त सूचना आज दिनांक 16.09.2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं सील मुहर द्वारा प्रसारित किया गया।
राज.संवाद/सी/25/10243 अधिशाषी अधिकारी

संक्षिप्त

भारतीय रिजर्व बैंक शिविर आज

मानपुरा माचेडी। निकटवर्ती ग्राम पंचायत घटवाड़ा में राजस्थान ग्रामीण बैंक जयपुर द्वारा गुरुवार को प्रात: 10:00 बजे से भारतीय रिजर्व बैंक शिविर का आयोजन होगा। वित्तीय समावेशन राजस्थान ग्रामीण बैंक जयपुर द्वितीय के मैनेजर अभय सिंह ने बताया कि इस शिविर में ग्रामीणों को शिविर में भाग लेने से भारतीय रिजर्व बैंक व आम नागरिको के साथ ऑनलाइन वार्ता - संवाद के माध्यम से सामाजिक सुरक्षा योजनाएं, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा नवीनतम जानकारी समस्या समाधान व बैंक से संबंधित अनेक जानकारियां दी जाएगी। शिविर के माध्यम से भारतीय रिजर्व बैंक राजस्थान ग्रामीण बैंक से सीधा संवाद का आधार प्रदान रहेगा।

सेवा शिविरों में अनेक प्रकरणों का मौके पर निस्तारण

राजगढ़। उपखंड क्षेत्र के पलवा एवं फिरोजपुर ग्राम एवं शहरी क्षेत्र में नगर पालिका परिसर में सेवा शिविरों का आयोजन किया गया। इनमें मौके पर अनेक मामलों का निस्तारण किया गया। पंचायत समिति के विकास अधिकारी विक्रम सिंह गुर्जर ने बताया कि पलवा ग्राम में आयोजित शिविर में क्षेत्रीय विधायक मांगे लाल मीणा की मौजूदगी में अंजना मीना एवं अन्य को पशु बीमा पॉलिसी का वितरण किया गया। खंड क्षेत्र के फिरोजपुर ग्राम में तहसीलदार कल्याण सहाय मीणा एवं अन्य की मौजूदगी में आयोजित शिविर में मौके पर अनेक समस्याओं का निराकरण किया गया।

शिविर का शुभारंभ

खैरथल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75 वे जन्मदिन पर सरकार की और से बुधवार को शुरू किए गए शहरी व ग्रामीण सेवा शिविर का शुभारंभ प्रबंध निदेशक रीको एवं खैरथल तिजारा जिला प्रभारी सचिव शिवांगी स्वर्णकार ने खैरथल के वाल्मीकि सामुदायिक भवन में किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर किशोर कुमार, राष्ट्रीय परिषद भाजपा सदस्य पूर्व विधायक रामहेत यादव, जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर, सहित अधिकारी जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। इसके उपरांत जिला प्रभारी सचिव शिवांगी स्वर्णकार ने जिला कलेक्टर किशोर कुमार के साथ जिले की किशनगढ़ बास पंचायत समिति की ग्राम पंचायत महरमपूर ग्रामीण सेवा शिविर का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं को देखा व अधिकारी कार्मिकों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

प्रतियोगिता में जीता गोल्ड

मनोहरपुर। कस्बे के श्रीकृष्ण विद्या मंदिर के छात्र सिद्धार्थ यादव (पुत्र श्री कालूराम यादव - जेलर, निवासी नवलपुरा) ने 69वीं जिला स्तरीय 14 वर्षीय साइकिलिंग प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए मनोहरपुर का नाम रोशन किया। इस दौरान सिद्धार्थ ने 500 मीटर रेस में गोल्ड मेडल तथा 10-15 किलोमीटर व 5-7 किलोमीटर रेस में सिल्वर मेडल अपने नाम किए। खास बात यह है कि पिछली प्रतियोगिता में भी उन्होंने तीनों स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक जीतकर जिले को गौरवान्वित किया था।

अवैध चैजा पत्थर से भरा एक ट्रैक्टर ट्रॉली जब्त

निवाई। वन विभाग द्वारा अवैध परिवहन पर कार्रवाई करते हुए वन क्षेत्र अधिकारी धारीलाल बैरवा के नेतृत्व वन क्षेत्र बोरंगी से अवैध चैजा पत्थर से भरी हुई एक ट्रैक्टर ट्रॉली को जब्त किया है। इस दौरान वनपाल रचना खंगार, सहायक वनपाल मोहनलाल मीणा, वनरक्षक डोली मीणा, रिंकू जाट, कमलेशकुमार मीणा, वन मित्र नरेश सैनी, वनरक्षक विनोद गुर्जर व राजेश नायक सहित कई कर्मचारी मौजूद थे।

सिरस में धूमधाम मनाई भगवान विश्वकर्मा जयंती

सिरस। सिरस में लोगों ने भगवान विश्वकर्मा जयंती धूमधाम से मनाई। इस दौरान कई मिस्त्री, हेल्पर, शिल्पकार, मूर्तिकार, डिजाइनर व अन्य मजदूरों ने विश्वकर्मा जयंती पर भगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना की। इसके बाद सभा का आयोजन हुआ। जिसमें ताराचंद बैरवा, भागचंद योगी, हंसराज बैरवा, गोविंद वर्मा, पप्पू बैरवा ,मंदराम बैरवा, भेरूलाल खंगार, प्रहलाद गोस्वामी, छीतर खंगार व लाला बैरवा सहित कई मजदूर मौजूद थे।

'सरकार बेहतर स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए कृत संकल्पित है'

जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेन्द्र सिंह ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

- **स्वस्थ नारी सशक्त अभियान का शुभारंभ, उप जिला अस्पताल पावटा पर जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन**

कोटपूतली/पावटा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश पर 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक आयोजित किए जाने वाले सेवा पर्व पखवाड़ा के तहत चिकित्सा विभाग द्वारा उप जिला अस्पताल पावटा में बुधवार को आयोजित स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान के जिला स्तरीय कार्यक्रम का शुभारम्भ जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेन्द्र सिंह ने फीता काटकर किया। इस दौरान विराटनगर विधायक कुलदीप धनखड़, बानसूर विधायक देवीसिंह शेखावत, जनप्रतिनिधि सुरेश बादलीवाल, जगदीश यादव सहित प्रबंध निदेशक राजस्थान चिकित्सा सेवाएं निगम लिमिटेड एवं जिला प्रभारी सचिव पुखराज सैन, जिला कलेक्टर प्रियंका गोस्वामी, एडीएम ओमप्रकाश सहारण, एसडीएम कपिल कुमार उपाध्याय, एएसपी वैभव शर्मा सहित आमजन उपस्थित रहे।

सांसद ने प्रधानमंत्री को क्षेत्रवासियों की ओर से जन्मदिवस की शुभकामनएं देते हुए उनके निरोगी काया ओर दीर्घायु की प्रार्थना की. उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री पीएम बाद में जनता के सेवक पहले हैं, उन्होंने सदैव आमजन हित में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए विभिन्न योजनाओं का संचालन किया। उन्होंने चिकित्सा विभाग अधिकारियों को निर्देशित किया कि आमजन को शिविर के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य और इलाज मुहैया कराने के लिए संवेदनशीलता से कार्य करें एवं स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं कि जानकारी प्रदान करें एवं सेवा भाव से कार्य करें। उन्होंने कहा कि मातृ शक्ति को सशक्त करने के लिए सरकार कृत संकल्पित है, महिला मुखी विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। महिलाओं को बेहतर चिकित्सा एवं विभिन्न जांच सुविधाएं मुहैया कराने के लिए शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसका माता व बहने अधिकाधिक लाभ उठाएं। विधायक विराटनगर ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशन में राजस्थान सरकार आमजन को बेहतर स्वास्थ्य और इलाज प्रदान करने के लिए निरन्तर प्रयासरत है, विभिन्न योजनाओं के माध्यम से नि:शुल्क जांच व दवा प्रदान की जा रही है। उन्होंने कहा कि 17 सितम्बर से आयोजित शहरी एवं ग्रामीण शिविरों में एक ही स्थान पर विभिन्न सुविधाएं प्रदान की जा रही है। उन्होंने आमजन से अपील की है कि ज्यादा से ज्यादा शिविरों में पहुंचकर सुविधाओं का लाभ उठाएं। प्रभारी सचिव ने कहा कि स्वस्थ नारी ही स्वस्थ समाज व राष्ट्र का निर्माण करती है। शिविर में महिलाओं को विभिन्न जांचों एवं उपलब्ध दवाओं का लाभ देकर बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करें।

विश्वकर्मा जयन्ती को राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में मनाया

दौसा। भारतीय मज़दूर संघ, जिला दौसा द्वारा स्थानीय कृषि उपज मण्डी, दौसा स्थित पल्लेदार विश्राम गृह में भामसं के जिला उपाध्यक्ष राजेन्द्र बैरवा की अध्यक्षता में भगवान विश्वकर्मा जी की जयन्ती को राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक मनाया गया। जिला प्रचार मंत्री एवं मीडिया प्रभारी राकेश कुम्भकार ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता, भगवान विश्वकर्मा जी एवं दत्तोपंत जी ठेंगड़ी के चित्रों पर माल्यार्पण कर, दीप प्रज्वलन कर एवं श्रमिक गीत के साथ किया गया। इस अवसर पर श्रमिकों को मिष्ठान का वितरण भी किया गया। भारतीय मज़दूर संघ के जिला मंत्री महेश कुमार शर्मा ने सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को भगवान विश्वकर्मा जयन्ती एवं राष्ट्रीय श्रम दिवस की बधाई देते हुए कहा कि स्वयं परमपिता परमेश्वर ही विश्व के प्रथम श्रमिक हैं।

प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिवस पर सुकन्या योजना से बेटियों को जोड़ा

डॉ. सतीश पूनियां ने रक्तदान शिविर कार्यक्रम में रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र सौंपे।

- **सतीश पूनियां ने कोटा में सेवा पखवाड़ा कार्यक्रमों में लिया भाग, बेटियों के सशक्तिकरण को बताया राष्ट्रिनर्माण का आधार**

कोटा/जयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर पूरे राजस्थान में सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत विविध जनसेवा कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी क्रम में भाजपा के वरिष्ठ नेता और हरियाणा प्रभारी डॉ. सतीश पूनियां ने कोटा में सुकन्या समृद्धि योजना के तहत बालिकाओं के खाते खुलवाने के कार्यक्रम में भाग लिया। साथ ही, रक्तदान शिविर, फल वितरण और जनसेवा के अन्य कार्यक्रमों में भी सक्रिय भागीदारी निभाई।डॉ. पूनियां ने इस अवसर पर कहा कि, "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जमीन से लेकर भारत के स्वाभिमान को ऊँचा उठाने का काम किया है। मोदी अब केवल व्यक्ति नहीं, एक विचार बन चुके हैं।" उन्होंने सुकन्या समृद्धि योजना को बेटियों के सशक्तिकरण की दिशा में एक अहम पहल बताया। कोटा में नक्षत्र संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में डॉ. पूनियां ने सुकन्या समृद्धि योजना के अंतर्गत डाकघर में बालिकाओं के खाते खुलवाने की पहल की सराहना की।

उन्होंने संस्थान की नीलम विजय और उनकी टीम को 24 अक्टूबर तक अधिकतम खाते खुलवाने के संकल्प पर शुभकामनाएं दीं। उल्लेखनीय है कि सतीश पूनियां ने अपने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष कार्यकाल (2019-2023) के दौरान पूरे राजस्थान में प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिवस पर सेवा पखवाड़ा को व्यापक स्तर पर लागू किया। इन वर्षों में एक लाख से अधिक बालिकाओं के खाते सुकन्या योजना के तहत खुलवाए गए। पूनियां स्वयं हर वर्ष अपने जन्मदिवस (24 अक्टूबर) पर भी सेवा कार्यों और बेटियों के लिए खाते खुलवाने का अभियान जारी रखते हैं। सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत भाजपा कोटा जिला टीम, तेरापंथ युवक परिषद और कैट महिला विंग द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर और फल वितरण कार्यक्रम में भी पूनियां शामिल हुए। उन्होंने रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र सौंपे।

गायों को गुड़ खिलाकर प्रधानमंत्री मोदी की दीर्घायु की कामना

शिविर का शुभारंभ करते पूर्व विधायक रामहेत यादव।

- **भाजपा के पखवाड़ा कार्यक्रम का बुधवार को राष्ट्रीय परिषद भाजपा सदस्य पूर्व विधायक रामहेत के नेतृत्व में बंबोरा हनुमान मंदिर पर साफ सफाई कर दिया स्वच्छता का संदेश दिया**

किशनगढ़ बास। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75 वे जन्मदिन पर राष्ट्रीय परिषद भाजपा सदस्य पूर्व विधायक रामहेत यादव ने बुधवार को स्वच्छता सेवा पखवाड़ा के प्रथम दिन किशनगढ़ बास के बंबोरा हनुमान मंदिर पर साफ सफाई कर स्वच्छता का संदेश लोगों को दिया वहीं नजदीकी श्री कृष्ण गौशाला में गायों को गुड़ खिलाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दीर्घायु एवं देश के उज्जवल भविष्य के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर हनुमान मंदिर के पुजारी ने केक काटकर पूर्व विधायक सहित कार्यकर्ताओं का मुंह मीठा कराया।

राजस्थान सरकार की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर शुरू किए सेवा ही संकल्प हर शहर,हर गांव सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत नगर पालिका की ओर से शहर में शुरू किए गए शहर चलों अभियान के तहत बास कृपाल नगर की अन्नपूर्णा रसोई पर वार्ड 2,4 व 25 के लोगों के लिए लगाएं शिविर एवं किशनगढ़ बास के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान का विधिवत शुभारंभ किया।

पूर्व विधायक रामहेत यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 75 वा जन्मदिन मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के तोहफे के साथ हर घर के लिए यादगार बनें ऐसे प्रयास हम सबको मिलकर करने होंगे इसमें विशेष जिम्मेवारी वार्ड पार्षद की बनती है कि वह अपने अपने वार्ड के लोगों के कामों को पूरी जिम्मेदारी के साथ कराए। उन्होंने इस दौरान अधिकारी कार्मिकों को भी हिदायत दी हैं कि किसी भी प्रकार की गड़बड़ी और कार्य में विलम्ब करने की शिकायत की पुष्टि सही होने पर कार्रवाई के लिए तैयार रहें।कार्यक्रम के दौरान जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर, तारामणि सतीश सिंघल, भाजपा मंडल अध्यक्ष मनोज मित्तल, भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजेश कुमार बटवाडा, पूर्व मंडल अध्यक्ष उमेश कांत वशिष्ठ, विश्वास यादव सहित शहर वार्ड पार्षदों का ईओ राहुल अग्रवाल, सुरेश शर्मा, सुमित कुमार, साहिल सोनी सहित कर्मचारियों ने माला पहनाकर सम्मान किया।

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के तहत बैठक आयोजित

उद्योग लगाने के ईच्छुक व्यक्तियों की सिंतबर को कार्यालय में बैठक आयोजित की

चौंमू/कालाडेरा। चौंमू शहर में स्थित कृषि उपज मण्डी समिति के सभागार में केंन्द्र सरकार द्वारा संचालित सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाईयां लगाने वाले लोगों के लिये प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना (पीएम एफएराई) की शुरूआत की गई। इस योजना के तहत कृषि जिन्स आधरित लगाये हुए प्रसंस्करण उद्योगों के विस्तारीकरण या टमाटर के प्रसंस्करण हेतु नये उद्योग लगाने पर 35 सब्सिडी दी जायेगी या विस्तारीकरण यह इकाई शहरी एंव ग्रामीण क्षेत्र में कही भी लगाई जा सकती है। इस योजना की जानकारी देने के लिये व उद्योग लगाने के ईच्छुक व्यक्तियों की सिंतबर को कार्यालय में बैठक आयोजित की गई। अधिकारीयो से मिली जानकारी के अनुसार आटा चक्की, मसाला चक्की, सरसों का तेल निकालने की मशीन, मसाला उद्योग आदि के प्लांट का विस्तारीकरण करने वाले व टमाटर का प्रसंस्करण करने के पात्र लोग योजना का लाभ ले सकते हैं। खास बात यह है कि अगर कोई व्यक्ति पूर्व में चल रहे प्लांट को भी मॉडीफाइड करना चाहता है वो भी योजना का लाभ ले सकता है।

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना में लागत का 35 प्रतिशत या अधिकतम 10 लाख अनुदान का प्रावधान है। योजना से ज्यादा से ज्यादा लोगों को लाभान्वित करने के लिए प्रयास किए जा रहे है। इस अवसर पर सचिव वृतिका शर्मा, व्यापार मंडल अध्यक्ष सुनिल कुमार अग्रवाल, डीआरपी मेंबर, बैंक प्रतिनिधि समस्त व्यापारी, किसान , मण्डी समिति कर्मचारी भी उपस्थित रहें।

भरतपुर में भाजपाइयों ने प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन पर रक्तदान किया

रक्तदान षिविर का आयोजन किया।

- **भाजपा जिलाध्यक्ष षिवानी दायमा के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जन्मदिन मनाया**

भरतपुर। सेवा पखवाड़ा के अन्तर्गत भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जन्मदिन भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय पर धूमधाम से मनाया गया। भाजपा जिलाध्यक्ष षिवानी दायमा के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जन्मदिन जोषिले रुप में मनाया। प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने रक्तदान षिविर का आयोजन किया। षिविर का उद्घाटन जिलाध्यक्ष षिवानी दायमा ने फीता काटकर किया। 'रक्तदान महादान' की थीम पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने बढ़ चढ़कर रक्तदान किया। रक्तदाताओं को सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करायी गयी।

इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष षिवानी दायमा ने कहा कि रक्तदान सबसे बडा मानव धर्म है। भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता सेवा कार्यों के लिए सदैव तत्पर हैं। सेवा पखवाड़ा केवल एक कार्यक्रम ही नहीं हैं बल्कि भाजपा की आत्मा है। रक्तदान के माध्यम से हम न केवल लोगों की जिंदगी बचाते हैं बल्कि समाज में सहयोग और मानवता की अलख जगाने का कार्य करते है। रक्तदान षिविर के जिला संयोजक कृशणा जाट ने कहा कि युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने रक्तदान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को रक्तदान अवष्य करना चाहिए।

रक्तदान षिविर में पूर्व जिलाध्यक्ष डॉ. जीतेन्द्र सिंह एवं मनोज भारद्वाज, पूर्व जिला उपाध्यक्ष गिरधारी गुप्ता, जिला उपाध्यक्ष योगेन्द्र राजू कटारा, श्यामसुन्दर गौड़, मनोज खण्डेलवाल, मोहन रारह, रज्जन सिंह, वीरेन्द्र बुढ़वार, पूर्व जिला उपाध्यक्ष अभयवीर सोलंकी, पूर्व जिला महामंत्री भगवानदास शर्मा, जिला मंत्री कुषपाल सिंह राजावत, पूर्व जिला मंत्री दिनेष भातरा, जिला मीड़िया प्रभारी एवं जिला प्रवक्ता डॉ. वीरेन्द्र पचौरी, जिला संयोजक आई.टी. विभाग अनिल गोयल, जिला संयोजक सोषल मीड़िया आषीष खण्डेलवाल, जिला कार्यालय प्रभारी उत्तम शर्मा, किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष गौरव लुधावई, एस.टी. मोर्चा जिलाध्यक्ष तेजवीर मीणा, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष सौरभ ताखा, रामकुँवर चुरारी, कृष्णा जाट, मोहित चतुर्वेदी, संजीव शर्मा, योगा सहनावली, खजान सिंह, अजीत पला, प्रभाकर फौजदार, निक्की शर्मा, अनुराग तमरौली, अनामिका चौधरी, राहुल चौधरी वीरेन्द्र गुर्जर, अभयसिंह गुर्जर, कपिल खौंकर, कन्हैया जादौन, आदि कार्यकर्ता मौजूद रहें।

विद्यार्थियों को कैरियर, शिक्षा के बारे में किया जागरूक

निवाई। डॉ. केएन मोदी विश्वविद्यालय में कैरियर काउंसिल के माध्यम से आयोजित कार्यक्रम में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय टोंक के कक्षा 9 से 12 वीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। विश्वविद्यालय के पीआरओ ठा. तनुज सैंगर ने बताया कि विश्वविद्यालय में टोंक के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को कैरियर, शिक्षा व भारतीय संस्कृति के बारे में जागरूक किया जाता है। जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को भविष्य मे शिक्षा संबंधी परेशानियों को आसानी से दूर करने की प्रतिभा जागरूक होती है। कार्यक्रम में एडमिशन विभाग के प्रमुख आकाश सारस्वत द्वारा विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय का भ्रमण कराया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रो-प्रेसिडेंट प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार, रजिस्ट्रार डॉ. धीरज पांडे, आईटी विभागाध्यक्ष अनुज तिवारी, डीन डॉ. जेपी दूबे, अनुप्रयुक्त विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. विध्या नायर, एडमिशन विभाग के भागचंद शर्मा, हरीश गौतम, कमलेश, कल्पना यादव, मजहर व धोलूराम सहित सभी कर्मचारी व अधिकारी मौजूद थे।

सार-समाचार

संपतराम सुवालका बने जिला कार्यकारी अध्यक्ष

देवली। अखिल भारतीय कलवार कलाल कलार जयसवाल महासभा के राष्ट्रीय संरक्षक पुरण चंद झरीवाल एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव कुमार जायसवाल की अनुशंसा एवं राजस्थान प्रभारी लोकेश कुमार जायसवाल की सहमति पर टोंक जिला अध्यक्ष गुलाबचंद जायसवाल ने जिला कार्यकारिणी का विस्तार किया। इस क्रम में देवली निवासी संपतराम सुवालका को जिला कार्यकारी अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। देवली निवासी संपतराम सुवालका को जिला कार्यकारी अध्यक्ष बनाए जाने पर स्थानीय उक्त समाज के लोगों मैं खुशी की लहर दौड़ पड़ी। इस अवसर पर समाज के लोगों ने संपतराम सुवालका को शुभकामनाओं के साथ बधाइयां भेंट की। इस मौके पर जिला कार्यकारी अध्यक्ष संपतराम सुवालका ने राष्ट्रीय संरक्षक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष राजस्थान प्रदेश प्रभारी और टोंक जिला अध्यक्ष का आभार व्यक्त किया। एवं समाज के हित में कार्य करने का संकल्प लिया।

अध्यापक को एपीओ करने के आदेश पर हाई कोर्ट ने लगाई रोक

शाहपुरा। सीकर जिले के धोद ब्लॉक की राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बल्लूपुरा में कार्यरत अध्यापक को एपीओ किए जाने से जुड़े मामलें की याचिका पर हाई कोर्ट ने बुधवार को सुनवाई कर एपीओ आदेश एवं कार्यमुक्त करने के आदेश पर रोक लगा दी है तथा प्रारंभिक शिक्षा विभाग के निदेशक, सीकर के जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा) सहित दो अन्य को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। याचिकाकर्ता नोला राम के अधिवक्ता संदीप कलवानिया ने बताया कि प्रार्थी अध्यापक के पद पर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बल्लूपुरा ब्लॉक धोद में कार्यरत है। जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा) ने 29 अगस्त को आदेश जारी कर प्रार्थी को एपीओ कर दिया और एपीओ के दौरान उसका मुख्यालय कार्यालय मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी नेछवा कर दिया गया। जिसकी पालना में प्रार्थी अध्यापक को कार्यमुक्त कर सीबीईओ नेछवा में उपस्थिति देने के निर्देश दिए गए थे। उन्होंने बताया कि जिला शिक्षा अधिकारी ने नियमों की अवहेलना कर राजनीतिक हस्तक्षेप के चलते प्रार्थी को एपीओ किया गया है। जो नियम विरुद्ध एवं अनुचित है लिहाजा एपीओ आदेश को निरस्त किया जाए। इस पर हाई कोर्ट ने एपीओ आदेश एवं कार्यमुक्त करने के आदेश पर रोक लगाकर शिक्षक को राहत दी है।

शिविर का शुभारंभ

चौंमू / कालाडेरा। कालाडेरा नगर पालिका परिसर में बुधवार को सेवा पखवाड़े के तहत शहरी शिविर का हुआ शुभारंभ, नगर पालिका में कार्यरत अधिकारी ने शिविर का उद्घाटन किया। शिविर में 16 विभागों ने योजनाओं की जानकारी दी , उपस्थित कर्मचारियों ने स्वच्छता की शपथ दिलाई साथ ही लाभार्थियों को प्रमाण पत्र भी दियें गए। इस अवसर पर नगर पालिका के अधिकारी जय जांगिड़, अर्जुन गुर्जर सहीत विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

मोदी के जन्मदिन पर किया रक्तदान

अलवर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन पर केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव व वन राज्य मंत्री संजय शर्मा ने रक्तदान किया। केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने जगंनाथजी मंदिर पहुंचकर पूजन और हवन कराया। इसके अलावा रोटरी क्लब की ओर से आयोजित शिविर में बीजेपी के कई नेता व कार्यकर्ताओं ने रक्तदान किया। जिलेभर के कई मंदिरों में पार्टी के नेता और कार्यकर्ताओं ने पूजन कराया। कार्यक्रम में पूर्व विधायक बनवारी लाल सिंघल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 सालों में बड़े काम किए। वहीं कांग्रेस 60 साल में नहीं कर सकी। उन्होंने देश को नई दिशा दी है, सीमाओं को मजबूत किया है। देशवासियों को सुरक्षित जीवन दिया है। सबसे पहले केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव पुराना कटला स्थित जगन्नाथ मंदिर गए। वहां विधिवत पूजन कराया। उसके बाद हवन कराया गया। यहां बड़ी संख्या में कार्यकर्ता व आमजन भी पहुंचे। सबने मोदी के जन्मदिन पर उनके नेतृत्व पर चर्चा की।

किसान महापंचायत की बैठक संपन्न

निवाई। किसान महापंचायत के तत्वावधान में 6 अक्टूबर को आयोजित अन्नदाता हूंकार रैली क तैयारियों को लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष रामपाल जाट की अध्यक्षता में बैठक आयोजित हुई। बैठक में किसान महापंचायत के सैंकड़ों पदाधिकारीयो ने भाग लिया। ब्लॉक अध्यक्ष दशरथसिंह चौहान ने बताया कि 6 अक्टूबर को जयपुर में किसानों की अन्नदाता हूंकार रैली का आयोजन होगा जिसमें निवाई की 41 पंचायतों के 215 गांवों से करीब 2 हजार किसान भाग लेंगे एवं शक्ति का प्रदर्शन करेंगे। जिसकी तैयारियों को लेकर किसानों को जागृत करने के लिए नारा लेखन, पंपलेट वितरण, दीवार लेखन, साधन व माईक की व्यवस्थाओं को लेकर चर्चा की गई। रैली के आयोजन को लेकर महापंचायत के पदाधिकारी गांव गांव का दौरा करते हुए किसानों को सूचित कर रहे हैं। बैठक में राष्ट्रीय महासचिव अकबर खान, युवा प्रदेश अध्यक्ष रामेश्वरप्रसाद चौधरी, जिला अध्यक्ष गोपीलाल जाट, मोहनलाल चौधरी, देवराज गुर्जर, गोविंदराम चौधरी, सियाराम चौधरी, खेमराज मीणा, हरिशंकर धाकड़, कपूर मीणा, शिवजीराम चौधरी, राजाराम चौधरी व रामरख चौधरी सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे।

स्मार्ट मीटरों के विरूद्ध प्रदर्शन आज

कोटपूतली। प्रदेश भर की तरह विधुत विभाग द्वारा कोटपूतली क्षेत्र में भी आम उपभोक्ताओं समेत व्यापारियों, दुकानदारों, कृषि उपभोक्ताओं आदि के यहां लगाये जा रहे बिजली के स्मार्ट मीटरों को लेकर भारी विरोध एवं गतिरोध सामने आ रहा हैं। इसी को लेकर गुरूवार 18 सितम्बर को प्रात: 11 बजे नगर परिषद पार्क से लेकर विधुत विभाग पॉवर हाउस तक विशाल पैदल मार्च निकाला जायेगा। पूर्व पार्षद तारा पूतली ने बताया कि विधुत निगम कार्यालय पर धरना प्रदर्शन कर बिजली के स्मार्ट मीटरों को वापस लिये जाने की मांग को लेकर जिला कलक्टर को ज्ञापन भी सौंपा जायेगा। विरोध प्रदर्षन में बड़ी संख्या में आमजन व उपभोक्ताओं समेत व्यापारी, जनप्रतिनिधि, सामाजिक संगठन आदि भी भाग लेगें। इसी को लेकर तारा पूतली ने मंगलवार को कस्बे के मुख्य बाजारों में नगर व्यापार महासंघ के अध्यक्ष मैथली शरण बंसल, वस्त्र व्यापार संघ के अध्यक्ष होशियार कसाना समेत व्यापारियों से जनसम्पर्क करते हुये विरोध प्रदर्शन में भाग लेने का आह्वान किया।

भाजपा कार्यकर्ताओं किया रक्तदान

टोंक। भाजपा कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष चंद्रवीर सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 75वां जन्मदिन मनाया, इस दौरान सआदत अस्पताल में केक काटकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लंबी उम्र की कामना की तथा स्वच्छता ही सेवा के संकल्प के साथ स्वच्छता अभियान के अंतर्गत अस्पताल परिसर की साफ सफाई कर श्रमदान किया। साथ ही चिकित्सालय में रक्तदान शिविर में नर सेवा नारायण सेवा के संकल्प के साथ भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा 201 यूनिट रक्तदान किया।

31 घंटे से चला आ रहा धरना समाप्त

दौसा। रामकरण जोशी राजकीय जिला चिकित्सालय में पिछले 31 घंटे से मृतक ट्रेनी सब इंस्पेक्टर राजेन्द्र सैनी के परिजनों को आर्थिक सहायता राशि देने, मृतक के परिजन को संविदा पर नौकरी देने सहित अन्य मार्गो को लेकर चला आ रहा धरना प्रदर्शन प्रशासन से लिखित समझौते के बाद समाप्त हो गया है।

खिलाड़ियों को हॉकी की विभिन्न तकनीकों, जैसे कि सटीक पासिंग, गोल स्कोरिंग की रणनीतियां और रक्षात्मक कौशल सीखना चाहिये - **हार्दिक सिंह**

भारतीय ओलंपियन, हॉकी अकादमी में खिलाड़ियों को गुर सिखाते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

आर्यना सबालेंका

चाइना ओपन आयोजकों ने बताया है कि विश्व की नंबर वन महिला टेनिस खिलाड़ी आर्यना सबालेंका ने टूर्नामेंट से नाम वापस ले लिया है। बेलारुस की सबालेंका ने मंगलवार को जारी एक बयान में कहा, सभी को नमस्कार, यूएस ओपन के बाद लगी एक छोटी सी चोट के बाद, मुझे इस साल चाइना ओपन से नाम वापस लेने की घोषणा करते हुए दुख हो रहा है। मैं पूरी तरह स्वस्थ रहने पर ध्यान केंद्रित करूंगी और मैं अपने चीनी प्रशंसकों से जल्द ही मिलने का बेसब्री से इंतजार कर रही हूं मैं अगले साल बीजिंग लौटने का इंतजार कर रही हूं और टूर्नामेंट के लिए शुभकामनाएं देती हूं।

क्या आप जानते हैं ?... भारत ने दोनों फॉर्मेट मिलाकर एशिया कप के इतिहास में संयुक्त रूप से सबसे अधिक अब 45 मैच जीत लिए हैं।

स्मृति मंधाना का शतक, भारतीय महिला टीम ने ऑस्ट्रेलिया को 102 रनों से हराया

न्यू चंडीगढ़ 17 सितंबर। स्मृति मंधाना (117) की शतकीय और दीप्ति शर्मा (40) की जूझारू पारियों के बाद गेंदबाजों बेहतरी प्रदर्शन की बदौलत भारतीय महिला टीम ने बुधवार को दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया महिला टीम को 102 रनों से हरा दिया।

293 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलिया की शुरुआत खराब रही और उसने 12 रन के स्कोर पर अपने दो विकेट गंवा दिये। जॉर्जिया वॉल (शून्य) को रेणुका सिंह ने बोल्ड आउट किया। पांचवें ओवर में क्रांति गौड़ ने कप्तान अलिसा हीली (छह) का शिकार किया। एलिस पेरी और बेथ मूनी ने पारी को संभालने का प्रयास किया। 17वें ओवर में स्नेह राणा ने बेथ मूनी (18) को आउट किया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आयी ऐनाबेल सदरलैंड ने एलिस पेरी के साथ चौथे विकेट के लिए 46 रनों की साझेदारी की। 25वें ओवर में राधा यादव ने एलिस पेरी (44) को अपनी ही गेंद पर कैच आउट कर पवेलियन भेज दिया। 30वें ओवर की तीसरी गेंद पर अरुंधति रेड्डी ने ऐनाबेल सदरलैंड (45) को आउट किया। एश्ली गार्डनर (17), तालिया मैक्ग्रा (16) को दीप्ति शर्मा ने आउट किया। अलाना किंग (दो) रनआउट हुई। कांति गौड ने 41वें ओवर की पांचवीं गेंद पर जॉर्जिया वेयरहम (10) को बोल्ड कर ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम को 190 के स्कोर पर समेटकर मुकाबला 102 रनों से अपने नाम कर लिया। भारतीय महिला टीम की ओर से क्रांति गौड़ ने तीन विकेट लिये। दीप्ति शर्मा को दो विकेट मिले। रेणुका सिंह, स्नेह राणा, अरुंधति रेड्डी और राधा यादव ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आज यहां ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी प्रतिका रावल और स्मृति मंधाना की भारतीय सलामी जोड़ी ने शानदार शुरुआत करते हुए पहले विकेट लिए 70 रन जोड़े।

12वें ओवर में एश्ली गार्डनर ने प्रतिका रावल (25) को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। इसे बाद बल्लेबाजी करने आये हरलीन देओल (10) पर रनआउट हुई। कप्तान हरमनप्रीत कौर (17) को भी एश्ली गार्डनर ने आउट किया। भारत का चौथा विकेट 192 के स्कोर पर स्मृति मंधाना के रुप में गिरा। उन्हें तालिया मैक्ग्रा ने आउट किया। स्मृति मंधाना ने 91 गेंदों में 14 चौके और चार छक्के लगाते हुए (117) रनों की पारी खेली। इसके बाद ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे भारतीय बल्लेबाज टिक नहीं खेले सके। ऋचा घोष (29), राधा यादव (छह) और अरुंधति रेड्डी के विकेट भी भारत ने जल्द गंवा दिये। क्रांति गौड़ (दो) पर रनआउट हुई। दीप्ति शर्मा ने 53 गेदों में (40) रनों की पारी खेली। 50वें ओवर की पांचवी गेंद पर मेगन शूट ने स्नेह राणा 18 गेंदों में 24 रन को आउटकर 292 के स्कोर पर भारतीय पारी को समेट दिया। ऑस्ट्रेलिया महिला टीम के लिए डार्सी ब्राउन ने तीन विकेट लिये। एश्ली गार्डनर को दो विकेट मिले। मेगन शूट, ऐनाबेल सदरलैंड और तालिया मैक्ग्रा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

सुपर में जगह बनाने के लिए भिड़ेंगे अफगानिस्तान, श्रीलंका

अबू धाबी, 17 सितंबर। श्रीलंका और अफगानिस्तान गुरुवार को एशिया कप 2025 के सुपर चार में जगह बनाने भिड़ेंगे। अफगानिस्तान के लिए जहां टूर्नामेंट में करो या मरो की स्थिति है वहीं श्रीलंका श्रीलंका अपने पिछले पांच टी-20 मैचों में चार जीत की लय के साथ आत्मविश्वास से भरा हुआ है। कल ज़ायेद क्रिकेट स्टेडियम में होने वाले इस मुकाबले में श्रीलंका का पलड़ा भारी है। सलामी बल्लेबाज, विशेषकर पथुम निसांका, शानदार फॉर्म में हैं, तेज शुरुआत दे रहे हैं।

चरित असलांका का युवा और अनुभवी संयोजन उन्हें एक संतुलित टीम बनाता है। कुसल मेंडिस और कुसल परेरा पारी की नींव रख सकते हैं, जबकि वानिंदु हसरंगा और दासुन शनाका जैसे पावर हिटर एक ही ओवर में मैच का रुख बदल सकते हैं। वहीं गेंदबाजी की बात की जाये तो दुष्मंथा चमीरा और नुवान तुषारा शुरुआत में ही आक्रामक हो सकते हैं, जबकि स्पिनर महेश दीक्षाना और हसरंगा बीच के ओवरों में किसी भी टर्न का फायदा उठा सकते हैं।

राशिद खान की अगुवाई वाली अफगानिस्तान टीम के लिए यह एक कठिन परीक्षा होगी। बल्लेबाजी में कुछ खास बदलाव नहीं हुए हैं, रहमानुल्लाह गुरबाज और सेदिकुल्लाह अटल शीर्ष क्रम में उम्मीद जगाते हैं, लेकिन उन्हें दबाव में और अधिक निरंतरता की आवश्यकता होगी। मोहम्मद नबी और गुलबदीन नैब सहित मध्य क्रम को साझेदारियां बनानी होंगी, जबकि अगर अफगानिस्तान को मैच में बने रहना है तो राशिद की लेग स्पिन और डेथ ओवरों में गेंदबाजी का हुनर बेहद अहम होगा।

पिच की बात की जाये तो शेख जायद की पिच पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम के पक्ष में रहा है। यहां स्पिनर गेंद को टर्न करा सकते हैं और तेज गेंदबाजो को शुरुआत में ही लय हासिल करनी होती है।

श्रीलंका की संभावित एकादश: चरिथ असलांका (कप्तान), पथुम निसांका, कुसल मेंडिस (विकेटकीपर), कामिल मिशारा, कुसल परेरा, कामिंडु मेंडिस, दासुन शनाका, वानिंदु हसरंगा, महीश थीक्षाना, दुष्मंथा चमीरा और नुवान तुषारा

अफगानिस्तान की संभावित एकादश: राशिद खान (कप्तान), रहमानुल्लाह गुरबाज़ (विकेटकीपर), सेदिकुल्लाह अटल, इब्राहिम जादरान, गुलबदीन नायब, अजमतुल्लाह ओमरजई, मोहम्मद नबी, करीम जनत, नूर अहमद, एएम गजनफर और फजलहक फारूकी।

ओमान के खिलाफ टीम इंडिया में हो सकता है एक बदलाव

बुमराह को दिया जाएगा आराम!

नई दिल्ली, 17 सितंबर। भारत को एशिया कप 2025 में अपना अगला मुकाबला 19 सितंबर को ओमान के खिलाफ खेलना है। वहीं इस मुकाबले के लिए टीम इंडिया अपनी प्लेइंग इलेवन में एक बदलाव कर सकती है। दरअसल, इस दौरान जसप्रीत बुमराह को आराम दिया जा सकता है। फिलहाल, भारत सुपर-4 में 21, 24 और 26 सितंबर को अपने मैच खेलेगा।

इसके बाद 28 सितंबर को फाइनल होगा। ऐसे में टूर्नामेंट की प्रब दावेदार ये टीम अगर खिताबी मुकाबले के लिए क्वालीफाई करती है तो उसे सात दिनों में चार मैच खेलने पड़ सकते हैं। टीम प्रबंधन अपने प्रमुख तेज गेंदबाजको आगे के लिए चुनौतीपूर्ण दौर के लिए तरोताजा रखने के महत्व को समझता है।

बुमराह खुद मैच से बाहर रहना चाहते हैं या नहीं, ये तो कहा नहीं जा सकता। लेकिन ये फैसला व्यावहारिक होने की उम्मीद है क्योंकि उन्हें किसी कम महत्व वाले मैच की जगह टूर्नामेंट के आखिरी चरण के लिए पूरी तरह से तैयार रखना बेहतर है विकल्प है। ऐसी स्थिति में अर्शदीप सिंह या हर्षित राणा में किसी एक के खेलने की संभावना है।

अर्शदीप का दावा मजबूत होगा क्योंकि वह ज्यादा अनुभवी है। टी20 अंतर्राष्ट्रीय में वह 100 विकेट पूरा करने के करीब हैं। बल्लेबाजी के मोर्चे पर शीर्ष और मध्यक्रम के बल्लेबाज मैच की परिस्थितियों में क्रीज पर ज्यादा समय बिताना पसंद करेंगे। ऐसे में रिंकू सिंह को मौका मिलने की संभावना कम है।

भारत की संभावित प्लेइंग 11

अभिषेक शर्मा, शुभमन गिल, सूर्यकुमार यादव, तिलक वर्मा, संजू सैमसन, हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह और वरुण चक्रवर्ती।

नीरज चोपड़ा ने विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप के भाला फेंक फाइनल के लिए किया क्वालीफाई

टोक्यो, 17 सितंबर। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा को गुरुवार को 84.85 मीटर भाला फेंककर विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 के भाला फेंक फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने बुधवार को टोक्यो नेशनल स्टेडियम में क्वालीफायर के ग्रुप ए में 84.85 मीटर भाला फेंककर पदक दौर में आसानी से अपनी जगह पक्की कर ली। स्वत: योग्यता सीमा 84.50 मीटर निर्धारित की गई थी। 27 वर्षीय भारतीय एथलीट ने अपने ग्रुप में शुरुआत की और अपने पहले ही थ्रो में इस सीमा को पार कर लिया। नीरज चोपड़ा का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 90.23 मीटर है। जो भारतीय राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी है। जो उन्होंने इस साल की शुरुआत में दोहा डायमंड लीग में हासिल किया था। जर्मनी के जूलियन वेबर, जो वर्तमान में दुनिया के शीर्ष पुरुष भाला फेंक खिलाड़ी हैं, अपने पहले ही थ्रो में चूक गए। मौजूदा ओलंपिक चैंपियन पाकिस्तान के अरशद नदीम क्वालीफायर ग्रुप बी में अपने अभियान की शुरुआत करेंगे। भारत के रोहित यादव और यशवीर सिंह भी इस ग्रुप में हैं। कुल मिलाकर, 37 में से 12 एथलीट फाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगे।

पूर्व स्पिनर प्रज्ञान ओझा और आरपी सिंह बन सकते हैं राष्ट्रीय चयनकर्ता

नई दिल्ली, 17 सितंबर। भारत के पूर्व अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेटर प्रज्ञान ओझा और आरपी सिंह राष्ट्रीय चयन समिति के सदस्य चुने जा सकते हैं। राष्ट्रीय चयन समिति में दो पद खाली हो रहे हैं और बीसीसीआई ने उन्हें भरने के लिए पिछले महीने आवदेन मंगाए थे। प्रवीण कुमार, आशीष विंस्टन जैदी और शक्ति सिंह ने भी आवेदन भेजे हैं लेकिन ओझा और आरपी सिंह रेस में आगे बताए जा रहे हैं। दोनों अगले महीने पद संभाल सकते हैं।

राष्ट्रीय चयन समिति में सेंट्रल जोन से सुब्रतो बनर्जी और साउथ जोन से एस शरथ की जगह लेने के लिए बीसीसीआई ने कुछ पैमाने तय किए हैं। साउथ जोनसे प्रज्ञान ओझा और सेंट्रल जोन से आरपी सिंह राष्ट्रीय चयनकर्ता बन सकते हैं।

सेंट्रल जोन से उनके अलावा यूपी से ही एक और पूर्व तेज गेंदबाज प्रवीण कुमार ने भी आवेदन भरा है। कुमार भारत के लिए कई अंतर्राष्ट्रीय मैच खेल चुके हैं। उनके अलावा यूपी के एक और पूर्व तेज गेंदबाज आशीष विंस्टन जैदी और हिमाचल प्रदेश के शक्ति ने सेंट्रल जोन के लिए आवेदन कर रखा है। बीसीसीआई ने दोनों नए राष्ट्रीय चयनकर्ताओं के लिए जो पैमाने तय किए हैं, उसके मुताबिक कैंडिडेट के लिए कम से कम 7 टेस्ट मैच या 30 प्रथम श्रेणी के मैच या 10 एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच और 20 प्रथम श्रेणी मैच खेला होना अनिवार्य है। इसके अलावा ये भी शर्त है कि वह क्रिकेट से कम से कम 5 साल पहले संन्यास लिया हो और पिछले 5 साल में बीसीसीआई की किसी भी क्रिकेट समिति का सदस्य न रहा हो।

राजस्थान सीनियर वीमेन टीम घोषित

जयपुर, 17 सितंबर। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत के अनुसार बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025 - 26 की सीनियर वीमेन क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेने वाली राजस्थान सीनियर वीमेन टीम का चयन राजस्थान वीमेन चयन कमेटी ने आरसीए द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय सीनियर वीमेन टॉफी, सीनियर वीमेन चैलेंजर ट्रॉफी व सीनियर वीमेन प्रशिक्षण शिविर में खिलाडियों के प्रदर्शन के आधार पर किया।

राजस्थान सीनियर वीमेन टीम के चयनित खिलाडी-आयुषीगर्ग, डिंपल कँवर, सुमित्रा कुमारी जाट, चंद्र ज्योत्सना भाटी, आरजू, कंचन हुड्डा, संगीता कुमावत, सिद्धि पवन शर्मा, सुमन मीणा, ज्योति चौधरी, उषा परेरिया, सोनल कलाल, शानू सेन, कौशल्या चौधरी, अक्षितामाहेशवरी, बबितामीणा, गंगा, भावना मीणा, अर्चना योगी, याना वर्मा।

एशिया कप : पाक की टीम यूएई के साथ खेलेगी मैच

दुबई 17 सितंबर। पाकिस्तान क्रिकेट बार्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने कहा है कि टीम संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के साथ बुधवार रात होने वाले मुकाबले के लिए स्टेडियम रवाना हो गई है। मैच स्थानीय समयानुसार शाम 7:30 बजे शुरू होगा और टॉस शाम सात बजे होगा। पीसीबी के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने ट्वीट कर कहा, "हमने पाकिस्तानी टीम को दुबई क्रिकेट स्टेडियम के लिए रवाना होने को कहा है। आगे की जानकारी बाद में दी जाएगी।" इससे पहले पीसीबी के प्रवक्ता आमिर मीर ने लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में पत्रकारों से बात करते हुए कहा, पीसीबी के अध्यक्ष मोहसिन नकवी, पूर्व अध्यक्ष रमीज राजा और नजम सेठी से मुलाकात की है और वे इस मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं। मैच फिलहाल एक घंटे के लिए स्थगित कर दिया गया है।" उल्लेखनीय है कि एशिया कप में रविवार को भारत ने पाकिस्तान पर जीत दर्ज की थी और मैच के बाद कप्तान सूर्यकुमार यादव और टीम के खिलाड़ियों ने पाकिस्तानी टीम के साथ हाथ मिलाने से साफ इनकार कर दिया। इसको लेकर पाकिस्तान ने इसे मैच रेफरी एंडी पॉयक्रॉफ्ट को हटाने के लिए आईसीसी में शिकायत दर्ज कराई थी और उसकी मांग नहीं माने जाने पर यूएई के साथ होने वाले मैच से हटने की बात कही थी।

लावण्या सोढ़ानी और राशि चौधरी ने जीते रजत पदक

जयपुर, 17 सितम्बर। जयपुर की लावण्या सोढ़ानी और राशि चौधरी ने चंडीगढ़ में संपन्न खेल शाला जूनियर स्क्वैश ओपन में अपनी-अपनी कैटेगरी में रजत पदक जीते। राजस्थान स्क्वैश एकेडमी की संचालक सुरभि मिश्रा ने बताया कि लावण्या ने गर्ल्स अंडर-17 प्रतियोगिता के सेमी फाइनल में जीनत सुलताना को 11-0, 11-5, 11-3 से पराजित कर फाइनल में जगह बनाई लेकिन फाइनल में उन्हें गरिमा नागर के हाथों 13-15, 4-11, 7-11 से हार के साथ रजत पदक से संतोष करना पड़ा। वहीं गर्ल्स अंडर-15 में राशि चौधरी ने सेमी फाइनल में तीसरी वरीयता की कायरा गढ़ा के खिलाफ 11-8, 11-8, 11-9 से धमाकेदार जीत के साथ फाइनल में कदम रखा लेकिन फाइनल में राशि को भी सानवी बक्षी के हाथों 9-11, 11-9, 6-11, 11-6, 5-11 से हार के साथ रजत पदक से संतोष करना पड़ा। बॉयज अंडर-11 में जयपुर के युवान वर्मा सेमी फाइनल में शीर्ष वरीयता प्राप्त आरव बैकंट कोथापल्ली से 7-11, 11-9, 3-11, 11-4, 5-11 से हार का सामना करना पड़ा।

ऑल स्टार पोलो टीम ने नेवी कानोता पोलो टीम को हराया

जयपुर, 17 सितम्बर। रामबाग पोलो ग्राउंड पर नेवी कानोता पोलो टीम ओर ऑल स्टार पोलो टीम के बीच मैच खेला गया जिसमें ऑल स्टार पोलो टीम ने नेवी कानोता पोलो टीम को 3 के मुकाबले 10 गोल से हराया। नेवी कानोता पोलो टीम की ओर से प्रताप सिंह कानोट ने 1ओर गोंज़ालो यानज़ोन ने 2 गोल किए। वहीं ऑल स्टार पोलो टीम की ओर से मतिहास ने 2, ध्रुवपाल गोदारा ने अपनी टीम के लिए 5 गोल ओर मतिहास ने 3 गोल कर अपनी टीम को जीताया।

सात्विक-चिराग प्री-क्वार्टरफाइनल में, लक्ष्य सेन बाहर

शेनझेन, 17 सितम्बर। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने शेनझेन एरिना, शेनझेन / में चल रहे ली-निंग चाइना मास्टर्स 2025 के राउंड ऑफ 16 में प्रवेश कर लिया है। इस भारतीय जोड़ी ने अपने अभियान की शुरुआत मलेशिया के जुनैदी आरिफ और रॉय किंग याप को 42 मिनट में 24-22, 21-13 से सीधे गेमों में हराकर की। अब उनका सामना प्री-क्वार्टर फ़ाइनल में चीनी ताइपे के चिउ सियांग चीह और वांग ची-लिन से होगा। लक्ष्य सेन और ध्रुव कपिला और तनिषा क्रैस्टो की मिश्रित युगल जोड़ी पहले दौर में हारकर बाहर हो गई।

3 आईपीएल टीमों के बीच मची होड, द्रविड़ को बनाना चाहती है अपना नया हेड कोच

नई दिल्ली, 17 सितंबर। राहुल द्रविड़ ने राजस्थान रॉयल्स का हेड कोच बनने के ठीक एक साल बाद अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इसका मतलब है कि, आईपीएल 2026 से पहले राजस्थान रॉयल्स को नया कोच तलाशना होगा। द्रविड़ टी20 वर्ल्ड कप विजेता कोच हैं। भारत को वर्ल्ड चैंपियन बनाकर आ रहे थे। अब जब उन्होंने राजस्थान रॉयल्स से अपना नाता तोड़ दिया है तो कई दूसरी फ्रेंचाइजी उन्हें अपने साथ जोड़ने के लिए बेकरार है।

राजस्थान रॉयल्स के अलावा कोलकाता नाइटराइडर्स एकमात्र ऐसी टीम है, जिसके पास फिलहाल कोई हेड कोच नहीं है। चंद्रकांत पंडित साल 2025 में टाइटल डिफेंड नहीं कर पाए। कई प्लेयर्स भी उनसे खुश नहीं थे इसलिए उन्हें पद से हटा दिया गया। अब तीन बार चैंपियन टीम हेड कोच की तलाश में है, ऐसे में उन्हें द्रविड़ से बेहतर नाम मिलने की संभावना कम ही है।

दिल्ली कैपिटल्स

दिल्ली कैपिटल्स के साथ राहुल द्रविड़ पहले भी काम कर चुके हैं और 2016 सीजन में उनके मेंटॉर भी रहे हैं। दिल्ली कैपिटल्स के हेड कोच हेमंग बदानी ज्यादा अनुभवी नहीं हैं और द्रविड़ के साथ बेहतरी शुरुआत के बाद 2025 में प्लेऑफ में न पहुंच पाना एक बड़ा बदलाव ला सकता है।

लखनऊ सुपर जायंट्स

जब से जस्टिन लैंगर ने दो साल पहले लखनऊ सुपरजायंट्स की कमान संभाली है तो तब से टीम प्लेऑफ में पहुंचने में नाकाम रही है। मालिक संजीव गोयनका ने आईपीएल 2025 से पहले जहीर खान को टीम का मेंटॉर बनाया, लेकिन वह भी जादू चलाने में असफल ही रहे। अब जब राहुल द्रविड़ किसी टीम के साथ नहीं जुड़े हैं तो हो सकता है कि लखनऊ फ्रेंचाइजी उन्हें साइन करने की कोशिश करें हालांकि, इसकी संभावना कम ही दिख रही है।

पीकेएल-12 : दबंग दिल्ली केसी की शानदार वापसी

तेलुगू टाइटंस को हराकर अंकतालिका के शीर्ष पर पहुंची

जयपुर, 17 सितंबर। आशू मलिक (2) नहीं चले लेकिन डिफेंडरों (15 अंक) ने दबंग दिल्ली केसी की शानदार वापसी कराते हुए लगातार छठी जीत के साथ अंक तालिका के शीर्ष पर उसका पहुंचना तय किया। दिल्ली ने सवाई मानसिंह इंडोर स्टेडियम में बुधवार को खेले गए प्रो कबड्डी लीग के 12वें सीजन के 37वें मुकाबल में तेलुगू टाइटंस को 33-29 के अंतर से हराया।

दिल्ली के लिए नीरज (9) और अक्षित (3) ने सुपर रेड लगाए जबकि फजल अतराचली और सौरव नांदल ने हाई-5 लगाए। टाइटंस के लिए विजय मलिक (5) सबसे सफल खिलाड़ी रहे। डिफेंस में अजीत पवार ने चार अंक लिए। टाइटंस की आठ मैचो में यह चौथी और लगातार तीसरी हार है। बहरहाल, विजय के बोनस के बाद शुभम ने नीरज का शिकार कर टाइटंस को 2-0 की अच्छी शुरुआत दिलाई। इसके बाद भरत ने सौरव का शिकार किया और फिर आशू को लपक स्कोर 4-0 कर दिया लेकिन मैच की पहली डू ओर डाई रेड पर सुरजीत ने उनका शिकार कर दिल्ली का खाता खोल दिया। इसके बाद नीरज ने डू ओर डाई रेड पर अंक लेकर फासला 2 का कर दिया। अगली डू ओर डाई रेड जल्दी ही आ गई। इस पर मंजीत ने सौरव को आउट कर स्कोर 5-2 कर दिया।

नीरज ने हालांकि दिल्ली की डू ओर डाई रेड पर अंकित को आउट कर फासला फिर 2 का कर दिया। सुरजीत ने हालांकि भरत को लपक स्कोर 4-5 कर आशू को भी रिवाइव करा लिया। ब्रेक के बाद टाइटंस ने रफ्तार पकड़ी और 9-4 की लीड ले ली। दिल्ली के लिए चिंता की बात यह थी कि शुभम ने आशू का भी पत्ता साफ कर दिया था। अजिंक्य ने हालांकि अगली रेड पर नीरज को रिवाइव करा लिया। इसके बाद सौरव ने भरत को लपक स्कोर 6-9 कर दिया।

जोधपुर ने बीकानेर को हरा जीती राज्य स्तरीय अंडर-19 ट्रॉफी

आरसीए एडहॉक कमेटी ने खिलाड़ियों संग मनाया देश के प्रधानमंत्री मोदी का जन्मदिन

जयपुर, 17 सितंबर। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत के अनुसार जयपुर में खेली जा रही राज्य स्तरीय अंडर 19 क्रिकेट प्रतियोगिता के आज सवाई मान सिंहस्टेडियम पर खेले गए फाइनल मैच में जोधपुर ने बीकानेर को 5 विकेट से हराकर प्रतियोगिता की विजेता बनी। फाइनल मैच के प्रेजेंटेशन समारोह में आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत, सदस्य पिंकेश पोरवाल ने विजेता व उपविजेता टीम को ट्रॉफी व मोमेंटो प्रदान किये। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत ने विजेती टीम को 31000 व उपविजेता टीम को 21000 की इनामी राशि देने की घोषणा की।

प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाडी

सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज कुशाग्र ओझा (भीलवाड़ा)

सर्वश्रेठ गेंदबाज गौरव (जोधपुर)

प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाडी सचिन लखेसर (बीकानेर) फाइनल मैच का सर्वश्रेष्ठ खिलाडी जगदीश चौधरी, फाइनल मैच (जोधपुर - बीकानेर) जोधपुर विकेट से जीती), बीकानेर पारी 183 आल आउट, टीम के लिए सचिन लखेसर70, सक्षम 39 व हरेंद्र 30 रन। जोधपुर के गेंदबाज जगदीश चौधरी 25 /5, केतनदेवासी 41 /2 विकेट, जोधपुर पारी 184 /5, टीम के लिए जगदीश चौधरी नाबाद 51, कृष्णा मालवीय नाबाद 53 व शिवांगसिंह 38 रन, बीकानेर के गेंदबाज सचिन सेन 41/3 व विनोद 32 /2 विकेट।

राज्य स्तरीय अंडर 23 ट्रॉफी के आज खेले गए मैच

झुंझनू - प्रतापगढ़ (झुंझनू 138 रन से जीती), झुंझनू पारी 319 आल आउट, टीम के लिए अंकुश कुमार 106, शुभम सिंह 94, अंकित 30 व यश शर्मा 22 रन, प्रतापगढ़ के गेंदबाज नीलेश टांक 46 /4, अनिल 53 /2 विकेट, प्रतापगढ़ पारी 136 आल आउट। टीम के लिए नीलेश टांक 46, आर्यन 38 व अजय 27 रन, झुंझनू के गेंदबाज करतीयक शर्मा 48 /4 ,मो आईमान24 /4 व विनय 12 /2 विकेट।

टोंक - दौसा (टोंक 44 रन से जीती), टोंक पारी 147 आल आउट, टीम के लिए अनस 30 रन, दौसा के गेंदबाज देवकृत शर्मा 29 /4, सचिन शर्मा 24 /3 विकेट।

दौसा पारी 103 आल आउट, टीम के लिए लीलाधर 37 व सचिन शर्मा 36 रन, टोंक के गेंदबाज गणेश सुथार 12 /4, आयुष गुर्जर 30 /4 व शुभंकर त्यागी 32 /2 विकेट।

बारां - बूंदी (बारां 10 रन से जीती), बारां पारी 252 /9, टीम के लिए जतिन चौधरी 88, बिजय कम्बोज 74 रन, बूंदी के गेंदबाज मेहुल सिंह 46 /3, रोहित कुमार 37 /2 विकेट, बूंदी पारी 242 आल आउट, टीम के लिए इंद्रा नगर 76, ओमांश शर्मा 58 व मेहुल सिंह 31 रन, बारां के गेंदबाज सिद्धार्थ शर्मा 29 /3, जतिन, मो अल्लाहरी व पदम् सिंह प्रत्येक 2 -2 विकेट।

सिरोही - बाड़मेर (बाड़मेर 7 विकेट से जीती), सिरोही पारी 137 आल आउट, टीम के लिए राहुल स्वारा 60 रन, बाड़मेर के गेंदबाज प्रवीण चौधरी 24 /5, दीपेंद्र 39 /2, बाड़मेर पारी 138 /3, राहुल चौधरी 73, सौरभ सिंह 28 रन, सिरोही के गेंदबाज मनीष रॉबेरी 36 /2 विकेट।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने प्रधानमंत्री के जन्म दिन पर श्रमदान किया

उन्होंने पूरे राज्य में ''स्वच्छता ही सेवा अभियान-2025'' का शुभारंभ किया

जयपुर, 17 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर बुधवार को राजस्थान भर में सेवा पखवाड़े की शुरुआत हुई। जयपुर में आयोजित मुख्य कार्यक्रम के अन्तर्गत, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मानसरोवर स्थित सिटी पार्क में 'स्वच्छता ही सेवा अभियान-2025' का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने आमजन के साथ श्रमदान किया और स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता का संदेश दिया।

मुख्यमंत्री शर्मा ने प्रधानमंत्री मोदी को जन्मदिवस की बधाई देते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी सशक्त पहचान बनाई है और डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, जनधन योजना, आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं ने देश को नई दिशा दी है और आज भारत चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि 2014 में शुरू हुआ स्वच्छ भारत अभियान अब जन आंदोलन का रूप ले चुका है। पहले जहां केवल 38 प्रतिशत घरों में शौचालय थे, वहीं अब यह आंकड़ा लगभग 100 प्रतिशत तक पहुंच चुका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जयपुर के दोनों नगर निगम - ग्रेटर और हेरिटेज - स्वच्छ सर्वेक्षण में देश के टॉप-20 शहरों में शामिल हुए हैं। डूंगरपुर को सुपर स्वच्छ लीग में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।

■ मुख्यमंत्री ने कहा कि 2014 में जब स्वच्छ भारत अभियान शुरु हुआ था तब केवल 38 प्रतिशत घरों में शौचालय थे। अब यह आंकड़ा लगभग 100 प्रतिशत तक पहुँच चुका है।

मुख्यमंत्री ने मौके पर उपस्थित नागरिकों को स्वच्छता की शपथ दिलाई और स्वच्छ भारत निर्माण में भागीदारी की अपील की।

कार्यक्रम के उपरांत मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मानसरोवर क्षेत्र में एक स्थानीय टी-स्टॉल (थड़ी) पर स्वयं चाय बनाकर लोगों को पिलाई और आमजन के साथ चाय पर चर्चा की।

मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम के दौरान, महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर स्वच्छता और सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मानसरोवर स्थित सिटी पार्क में ''स्वच्छता ही सेवा अभियान-2025'' का शुभारंभ किया और आमजन के साथ मिलकर श्रमदान किया।

ईवीएम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आयोग ने बुधवार को एक बयान में कहा कि उसने मतदाताओं की सुविधा के लिए ईवीएम मतपत्रों को अधिक स्पष्ट और पठनीय बनाने के लिए संबंधित दिशानिर्देशों में संशोधन किये हैं। इन बदलावों के अंतर्गत अब ईवीएम पर उम्मीदवारों/नोटा के क्रमांक भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप में मुद्रित होंगे। ईवीएम मतपत्र पर उम्मीदवारों की रंगीन तस्वीरें होंगी, जिसमें फोटो के हिस्से में, तीन-चौथाई हिस्से पर उम्मीदवार का चेहरा दिखेगा। मतदाताओं को पढ़ ने में आसानी के लिए सभी उम्मीदवारों/नोटा के नाम एक ही फ़ॉन्ट के आकार-प्रकार में मुद्रित किये जायेंगे। बिहार में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए ईवीएम मतपत्र 70 जीएसएम कागज़ पर मुद्रित किये जायेंगे।

मोदी ने ट्रंप को 37 मिनट ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

यह महत्वपूर्ण इसलिये है, क्योंकि डॉनल्ड ट्रंप, जो कि हमेशा शोमैन और कारोबारी की तरह सोचते हैं, 'पहले पोस्ट करने' के महत्व को अच्छी तरह समझते हैं। उदाहरण के लिए, ऑपरेशन सिंदूर सीज़फायर की घोषणा करने वाली ट्रम्प की ट्रुथ सोशल पोस्ट को याद कीजिये।

उन्होंने भारत या पाकिस्तान के किसी आधिकारिक बयान से पहले ही ट्रुथ सोशल पर युद्ध विराम की घोषणा कर दी थी। उस घोषणा के कारण हफ्तों तक यह दावा चलता रहा कि ट्रंप ने यह सीज़फायर कराया, जबकि भारत ने इसका बार-बार खंडन किया।

इसी प्रकार जून में हुई ईरान-इज़राइल सीज़फायर की घोषणा को याद कीजिये। तेहरान और तेल अवीव को इसकी खबर तक नहीं थी, क्योंकि वे एक-दूसरे पर मिसाइलें दागने में व्यस्त थे।

■ आजकल सोशल मीडिया के ज़माने में यह बात ज्यादा महत्व रखती है कि किसने अपने तरीके से खबर लीक की, यह महत्व नहीं रखता कि किसने फोन पर क्या कहा।

इसलिए इस बार प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पहले ऑनलाइन पोस्ट करना (और मान लें, कि आज के दौर में ऑनलाइन ही सबसे अहम है) - ट्रंप को नागवार गुज़रा। उन्हें दोबारा नियंत्रण स्थापित करना था।

शायद यही वजह रही कि उन्होंने इस बार प्रधानमंत्री को उनके पहले नाम से संबोधित किया।

दरअसल, कम से कम सोशल मीडिया पर यह पहली बार हुआ, जब ट्रंप ने प्रधानमंत्री मोदी को पहले नाम से संबोधित किया। ऐसा वे सिर्फ रूस के व्लादिमीर पुतिन और इज़राइल के बेंजामिन नेतन्याहू के साथ करते हैं।

इसके विपरीत, मोदी ने अपने पोस्ट में ''प्रैसिडैंट'' शब्द का इस्तेमाल किया, और पहले की पोस्ट्स की तरह इस बार ट्रंप को 'मित्र' भी नहीं कहा, जिसने एक और तरह की चर्चा को जन्म दे दिया।

क्या अमेरिका, भारत से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

खुद ट्रंप ने आशावादी रुख अपनाया। पिछले हफ्ते उन्होंने कहा था कि उन्हें ''पूरा विश्वास है'' कि दोनों पक्ष प्रस्तावित व्यापार समझौते को अंतिम रूप दे सकेंगे। मोदी की उस बयान पर सकारात्मक प्रतिक्रिया, उसके बाद जन्मदिन की शुभकामनाएं, और अमेरिका द्वारा वार्ताएं फिर से शुरू करने का निर्णय, इन सभी ने वार्ताकारों के लिए एक नया अवसर पैदा कर दिया है।

विशेषज्ञों का कहना है कि किसी भी अंतिम समझौते को अमेरिकी कृषि और तकनीक क्षेत्रों के लिए बाज़ार पहुंच की मांगों और भारत की टैरिफ, तेल आयात व डेटा स्थानीयकरण जैसे मुद्दों की चिंताओं के बीच संतुलन बनाना होगा। लेकिन अब जब दोनों देश व्यापारिक रिश्तों को पुनर्जीवित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, तो पर्यवेक्षकों का मानना है कि कम से कम एक अंतरिम समझौते की संभावना पहले से कहीं अधिक हो गई है। ''यह व्यापक संदर्भ भी महत्वपूर्ण है। फरवरी में मोदी की वॉशिंगटन यात्रा के दौरान, दोनों नेताओं ने 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 500 अरब डॉलर तक ले जाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया था। टैरिफ और बाजार पहुंच को लेकर मतभेदों ने इस दिशा में प्रगति धीमी कर दी थी, लेकिन मंगलवार की बैठक ने उस लक्ष्य की दिशा में फिर से गति ला दी है। भारत-अमेरिका व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी, जो रक्षा, ऊर्जा और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में पहले ही मौजूद है, अब व्यापार के क्षेत्र में भी अपनी परीक्षा दे रही है। भारत के लिए, अमेरिका के बाजार तक निरंतर पहुंच बनाए रखना उस समय बेहद जरूरी है, जब वह खुद को विनिर्माण और आपूर्ति श्रृंखला केंद्र के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहा है। वहीं अमेरिका के लिए, भारत को व्यापार और कृषि के मोर्चे पर साथ लाना ट्रंप की व्यापक आर्थिक नीति और एशिया में भू-राजनीतिक संतुलन की रणनीति से मेल खाता है। जैसे-जैसे मोदी और ट्रंप व्यक्तिगत स्तर पर गर्मजोशी का प्रदर्शन कर रहे हैं, व्यापारिक समझौते की संभावनाएं पहले से कहीं अधिक उज्ज्वल दिख रही हैं। जो कभी एक तीखा गतिरोध था, वह अब एक समझौते की रूपरेखा जैसा लगने लगा है, एक ऐसा समझौता जो दुनिया के सबसे बड़े और सबसे तेजी से बढ़ती हुई लोकतंत्रों के बीच आर्थिक साझेदारी को फिर से परिभाषित कर सकता है।

'प्र.मंत्री ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

को लेकर एक एआई वीडियो जारी किया था। इस वीडियो में दिखाया गया था कि पीएम मोदी की मां उनके सपनों में आती हैं और उनसे बात करती हैं। बाद में, कांग्रेस के इस वीडियो पर भाजपा ने कड़ी आपत्ति जताई थी।

कांग्रेस के इस एआई वीडियो पर भाजपा ने अपनी कड़ी प्रतिक्रिया दी थी। भाजपा नेता शहजाद पूनावाला ने इस वीडियो को लेकर कहा था कि कांग्रेस पार्टी एक बार फिर पीएम मोदी की मां का अपमान कर रही है। यह अब गांधी की कांग्रेस नहीं रही, यह गालियों वाली कांग्रेस बन गई है। बीजेपी नेता शाहनवाज हुसैन ने कहा था कि कांग्रेस को इस वीडियो को लेकर शर्म आनी चाहिए। उन्होंने एक बार फिर पीएम मोदी की मां, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, उनका अपमान किया है। कांग्रेस के नेताओं को इस वीडियो के लिए माफी मांगनी चाहिए।

'पराली जलाने पर कुछ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुख्य न्यायाधीश ने सवाल किया कि अधिकारी इस मुद्दे के लिए दंडात्मक प्रावधानों पर विचार क्यों नहीं कर रहे। ''अगर कुछ लोगों को जेल भेजा जाए, तो यह सही संदेश देगा। आप किसानों के लिए कोई जुर्माना या दंड क्यों नहीं सोचते? अगर आप वास्तव में पर्यावरण की रक्षा करना चाहते हैं, तो झिझक क्यों?''

उन्होंने आगे कहा: ''किसान स्पैशल हैं, और हम उनके कारण ही भोजन कर पा रहे हैं... लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे इसका अनुचित लाभ उठा सकते हैं।''

हर साल अक्टूबर-नवंबर में दिल्ली की जहरीली हवा के प्रमुख कारणों में पंजाब और हरियाणा में पराली जलाना शामिल है। किसान फसल के अवशेष हटाने के लिए पराली जलाते हैं। इसके विकल्पों में मजदूरों की मदद से खेत साफ करना या विशेष मशीनों का उपयोग शामिल है, लेकिन किसान तर्क देते हैं कि ये विकल्प महंगे हैं। हालांकि पराली जलाने के मामलों में कुछ कमी ज़रूर आई है, फिर भी यह प्रथा अब भी जारी है।

वरिष्ठ अधिवक्ता राहुल मेहरा, जो पंजाब सरकार की ओर से पेश हुए, ने कहा कि राज्य में पराली जलाने के मामलों में बीते कुछ वर्षों में गिरावट आई है। उन्होंने कहा, ''पिछले तीन वर्षों में काफी प्रगति हुई है। इस साल हम और बेहतर करेंगे।''

वरिष्ठ अधिवक्ता ने यह भी बताया कि पहले पराली जलाने के मामलों में गिरफ्तारियां की गई थीं। ''लेकिन इनमें से अधिकतर छोटे किसान हैं। अगर आप उन्हें पकड़कर जेल भेज देते हैं, तो उनके परिवार का क्या होगा?''

मुख्य न्यायाधीश ने स्पष्ट किया: ''यह रूटीन में तो नहीं होना चाहिए। लेकिन एक संदेश देने के लिए जरूरी है।''

अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी, जो दिल्ली सरकार और केन्द्र सरकार की ओर से पेश हुईं, ने अदालत से अनुरोध किया कि अगली सुनवाई अगले सप्ताह की जाए, जब तक कि सभी पक्षों की स्थिति रिपोर्ट जमा न हो जाए।

ब्रिटेन के केवल 16 ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जन्मदिन पर फोन कर उन्हें विश्व नेता (वर्ल्ड स्टेट्समैन) बताया। इससे यह संदेश देने की कोशिश की गई कि उनके दोस्त दुनिया भर में हैं और पश्चिमी देशों की यह रणनीति, कि उन्हें अलग-थलग कर दिया जाए, पूरी तरह नाकाम रही है। एक हफ़्ते पहले ही पुतिन चीन में एससीओ शिखर सम्मेलन में शी जिनपिंग और कई अन्य वैश्विक दक्षिण के नेताओं के साथ मौजूद थे।

दूसरी तरफ, यूरोपीय संघ (ईयू) ने भी भारत से संपर्क तेज किया और व्यापार समझौते पर वार्ता को तेज़ी से आगे बढ़ाया। ईयू ने साफ तौर पर ट्रंप की इस अपील को ठुकरा दिया कि भारत और चीन पर रूसी सस्ता तेल खरीदने के लिए 100 प्रतिशत शुल्क लगाया जाए।

ट्रंप की नाराज़गी का कारण यह भी है कि यूरोपीय देश खुद भी रूसी ऊर्जा खरीदते रहे हैं, भले ही उन्हें इसके लिए ''सैकेण्डरी सैंक्शन्स'' का सामना करना पड़ा हो। नाटक के नाम पर यह कैसा क्रूर दोगलापन है, जबकि, आम व निर्दोष यूक्रेनियों का कत्लेआम किया जा रहा है।

यह इक्कीसवीं सदी के ''मैकबैथ'' का एक संस्करण प्रतीत होता है। ट्रंप को इसका एहसास तक नहीं है कि उन्हें विंडसर के राजसी बागानों में शानदार बर्तनों और दिखावटी समारोहों के बीच एक ''चुड़ैलों के कड़ाहे'' में पकाया जा रहा है।

बीकानेर में पूर्व ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

किए गए हैं। एरिया को सील किया गया है। सदर एसएचओ दिगपाल सिंह ने बताया कि उनके क्षेत्र में ईडी ने सुभाषपुरा के लिए पुलिस बल मांगा था, जिसके बाद से जाब्ता ईडी के साथ भेजा हुआ है। इसके अलावा कोटगेट थाना क्षेत्र के फड़ बाजार में भी ईडी पहुंची है। यहां भी एक व्यापारी के यहां ईडी अधिकारी पूछताछ कर रहे हैं। सुभाषपुरा में ईडी की कार्रवाई पूर्व पार्षद जावेद खान के घर पर हो रही है, वहीं, फड़ बाजार में मोहम्मद सादिक के घर पर ईडी की टीम पूछताछ कर रही है। पुलिस बल के साथ, सदर थानाधिकारी खुद भी सुभाषपुरा पहुंचे। मुक्ता प्रसाद नगर थाना क्षेत्र में भी ईडी की टीम पहुंची है। करीब छह ठिकानों पर ईडी पहुंची है। ईडी की टीम ने बीकानेर में कार्रवाई को पूरी तरह गोपनीय बनाकर रखा है। फड़ बाजार के जिस घर में ये कार्रवाई हो रही है, उससे काफी पहले रास्ता बंद कर दिया गया है।

सहयोगी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ही इसका समाधान नहीं हुआ, तो यह संघर्ष न सिर्फ एनडीए गठबंधन की चुनावी तैयारियों को प्रभावित कर सकता है, बल्कि 'इंडिया' गठबंधन को एनडीए की आंतरिक असहमति का फायदा उठाने का अवसर भी दे सकता है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908